इकाई -१

‘वैतरणी करोगे पर’ - शिवमंगलसिंह सुमन

इकाई की रूपरेखा :

१.१ इकाई का उद्‌देश्य
- १.१ कवि परिचय / शिवमगंल सिंह ‘सुमन’
- १.२ प्रस्तावना
- १.३ भावार्थ / कथ्य
- १.४ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
- १.५ बोध प्रश्‍न
- १.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्‍न

१. इकाई का उद्‌देश्य

- इस इकाई में कवि शिवमंगल सिंह ‘सुमन’ की पाठ्‌यक्रम में निर्धारित कविता की विवेचना की गई है । इससे आप -
- कविता का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे ।
- कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे ।
- कविता से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे ।

१.१ शिवमंगल सिंह ‘सुमन’ / कवि परिचय

शिवमंगल सिंह ‘सुमन’ का जन्म ५ अगस्त, १९१५ को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के झगेरपूर गाँव में हुआ वह हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे । उन्होंने एम.ए. एवं पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की, बनारस हिन्दू विश्‍वविद्यालय ने १९५० में डी. लिट्. उपाधि से उन्हें सम्मानित किया । २७ नवम्बर, २००२ को दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया ।

प्रमुख कविता संग्रह -

हिल्लोल (१९३९), जीवन के गान (१९४२), युग का मोल (१९४५), प्रलय सृजन (१९५०) आदि ।

munotes.in

१.२ प्रस्तावना -

'वैतरणी करोगे पार' कविता में कवि अपने युग के लोगों को (मनुष्य) अपने समय के परिष्कार का, अपने जीवन के उत्कर्ष का दायित्व दूसरों के ऊपर न डालकर अपने ऊपर लेने को कह रहे हैं ।

१.३ भावार्थ / कथ्य -

'वैतरणी करोगे पार'

शिवंगल सिंह 'सुमन' वैतरणी करोगे पार' कविता के माध्यम से अपनी शक्ति का प्रयोग करके जीवन में सफलता प्राप्त करने का संदेश देते हैं । उनके अनुसार मनुष्य की प्रवृत्ति हैं अपनी जिम्मेदारी दूसरे के ऊपर डाल देना। अतः इससे हम वैतरणी (एक मिथकीय नदी जो स्वर्ग के रास्ते में पड़ती है ।) पार नहीं कर सकेंगे। हमें अपनी प्रवृत्ति में परिवर्तन करना ही होगा।

कवि अपने युग के मानव को अपने समय के परिष्कार का, अपने जीवन के उत्कर्ष का दायित्व दूसरों के ऊपर न टालकर अपने ऊपर लेने का संदेश देते हैं। इसे दौर की इस प्रवृत्ति को देखकर कि यहाँ सब लोग दूसरों के कन्धों पर बैठकर अपनी नैया पार लगाना चाहते हैं, उन्हें वे अपंगो जैसा अभिनय करने से मना करना चाहते हैं तथा वे उन लोगो को अपनी टाँगे कटवा देने के लिए कहते हैं। ताकि जो पतझर फैला है, वह कुछ ढँक जाए । कम से कम एक बहाना हो जाए कि ये लोग कुछ कर ही नहीं सकते, क्योंकि नई बहार लाने के लिए तो पेड़-पौधों-पत्तों को खून से अर्थात परिश्रम से ही सींचना पड़ेगा।

कविवर सुमन कहते हैं कि यहाँ कोई भी उपवन का खाका बनने को तैयार नहीं, उनके अनुसार सब लोग फल-फूल पाना चाहते हैं, उसके लिए जो परिश्रम करना है, उसे करने को कोई तैयार नहीं । मेहनत करने अर्थात् स्वाद बनने के लिए तैयार होना ही होगा, तभी वैतरणी पार होगी।

१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण -

वैतरणी करोगे पार
दूसरों के कन्धे पर
अन्धों की जमात में
अपंगों का अभिनय ?
कटवा दो अपनी टाँगें
टाँगे दो दरख्तों पर
नंगापन पतझर का
कुद्द ती ढक जाएगा ।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ शिवमंगल सिंह ‘सुमन’ रचित ‘वैतरणी करोगे पार’ से उद्‌धृत हैं। यह कविता ‘काव्य कुंज’ पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने किया है ।

प्रसंग - इन पंक्तियों में कवि अपने युग के मनुष्य को अपने समय के परिष्कार का, अपने जीवन के उत्कर्ष का दायित्व दूसरों के ऊपर न डालकर अपने ऊपर लेने का संदेश दिया है ।

व्याख्या - ऊपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से कवि इस दौर की प्रवृत्ति को देखकर कहते है कि यहाँ सब लोग दूसरों के कन्धों पर बैठकर अपनी नैया पार लगाना चाहते हैं, उन्हें वे कहते हैं कि अपंगो का अभिनय करने से बेहतर है कि अपनी टाँगें कटवा ही दो ताकि जो पतझर फैला है, वह कुछ ढँक जाए। हम अपनी गलतियों पर पर्दा डाल सकें।

विशेष -

१) मानव मूल्यों के पतन पर कवि ने चिंता व्यक्त की है।
२) कवि ने कविता का विषय सामायिक चुना है। इससे रोज - रोज हमारा सामना होता है।
३) कविता की भाषा सहज और सरल है ।
४) वैतरणी शब्द का सांकेतिक रूप में प्रयोग हुआ है ।

१.५ बोध प्रश्न -

१) ‘वैतरणी करेंगे पार’ कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए?

२) ‘वैतरणी करोंगे पार’ कविता में कवि ने मनुष्य की किस प्रवृत्ति का चित्रण किया है? इसे सौदाहरण समझाइए।

३) ‘वैतरणी करोंगे पार’ कविता में वैतरणी का सांकेतिक अर्थ स्पष्ट करते हुए? कविता के भावार्थ को स्पष्ट कीजिए?

४) ‘वैतरणी करोगे पार’ कविता में कवि ने मानव मूल्यों के पतन पर चिंता व्यक्त की है। इस पर प्रकाश डालिए?

१.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

१) ‘वैतरणी करोगे पार ’ कविता के कवि कौन हैं?

उत्तर शिवमंगल सिंह सुमन’ वैतरणी करोगे पार’ कविता के कवि हैं।

२) ‘वैतरणी करोगे पार’ कविता में वैतरणी का क्या अर्थ है ?

उत्तर ‘वैतरणी करोगे पार’ कविता में वैतरणी का अर्थ है जीवन में सफलता प्राप्त करना। (वैतरणी - एक मिथकीय नदी जो स्वर्ग के रास्ते में पड़ती है।)

३) ‘वैतरणी करोगें पार’ कविता में मनुष्य कैसे वैतरणी पार करना चाहता है ?

munotes.in

उत्तर 'वैतरणी करोगें पार' कविता में मनुष्य दूसरों के कन्धे पर वैतरणी पार करना चाहता है।

४) अपंगो सा अभिनय कौन करता है ?

उत्तर दूसरों के कन्धे पर वैतरणी पार करने वाला अपंगो सा अभिनय करता है।

५) प्लास्टिक के फूलों से क्या सजाए जाने का शौक चर्राया है ?

उत्तर प्लास्टिक के फूलों से बाग को सजाये जाने का शौक चर्राया है।

६) किसे पार करने के लिए कवि कहते हैं ?

उत्तर वैतरणी पार करने के लिए कवि कहते हैं।

७) कवि पतझर का नंगापन दूर करने के लिए क्या कहते हैं ?

उत्तर कवि पतझर का नंगापन दूर करने के लिए अपनी टाँगों को कटवाने के लिए कहते हैं।

८) कवि के अनुसार किसका पानी मर गया है ?

उत्तर कवि के अनुसार मालियों की पीढ़ी का पानी मर गया है ।

९) वर्तमान में लोग क्या नहीं बनना चाहते ?

उत्तर वर्तमान में लोग खाद नहीं बनना चाहते ।

१०) शिवमंगल सिंह 'सुमन' के दो कविता संग्रह का नाम लिखिए ?

उत्तर शिवमंगल सिंह 'सुमन ' के दो कविता संग्रह का नाम है - १) हिल्लोल तथा
२) जीवन के गान

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -२

'बात बालेगी' - शमशेर बहादुर सिंह

इकाई की रुपरेखा :

२.१ इकाई का उद्‌देश्य
२.१.१ कवि परिचय / शमशेर बहादुर सिंह
२.१.२ प्रस्तावना
२.१.३ भावार्थ / कथ्य
२.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
२.१.५ बोध प्रश्न
२.१.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

२.१ ईकाई का उद्‌देश्य-

- इस इकाई में कवि शमशेर बहादुर सिंह की पाठ्‌यक्रम में निर्धारित कविता की विवेचना की गई है । इससे आप -
- कविता का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे।
- कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे ।
- कविता से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे ।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे ।

२.१.१ शमशेर बहादुर सिंह / कवि परिचय

शमशेर बहादुर सिंह का जन्म १३ जनवरी, १९११ को देहरादून, उत्तर प्रदेश में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा देहरादून में हुई । युवाकाल में वे वामपंथी विचारधारा से प्रभावित हुए । शमशेर की कविताएँ आधुनिक काम— बोध के बहुत निकट हैं, जहाँ पाठक तथा श्रोता के सहयोग की स्थिति को स्वीकार किया जाता है । उनकी बिम्ब 'रेडीमेड' नहीं हैं , वह सामाजिक आस्वादन को पूरी छूट देता है । १२ मई, १९९३ को वे दिवगंत हो गये ।

कविता संग्रह - कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ, चुका भी हूँ नहीं मैं, इतने पास अपने आदि।

२.१.२ प्रस्तावना -

'बात बोलेगी कविता' में कवि सच्चाई के संबंध में अपनी कविता को खड़ी करते हैं । वे कहते है कि सच्चाई को प्रकट होने के लिए किसी और की आवश्यकता नहीं होती। वह स्वयं बोलती है ।

२.१.३ भावार्थ / कथ्य -

शमशेर बहादुर सिंह 'बात बोलेगी' कविता में सच्चाई के संबंध अपनी बात प्रस्तुत करते हैं । सच्चाई सच्चाई होती है, उसे प्रकट होने के लिए किसी के सहारे की जरूरत नहीं होती । उनकी कविता का अभिप्राय खोजना होता है, वे भाषा की निगूढ़ में अपनी बात को रखते हैं ।

कवि की यह कविता सच्चाई के पक्ष में खड़ी है। वे कहते हैं कि सच्चाई को प्रकट या प्रस्तुत होने के लिए किसी और की आवश्यकता नहीं होती। वह स्वयं बोलती है । जो सत्य है, समय उधर ही गति करता है और जिस जनता ने अपने भय को जीत लिया है, उसका सुख भी सत्य में ही निहित है ।

वर्तमान काल अथवा आज की दीनता , निर्धनता, और बौध्दिक दरिद्रता का सामना करने के लिए कवि आहवान करते हैं कि सब लोग एक स्वर में पूछें कि सत्य का क्या रंग हैं अर्थात इस कठिन समय के पीछे की सच्चाई क्या है। वह कहते हैं कि जनता का दु:ख तो एक ही हैं, राजनीति और धर्म के नारे और झंडे भले ही अनेक हैं ।

कवि जनता से एक होने का आहवान करते हैं और कहते हैं कि अगर वे ऐसा नहीं करेंगे तो उनकी स्वतंत्रता छिन जाएगी । उस समय हम कुछ नहीं कर सकेंगे ।

अत: सत्य के पक्ष में खड़ा होना होगा। तभी बात बोलेगी भी और भेद खोलेगी ।

२.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण -

'बात बोलेगी
हम नहीं।
भेद खोलेगी
बात ही।
सत्य का मुख
झूठ की आँखें
क्या – देखें!'

सदंर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ शमशेर बहादुर सिंह रचित 'बात बोलेगी' से उद्दधृत हैं । यह कविता 'काव्य कुंज' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल, मुम्बई विश्वविद्यालय मुम्बई ने किया है ।

प्रसंग - कवि की यह कविता सच्चाई के पक्ष में कही है । वे कहते हैं कि सच्चाई को प्रकट होने के लिए किसी और की आवश्यकता नहीं होती । वह स्वयं बोलती है ।

व्याख्या - उपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से कवि सच्चाई को प्रकट अथवा प्रस्तुत होने के लिए किसी और की आवश्यकता नहीं होती। वह स्वयं बोलती है। कवि सच्चाई के पक्ष में खड़ा है । हमें भी सच्चाई के पक्ष में खड़ा रहना चाहिए । अतः हम केवल सत्य को ही देखें ।

विशेष - १) कवि सच्चाई के पक्ष में खड़ा है ।
२) सच्चाई स्वयं प्रकट होती है ।
२) कविता की भाषा सहज एवं सरल है ।
४) बात बोलेगी' पंक्ति का सांकेतिक अर्थ बहुत सरल है किन्तु उसका अर्थ निगूढ़ है ।

२.१.५ बोध प्रश्न -

१) 'बात बोलेगी' कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।
२) 'बात बोलेगी' कविता सच्चाई के पक्ष में कही है। इस पंक्ति पर प्रकाश डालिए।
३) 'बात बोलेगी' कविता में कवि वर्तमान काल की दीनता, निर्धनता और बौध्दिक दरिद्रता का चित्रण करते हैं इसे स्पष्ट कीजिए ।
४) 'बात बोलेगी' कविता में कवि सच्चाई के साथ न खड़े होने पर स्वतंत्रता छिन जाने की चिंता को क्यों प्रकट करते हैं? इसकी समीक्षा कीजिए।

२.१.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न -

१) 'बात बोलेगी' कविता के अनुसार भेद कौन खोलेगा ?

उत्तर 'बात बोलेगी' कविता के अनुसार भेद बात ही खोलेगी।

२) 'बात बोलेगी' कविता के कवि कौन हैं?

उत्तर 'बात बोलेगी' कविता के कवि शमशेर बहादुर सिंह है।

३) कौन बोलेगा ?

उत्तर बात बोलेगी ।

४) सत्य का रूख किसका रुख है ?

उत्तर सत्य का रूख समय का रूख है ।

५) किसमें सुख है ?

उत्तर सत्य में सुख है ।

६) बुद्धि कैसी है ?

उत्तर बुद्धि कंगाल है ।

७) सत्य के पक्ष में खड़े न होने पर क्या होगा ?

उत्तर सत्य के पक्ष में खड़े न होने पर स्वतंत्रता छिन जाएगी ।

८) सत्य का रंग क्या है? इसे कैसे पूछा जायेगा ?

उत्तर सत्य का रंग क्या है, इसे पूछने के लिए एक साथ आना होगा ।

९) शमशेर बहादुर का जन्म किस वर्ष हुआ ?

उत्तर शमशेर बहादुर का जन्म १३ जनवरी , १९११ में हुआ ।

१०) जनता का दु:ख कितने प्रकार का है ?

उत्तर जनता का दु:ख एक ही प्रकार का है।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -३

'बसंती हवा' - केदारनाथ अग्रवाल

इकाई की रुपरेखा :

३.२ इकाई का उद्देश्य-
- ३.२.१ कविता परिचय / केदारनाथ अग्रवाल
- ३.२.२ प्रस्तावना
- ३.२.३ भावार्थ / कथ्य
- ३.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
- ३.२.५ बोध प्रश्न
- ३.२.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

३.२ इकाई का उद्देश्य-

- इस इकाई में कवि केदारनाथ अग्रवाल की पाठ्यक्रम में निर्धारित कविता की विवेचना की गई है । इससे आप -
- कविता का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे।
- कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे ।
- कविता से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे ।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे ।

३.२.१ केदारनाथ अग्रवाल / कवि परिचय-

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म १ अप्रैल १९११ को कमासिन, बाँदा (उत्तर प्रदेश) में हुआ। बी.ए. इलाहाबाद विश्वविद्यालय से और एल. एल. बी. डी. ए. वी. कॉलेज कानपुर से की। वे प्रगतिशील काव्य-धारा के एक प्रमुख कवि हैं । कवि केदारनाथ की जनवादी लेखनी पूर्णरूपेण भारत की सोंधी मिट्टी की देन है ।

काव्य संग्रह - युग की गंगा (१९४७), नींद के बादल (१९४७), लोक और आलोक (१९५७) आदि ।

३.२.२ प्रस्तावना -

'बसंती हवा' कविता में कवि हवा और प्रकृति के अन्य उपादानों , जैसे कि पेड़ - पौधे आदि का मानवीकरण करते हुए बसंती हवा के बहने का बड़ा सजीव चित्र खींचा है ।

३.२.३ भावार्थ / कथ्य -

केदारनाथ अग्रवाल 'बसंती हवा' कविता के माध्यम से हवा और प्रकृति के अन्य उपादानों जैसे कि पेड़- पौधे आदि का मानवीकरण करते हुए बंसती हवा के बहने का बडा सजीव चित्र खींचा है । उन्हें प्रकृति का कवि कहा जाता है ।

कवि के अनुसार हवा अपने बारे में बताते हुए कहती है कि मैं वही हवा हूँ जो अनन्त समय से आकाश को थामे हुए है, जो पूरी पृथ्वी पर मीठा संगीत गुँजाती है, जो जीवों को प्रेम का अमृत पिलाती है । हवा कहती है कि मुझे देखों मैं कितनी मस्तमौला और बावली हूँ ।

मुझे कोई डर नहीं है, न कोई दोस्त न दुश्मन जिधर भी जाती हूँ हर चीज को प्यार से सहलाती, हिलाती जाती हूँ । खेतों में जाकर वह अलसी, सरसों और अरहरी के पौधों को हिलाती -डुलाती है ।

कविता के अन्तिम पद में प्रकृति के इस वितान में एक पथिक को लाकर कवि जैसे प्रकृति के मानवीकरण को चरम पर पहुँचा देता है । हवा अरहरी के पौधों को पास से गुजरते राहगीर के ऊपर घेर लेती है और हँसती है ।

munotes.in

३.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण-

'हवा हूँ, हवा, मैं बसंती हवा हूँ।
वही हाँ, वही जो युगों से गगन को
बिना कष्ट-श्रम के सम्हाले हुए हूँ,
हवा हूँ, हवा मैं बसंती हवा हूँ ।
वही हाँ, वही जो धरा का बसंती
सुसंगीत मीठा गुँजाती फिरी हूँ,
हवा हूँ, हवा, मैं बसंती हवा हूँ।'

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ केदारनाथ अग्रवाल रचित 'बसंती हवा' से उद्धृत है । यह कविता 'काव्य कुंज' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने किया है।

प्रसंग - इन पंक्तियों में कवि ने हवा और प्रकृति के अन्य उपादानों जैसे कि पेड़-पौधे आदि का मानवीकरण करते हुए बंसती हवा के बहने का बड़ा सजीव चित्र खींचा है ।

व्याख्या - ऊपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से कवि हवा और प्रकृति के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करते हैं । केदारनाथ अग्रवाल को प्रकृति का कवि कहा जाता है ।

हवा अपने बारे में बताते हुए कहती है कि मैं वही हवा हूँ जो अनन्त समय से आकाश को थामे हुए है, जो पुरी पृथ्वी पर मीठा संगीत गुँजाती है, जो जीवों को प्रेम का अमृत पिलाती हैं। हवा कहती हैं कि मुझे देखो मैं कितनी मस्तमौला और बावली हूँ ।

विशेष -

१) कवि ने हवा आरै प्रकृति के अन्य उपादानों जैसे कि पेड़-पौधे आदि का मानवीकरण किया है।

२) कविता की पंक्तियों के आधार पर केदारनाथ अग्रवाल को प्रकृति का कवि कहा जा सकता है ।

३) कविता की भाषा सहज और सरल है ।

४) कविता मे बसंती हवा का विशेष चित्रण है ।

३.२.५ बोध प्रश्न -

१) 'बंसती हवा' कविता में कवि हवा और प्रकृति के अन्य उपादानों जैसे कि पेड़-पौधे आदि का मानवीकरण करते हैं । इस पर प्रकाश डालिए ?

२) 'बसंती हवा ? कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए ?

३) केदारनाथ अग्रवाल को प्रकृति का कवि कहा जाता है। 'बंसती हवा' कविता के माध्यम से समीक्षा कीजिए ?

४) 'बसंती हवा' कविता में हवा कहती है कि मुझे देखो मैं कितनी मस्तमौला और बावली हूँ। इस कथन पर अपने विचार लिखिए ?

३.२.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न -

१) 'बसंती हवा' कविता के कवि कौन हैं ?

उत्तर 'बसंती हवा' कविता के कवि केदारनाथ अग्रवाल हैं ।

२) हवा के अनुसार वह कौन सी हवा हैं ?

उत्तर हवा के अनुसार वह बसंती हवा हैं।

३) किसे प्रकृति का कवि कहा जाता है ?

उत्तर केदारनाथ अग्रवाल को प्रकृति का कवि कहा जाता है।

४) हवा प्राणियों को कौन - सा आसव पिलाकर जिलाये हुए है ?

उत्तर हवा प्राणियों को प्रेम - आसव पिलाकर जिलाये हुए है।

५) कौन कहता है कि वह मस्तमौला और बावली है ?

उत्तर हवा कहती है कि वह मस्तमौला और बावली है।

६)	किसके पास न प्रेमी है और न दुश्मन ?

उत्तर	हवा के पास न प्रेमी है और न दुश्मन।

७)	कवि केदारनाथ अग्रवाल के दो काव्य संग्रह कौन-से हैं ?

उत्तर	कवि केदारनाथ अग्रवाल के दो काव्य संग्रह है- युग की गंगा (१९४७) और नींद के बादल (१९४७)।

८)	कवि ने किसका मानवीकरण किया है ?

उत्तर	कवि ने हवा और प्रकृति के अन्य उपादानों जैसे कि पेड़-पौधे आदि का मानवीकरण किया है।

९)	बसंती हवा में कौन हँसा ?

उत्तर	बसंती हवा में सारी सृष्टि हँसी।

१०)	बसंती हवा को देखकर कौन लजाया ?

उत्तर	बसंती हवा को देखकर अरहरी लजायीं।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -४

'वाघ' - केदारनाथ सिंह

इकाई की रुपरेखा :

४.० इकाई का उद्देश्य -
४.१ कवि परिचय / केदारनाथ सिंह
४.२ प्रस्तावना
४.३ भावार्थ / कथ्य
४.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
४.५ बोध प्रश्न
४.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

४.० इकाई का उद्देश्य -

इस इकाई में कवि केदारनाथ सिंह की पाठ्यक्रम में निर्धारित कविता की विवेचना की गई है । इससे आप -

- कविता का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे ।
- कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे ।
- कविता के संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे ।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

४.१ केदारनाथ सिंह / कवि परिचय -

केदारनाथ सिंह का जन्म सन् १९३४ में बलिया, उत्तर प्रदेश के चकिया गाँव में हुआ। आरम्भिक शिक्षा गाँव में बाद की शिक्षा हाईस्कूल से एम. ए. तक वाराणसी में । आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान विषय पर सन् १९६४ में पीएच. डी. प्राप्त की । वे पेशे से अध्यापक थे।

काव्य संग्रह - अभी बिलकुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो आदि ।

४.२ प्रस्तावना -

'वाघ' कविता एक लम्बी कविता है जिसमें विभिन्न कविताएँ जीवन के विभिन्न पहलुओं में मौजुद हिंसा को दर्शाती हैं। यह कविता उसका आरम्भिक अंश है।

४.३ भावार्थ / कथ्य -

केदारनाथ सिंह 'वाघ' कविता के माध्यम से हमारे समय की विडम्बना को रेखांकित करते हुए उसमें एक संवेदनशील मनुष्य की उपस्थिति की तरफ ध्यान दिलाते हैं। यहाँ वह मनुष्य कवि है। उसने जीवन के अनुभवों को जिया है, उन्हे याद रखा है जो उसकी पीठ पर निशानों की तरह मौजूद हैं जैसे बाघ की पीठ पर धारियाँ होती हैं ।

वह कहता है कि अपनी बात जो मुझे कहनी है मैं सीधे कहूँगा, किसी काव्य उपादान का सहारा नहीं लूँगा, क्योंकि मैं ही समय हूं। मेरे नाखूनों में समय की चमक हैं, मेरी आत्मा की खुशी जो है वही इतनी नकारात्मक है कि घुटनों के दर्द के रूप मे प्रकट होती है और इस सदी में जिसे सत्य माना जाता है, दर असल वह झूठ है। मतलब यहाँ झूठ को सच माना जाता है।

कवि कहता है कि मैं अपने होंठों के कम्पन से कुछ कहने का प्रयास कर रहा हूँ, यही कम्पन कवि की पहचान है।

४.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण -

'बिम्ब नहीं
प्रतीक नहीं
तार नहीं
हरकारा नही.
मैं ही कहूँगा
क्योंकि मैं ही
सिर्फ मैं ही जानता हूँ।'

सदंर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ केदारनाथ सिंह रचित 'वाघ' (आमुख) से उद्धृत हैं। यह कविता 'काव्य कुंज' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने किया है।

प्रसंग - इन पंक्तियो में कवि ने हमारे समय की विडम्बना को चित्रित करते हुए उसमे एक संवेदनशील मनुष्य की उपस्थिति की तरफ ध्यान दिलाते हैं।

व्याख्या -ऊपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से कवि हमारे समय की विडम्बना को रेखांकित करते हुए उसमें एक संवेदनशील मनुष्य की उपस्थिती की तरफ ध्यान दिलाते हैं। यहाँ वह मनुष्य कवि है । उसने जीवन के अनुभवों को जीया हैं, उन्हे याद रखा है जो उसकी पीठ पर निशानों कि तरफ मौजुद हैं जैसे वाघ की पीठ पर धारियाँ होती है । वह कहता है कि अपनी बात जो मुझे कहनी है मैं सीधे कहूँगा, किसी काव्य- उपादान का सहारा नहीं लूँगा क्योंकि मैं ही समय हूँ। मेरे अनुभव मै ही जान सकता हूँ, केवल मैं ।

विशेष -

१) उपर्युक्त पंक्तियों मे कवि ने हमारे समय की विडम्बना का वर्णन किया है ।

२) कविता की भाषा सहज और सरल है ।

३) कविता मे कवि मनुष्य के रूप में विद्यमान है ।

४) कविता में कवि किसी काव्य उपादान का सहारा नहीं लेता ।

४.५ बोध प्रश्न -

१) 'बाघ' कविता में कवि हमारे समय की विडम्बना का चित्रण करते हैं । इस पर प्रकाश डालिए ?

२) 'बाघ' कविता में कवि किस रूप में उपस्थित है ? इसे स्पष्ट कीजिए।

३) 'बाघ' कविता मे कवि किसी काव्य उपादान का सहारा नहीं लेते । इस कथन की विवेचना किजिए ?

४) 'बाघ' कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

४.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न -

१) 'बाघ' कविता के कवि कौन हैं ?

उत्तर 'बाघ' कविता के कवि केदारनाथ सिंह हैं ।

२) 'बाघ' कविता कवि क्या रेखांकित करते हैं ?

उत्तर 'बाघ' कविता में कवि हमारे समय की विडम्बना को रेखांकित करते है ।

३) 'बाघ' कविता में कवि हमारे ध्यान में क्या लाना चाहते हैं ?

उत्तर 'बाघ' कविता में कवि हमारे ध्यान में एक संवेदनशील मनुष्य की उपस्थिति को लाना चाहते हैं।

४) कविता में कवि किस रूप में उपस्थित है ?

उत्तर कविता में कवि मनुष्य के रूप में उपस्थित है ।

५) कवि कविता मे किस का सहारा नहीं लेता ?

उत्तर कवि कविता में काव्य -उत्पादन का सहारा नहीं लेता ।

६) कवि के अनुसार सदी में किसे सत्य माना जाता है ?

उत्तर कवि के अनुसार सदी में जो झूठ है, उसे सत्य माना जाता है ।

७) कवि होंठों के कम्पन से क्या करने का प्रयास करता है ?

उत्तर कवि होंठो के कम्पन से कुछ कहने का प्रयास करता है ।

८) कवि की पहचान क्या है ?

उत्तर होंठो की कम्पन कवि पहचान हैं ।

९) बिम्ब नही, प्रतीक नहीं' पंक्ति किस कवि की है ?

उत्तर बिम्ब नहीं, प्रतीक नहीं, पंक्ति केदारनाथ सिंह की है ।

१०) केदारनाथ सिंह के किन्हीं दो काव्य संग्रह का नाम लिखिए ?

उत्तर केदारनाथ सिंह के दो काव्य संग्रह हैं - अभी बिलकुल अभी और जमीन पक रही है ।

❖❖❖❖

इकाई -५

‘कहाँ तो तय था चिरागा हर एक घर के लिए’ - दुष्यंत कुमार

इकाई की रुपरेखा :

५.१ इकाई का उद्‌देश्य -

५.१.१ ग़ज़लकार परिचय / दुष्यन्त कुमार

५.१.२ प्रस्तावना

५.१.३ भावार्थ / कथ्य

५.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

५.१.५ बोध प्रश्न

५.१.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

५.१ इकाई का उद्‌देश्य -

इस इकाई में ग़ज़लकार दुष्यन्त कुमार की पाठ्यक्रम में निर्धारित गज़ल की विवेचना की गई है । इससे आप -

- गज़ल का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे ।
- गज़ल से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे ।
- गज़ल से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे ।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नो के उत्तर दे सकेंगे ।

५.१.१ दुष्यन्त कुमार / ग़ज़लकार परिचय

दुष्यन्त कुमार का जन्म १ सितम्बर १९३३ को राजापूर नवाद, जिला बिजनौर (उत्तर प्रदेश) में हुआ । शिक्षा एम. ए. (हिन्दी), इलाहाबाद । उन्होंने कविताएँ, उपन्यास तथा नाटक लिखे, लेकिन जो प्रसिध्दि उन्हें अपने ग़ज़ल-संग्रह ‘साए में धूप’ से मिली, वह उनकी कोई और रचना उन्हें नहीं दिला सकी / ३० दिसम्बर १९७५ को भोपाल (म. प्र.) मे उनका निधन हुआ।

- कविता संग्रह - सुर्य का स्वागत, जलते हुए वन का वसन्त
- ग़ज़ल - संग्रह - साये में धूप

munotes.in

५.१.२ प्रस्तावना -

'कहाँ तो तय था चिरागा हर एक घर के लिए' 'दुष्यंत' कुमार की एक प्रसिध्द ग़ज़ल है। इसमें वर्तमान सामाजिक राजनीतिक परिस्थिति को सम्बोधित करते हुए इस ग़ज़ल में आजादी के बाद भंग हुए सपनों की ओर संकेत किया गया है तथा अलग-अलग ढंग से जीवन की विषमताओं को चित्रित किया गया है।

५.१.३ भावार्थ / कथ्य -

दुष्यन्त कुमार 'कहाँ तो तय था चिरागा हर एक घर के लिए' ग़ज़ल के माध्यम से वर्तमान सामाजिक राजनीतिक परिस्थिति को सम्बोधित करते हुए आजादी के बाद भंग हुए सपनों की ओर संकेत करते हैं। इस ग़ज़ल में अलग-अलग ढंग से जीवन की विषतमताओं को रेखांकित किया गया है।

यह दुष्यन्त कुमार की एक प्रसिध्द ग़ज़ल है। ग़ज़ल मूलतः उर्दू की विधा होती है जिसमें हर शेर अलग होकर भी अपने शिल्पगत सूत्रों से ग़ज़ल से जुड़ा रहता है। इस ग़ज़ल के सभी शेर अपने कथ्य के लिहाज से भी एक दूसरे से सम्बध्द है।

ग़ज़लकार संघर्ष को भी नहीं छोडना चाहता, ग़ज़ल के पाँचवे शेर में वह कहता है कि शक्तिशाली लोगों को भले ही यह भरोसा हो चला हो कि कोई उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता, लेकिन आम आदमी अपने अधिकार की आशा नहीं छोड़ता । वह अपनी आवाज में असर पैदा करने की उम्मीद से जुड़ा हुआ है ।

५.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण -

वो मुतमइन हैं कि पत्थर पिघल नहीं सकता / मैं बेकरार हूँ आवाज में असर के लिए ।

संदर्भ -प्रस्तुत पंक्तियाँ दुष्यन्त कुमार रचित 'कहाँ तो तय था चरागाँ हर एक घर के लिए' ग़ज़ल से उद्धृत हैं। यह ग़ज़ल काव्य कुंज पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने किया है ।

प्रसंग -उपर्युक्त पंक्तियों मे ग़ज़लकार ने वर्तमान सामाजिक राजनीतिक परिस्थिति को सम्बोधित करते हुए आजादी के बाद भंग हुए सपनों की ओर संकेत करते हैं ।

व्याख्या - ऊपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से ग़ज़लकार जीवन की विषमताओ को चित्रित करते हैं । लेकिन साथ ही ग़ज़लकार संघर्ष को भी नहीं छोड़ना चाहते, ग़ज़ल के शेर में वह कहते हैं कि शक्तिशाली लोगों को भले ही यह भरोसा हो चला हो कि कोई उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता, लेकिन आम आदमी अपने अधिकार की आशा नहीं छोड़ता । वह अपनी आवाज मे असर पैदा करने की उम्मीद से जुड़ा हुआ है ।

विशेष –

१) उपर्युक्त पंक्तियों में ग़ज़लकार ने वर्तमान सामाजिक - राजनीतीक परिस्थिति का चित्रण किया है।

२) ग़ज़ल में आम आदमी अपने अधिकार की आशा नहीं छोड़ता ।

३) ग़ज़ल की भाषा सहज सुन्दर लय युक्त है ।

४) यह दुष्यत्त कुमार की प्रसिद्ध ग़ज़ल है ।

५.१.५ बोध प्रश्न -

१) दुष्यंत कुमार ने ग़ज़ल के माध्यम से वर्तमानकाल सामाजिक राजनीतिक परिस्थिति का चित्रण किया है । इस कथन को स्पष्ट कीजिए ?

२) आम आदमी अपने अधिकार की आशा नहीं छोंडता। ग़ज़ल के आधार इसकी समीक्षा कीजिए ?

३) ग़ज़ल का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए ?

४) ग़ज़ल में आजादी के बाद भंग हुए सपनों की ओर संकेत है। इस पर प्रकाश डालिए ?

५.१.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न -

१) ग़ज़ल में किसे सम्बोधित किया गया है ?

उत्तर ग़ज़ल में वर्तमान सामाजिक -राजनीतिक परिस्थिति को सम्बोधित किया गया है ।

२) ग़ज़ल में क्या संकेत किया गया है ?

उत्तर ग़ज़ल मे आजादी के बाद भंग हुए सपनों की ओर संकेत किया गया है ।

३) ग़ज़ल मे क्या रेखांकित किया गया है ?

उत्तर ग़ज़ल में जीवन की विषमताओं को रेखांकित किया गया है ।

४) ग़ज़लकार क्या नहीं छोड़ना चाहता ?

उत्तर ग़ज़लकार संघर्ष नहीं छोड़ना चाहता ।

५) किसे भरोसा हो गया है कि कोई उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता ?

उत्तर शक्तिशाली लोगों को भरोसा हो गया है कि कोई उनका कुछ नही बिगाड़ सकता ।

६) आम आदमी क्या नहीं छोड़ता ?

उत्तर आम आदमी अपने अधिकार की आशा नही छोड़ता ।

munotes.in

७) आम आदमी किस उम्मीद से जुड़ा हुआ है?

उत्तर आम आदमी आपनी आवाज में असर पैदा करने की उम्मीद से जुड़ा हुआ है।

८) ग़ज़ल मूलतः किस भाषा की विधा है?

उत्तर ग़ज़ल मूलतः उर्दू भाषा की विधा है ।

९) ग़ज़ल के ग़ज़लकार कौन है?

उत्तर ग़ज़ल के ग़ज़लकार दुष्यंत कुमार हैं ।

१०) दुष्यंत कुमार का जन्म किस जिले मे हुआ था ?

उत्तर दुष्यंत कुमार का जन्म १ सितम्बर १९३३ को राजपूर - नवादा, जिला बिजनौर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था ।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -६

'चल पड़े जिधर दो डग मग में' - सोहलाल द्विवेदी

इकाई की रुपरेखा :

६.२ इकाई का उद्देश्य
६.२.१ कवि परिचय / सोहलाल द्विवेदी
६.२.२ प्रस्तावना
६.२.३ भावार्थ / कथ्य
६.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
६.२.५ बोध प्रश्न
६.२.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

६.२ इकाई का उद्देश्य -

इस इकाई में कवि सोहलाल द्विवेदी की पाठ्यक्रम में निर्धारित कविता की विवेचना की गई है। इससे आप -

- कविता का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे ।
- कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे ।
- कविता से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे ।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे ।

६.२.१ सोहलाल द्विवेदी / कवि परिचय

सोहलाल द्विवेदी का जन्म सन १९०६ में फतेहपुर जिले के बिन्दकी नामक कस्बे में एक सम्पन्न परिवार में हुआ था । घर के अच्छे वातावरण का इनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। हाईस्कूल तक की शिक्षा फतेहपुर में प्राप्त करने के बाद मे उच्च शिक्षा प्राप्त करने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय चले गए। यहाँ से एम.ए., एल.एल बी, की उपाधि पाप्त की। हिन्दी साहित्य का यह अमर सपूत २१ फरवरी, सन १९८८ ई. को इस नश्वर संसार से विदा हो गया।

रचनाएँ - भैरवी, पूजागीत, दूध बताशा, शिशु भारती आदि ।

६.२.२ प्रस्तावना -

'चल पड़े जिधर दो डग, मग में' कविता में बापू की एक विशाल छवि का अंकन किया गया है।

munotes.in

६.२.३ भावार्थ / कथ्य -

सोहलाल द्विवेदी 'चल पड़े जिधर दो डग, मग में' कविता महात्मा गांधी को समर्पित करते हैं। राष्ट्रकवि द्विवेदी ने बापू की एक विशाल छवि का अंकन किया है। वे कहते हैं कि जिधर आप चले, जनसमूह उधर ही चल पड़ता है जिसे आप आशीर्वाद दें, उसकी रक्षा में अनेक हाथ लग जाते है, युग हमेशा आपको याद रखेगा ।

सोहलाल द्विवेदी जी गांधीवाद के प्रबल समर्थक थे। इस कविता में उन्होंने गांधी जी के प्रभाव की काव्यात्मक व्यंजना की है। उस दौर में गांधी जी एकमात्र ऐसे नेता थे जिन्हें साधारण जनता वास्तव में ही ह्रदय से सम्मान देती थी। उनकी बात मानती थी। उनके जैसा नेता जिसके साथ लाखों लोग एक साथ खड़े हो जाएँ, न तो आजादी से पहले कोई था, न बाद में हुआ ।

कहा जाता है कि ३० जनवरी , १९४८ को जब गांधी जी की हत्या हुई, पूरा देश रो उठा था जैसे उनके किसी बहुत निकट व्यक्ति का निधन हो गया हो।

६.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण -

चल पड़े जिधर दो डग, मग में,
चल पड़े कोटि पग उसी ओर,
गड़ गई जिधर भी एक दृष्टि,
गड़ गए कोटि दृग उसी ओर।

सदंर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ सोहलाल द्विवेदी रचित 'चल पड़े जिधर दो डग, मग में' से उद्धृत हैं। यह कविता 'काव्य-कुंज' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल, मुम्बई विश्वविद्यालय मुम्बई ने किया है ।

प्रसंग - इन पंक्तियों में राष्ट्रकवि सोहलाल द्विवेदी ने महात्मा गांधी की एक विशाल छवि का अंकन किया है ।

व्याख्या - ऊपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से कवि बापू की एक विशाल छवि का अंकन करते हैं। उनके अनुसार जिधर आप चलें, जनसमूह उधर ही चल पड़ता है, जिसे आप आशीर्वाद दे उसकी रक्षा में अनेक हाथ लग जाते हैं, युग हमेशा आपको याद रखेगा। द्विवेदी जी गांधीवाद के प्रबल समर्थक थे ।

विषेश –

१) कवि ने पंक्तियाँ गाँधीजीं को समर्पित की हैं।

२) कविता की भाषा सहज और सरल है।

३) महात्मा गांधी के जीवन मूल्यों का चित्रण है।

४) गांधी जी को साधारण जनता ह्रदय से सम्मान देती थी।

६.२.५ बोध प्रश्न -

१) राष्ट्रकवि सोहलाल द्विवेदी की प्रसिध्द कविता 'चल पड़े जिधर दो डग मग में' महात्मा गांधी को समर्पित है। इस पर प्रकाश डालिए ?

२) 'चल पड़े जिधर दो डग, मग में' कविता का मूल भाव अपने शब्दो में लिखिए ?

३) राष्ट्रकवि सोहलाल द्विवेदी गांधीवाद के प्रबल समर्थक थे । पठित कविता के आधार पर समीक्षा कीजिए ?

४) महात्मा गांधी की साधारण जनता वास्तव में ही ह्रदय सम्मान देती थी। इसे स्पष्ट कीजिए ?

६.२.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न -

१) 'चल पड़े जिधर दो डग मग में' कविता के कवि कौन हैं ?

उत्तर 'चल पड़े जिधर दो डग मग में' कविता के कवि सोहलाल द्विवेदी हैं।

२) राष्ट्रकवि का सन्मान किसे मिला ?

उत्तर राष्ट्रकवि का सन्मान सोहलाल द्विवेदी को मिला।

३) 'चल पड़े जिधर दो डग मग में' कविता किसे समर्पित हैं ?

उत्तर 'चल पड़े जिधर दो डग मग में' कविता महात्मा गांधी को समर्पित है।

४) कविता में किसकी विशाल छवि का अंकन है ?

उत्तर कविता में बापू की विशाल छवि का अंकन है।

५) गांधीवाद का प्रबल समर्थक कौन था ?

उत्तर राष्ट्रकवि सोहलाल द्विवेदी गांधीवाद के प्रबल समर्थक थे।

६) किसे साधारण जनता ह्रदय से सम्मान देती थी ?

उत्तर महात्मा गांधी को साधारण जनता ह्रदय से सम्मान देती थी।

७) जनता किस नेता की बात मानती थी ?

उत्तर जनता महात्मा गांधी की बात मानती थी।

८) कवि के अनुसार युग-दृष्टा कौन है ?

उत्तर कवि के अनुसार युग-दृष्टा महात्मा गांधी है।

९) कवि के अनुसार युग -परिवर्तक कौन था ?

उत्तर कवि के अनुसार युग-परिवर्तक महात्मा गांधी थे।

१०) कविता में द्विवेदीजी ने गांधीजी के प्रभाव किस शैली में चित्रित किया है ?

उत्तर कविता में द्विवेदी जी ने गांधी जी के प्रभाव को काव्यात्मक व्यंजना में चित्रित किया है।

❖❖❖❖

इकाई -७

'हम दीवानो की क्या हस्ती'- भगवती चरण वर्मा

इकाई की रुपरेखा :

७.० इकाई का उद्देश्य -
- ७.१ कवि परिचय / भगवतीचरण वर्मा
- ७.२ प्रस्तावना
- ७.३ भावार्थ /कथ्य
- ७.४ संदर्भ साहित स्पष्टीकरण
- ७.५ बोध प्रश्न
- ७.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

७.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई में कवि भगवतीचरण वर्मा की पाठ्यक्रम में निर्धारित कविता की विवेचना की गई है । इससे आप -

- कविता का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे ।
- कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या करक सकेंगे ।
- कविता से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे ।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे ।

७.१ भगवतीचरण वर्मा / परिचय

भगवतीचरण वर्मा का जन्म ३० अगस्त, १९०३ को उनाव जिले (उत्तर प्रदेश) के शफीपुर गाँव में हुआ। इलाहाबाद से बी. ए. एल. एल. बी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। ५ अक्टूबर १९८१ को इनका निधन हुआ।

काव्य संग्रह - मेरी कविताएँ, सविनय और एक नाराज कविता आदि।

७.२ प्रस्तावना -

'हम दीवानों की क्या हस्ती' कविता में कवि जीवन के प्रति एक फक्कड़ और मस्ती भरा दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हुए कहते हैं कि हमने अपने जीवन को दीवानगी के साथ जीया है, मस्ती के साथ जीया है।

munotes.in

७.३ भावार्थ / कथ्य -

भगवतीचरण वर्मा 'हम दीवानों की क्या हस्ती' कविता के माध्यम से जीवन के प्रति एक फक्कड़ और मस्ती भरा दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हुए कहते हैं कि हमने अपने जीवन को दीवानगी के साथ जिया है, मस्ती के साथ जिया है। यह कविता व्यक्ति की एक विशेष मन:स्थिति की तरफ संकेत करती है, जब वह दैनिक जीवन की नियम बध्दता से ऊबकर स्वयं को स्वतंत्र कर लेता है और जीवन तथा संसार को एक खास लापरवाही से देखता है।

भगवतीचरण वर्मा ने 'हम दीवनों की क्या हस्ती ' कविता में अपनी तरल दृष्टि से संसार को देखते हुए मस्ती प्रेम और फक्कड़ता के माध्यम से सच्ची खुशी की तलाश करते हैं।

७.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण -

'हम दीवानों की क्या हस्ती', आज यहाँ कल वहाँ चले। मस्ती का आलम साथ चला, हम धूल उड़ाते जहाँ चले।

सदंर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ भगवतीचरण वर्मा रचित हम दीवानों क्या हस्ती से उद्‌धृत हैं। यह कविता 'काव्य-कुंज' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने किया है ।

प्रसंग - इन पंक्तियो में कवि अपने जीवन के प्रति एक फक्कड़ और मस्ती भरा दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हुए कहते हैं कि हमने अपने जीवन को दीवानगी के साथ जिया है ।

व्याख्या - ऊपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से कवि जीवन के प्रति एक फक्कड़ और मस्ती भरा दृष्टिकोण प्रदर्शित करतें हुए कहते है कि हमने अपने जीवन को दीवानगी के साथ जिया है, मस्ती के साथ जिया है।

इस कविता में व्यक्ति की एक विशेष मन:स्थिती की तरफ संकेत करती है, जब वह दैनिक जीवन की नियम बध्दता से ऊबकर स्वयं को स्वतंत्र कर लेता है और जीवन तथा संसार को एक खास लापरवाही से देखता है।

विशेष -

१) कवि उपर्युक्त पंक्तियों में जीवन के प्रति एक फक्कड़ और मस्ती भरा दृष्टिकोण प्रदर्शित करतें हैं।

२) कविता की भाषा सहज और सरल है।

३) यह कविता व्यक्ति की एक विशेष मन:स्थिति की तरफ संकेत करती है।

४) भगवतीचरण वर्मा मुख्यत: उपन्यासकार है लेकिन उन्होंने कविताएँ भी लिखी हैं।

७.५ बोध प्रश्न -

१) 'हम दिवानों की क्या हस्ती' कविता का सारांश अपने शब्दो में लिखिए ?

२) 'हम दीवानो की क्या हस्ती' कविता में जीवन के प्रति एक फक्कड़ और मस्ती भरा दृष्टिकोण चित्रित हैं। इसे स्पष्ट कीजिए ?

३) 'हम दीवानों की क्या हस्ती' कविता में व्यक्ति की एक विशेष मन:स्थिति की तरफ संकेत है। इसकी समीक्षा कीजिए ?

४) 'हम दिवानों की क्या हस्ती' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए ?

७.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न -

१) 'हम दिवानों की क्या हस्ती' कविता के कवि कौन है?

उत्तर 'हम दिवानों कि क्या हस्ती' कविता के कवि भगवतीचरण वर्मा हैं।

२) भगवतीचरण वर्मा मूलतः किस विधा के रचनाकार है?

उत्तर भगवतीचरण वर्मा मूलतः उपन्यास विधा के रचनाकार हैं।

३) भगवतीचरण वर्मा के दो काव्य संग्रह कौन से है?

उत्तर भगवतीचरण वर्मा के दो काव्य-संग्रह हैं - मेरी कविताएँ तथा सविनय और एक नाराज कविता।

४) इस कविता में कवि जीवन के प्रति कौन सा दृष्टिकोण रखते हैं?

उत्तर इस कविता में कवि जीवन के प्रति एक फक्कड़ और मस्ती भरा दृष्टिकोण रखते हैं।

५) कवि अपने जीवन को कैसे जीता है?

उत्तर कवि अपने जीवन को दीवानगी के साथ जीता है।

६) यह कविता किस मन:स्थिति की तरफ संकेत करती है?

उत्तर यह कविता व्यक्ति की एक विशेष मन:स्थिति की तरफ संकेत करती है।

७) कवि कैसे स्वतंत्र होते हैं?

उत्तर कवि दैनिक जीवन की नियमबध्दता से ऊबकर स्वंय को स्वतंत्र कर लेता है।

८) कवि जीवन और संसार को कैसे देखते है?

उत्तर कवि जीवन और संसार को लापरवाही से देखते हैं।

९) कवि की कविता में कौन सी दृष्टि है?

उत्तर कवि की कविता में तरल दृष्टि है।

१०) कवि के अनुसार हम किस दुनिया में हैं?

उत्तर कवि के अनुसार हम भिखमंगो की दुनिया में है।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -८

‘किस्सा जनतंत्र’ - धूमिल

इकाई की रुपरेखा :

८.१ इकाई का उद्देश्य
८.१.१ कवि परिचय / सुदामा पाण्डेय ‘धूमिल’
८.१.२ प्रस्तावना
८.१.३ भावार्थ / कथ्य
८.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
८.१.५ बोध - प्रश्न
८.१.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न -

८.१ इकाई का उद्देश्य

इस इकाई में कवि सुदामा पाण्डेय ‘धूमिल’ की पाठ्यक्रम में निर्धारित कविता की विवेचना की गई है । इससे आप -

- कविता का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे ।
- कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे ।
- कविता से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे ।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे ।

८.१.१ सुदामा पाण्डेय ‘धुमिल’/कवि परिचय-

धूमिल का जन्म ९ नवम्बर १९३६ को गाँव खेवली, बनारस (उत्तर प्रदेश) में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव मे तथा कूर्मि क्षत्रिय इंटर कॉलेज, हरहुआ से १९५३ में हाईस्कूल किया।

धूमिल जी हिन्दी की समकालीन कविता के दौर के मील के पत्थर सरीखे कवियो में एक है। उनका निधन १० फरवरी सन् १९७५ को हुआ।

प्रकाशित साहित्य -

संसद से सड़क तक (१९७२), कल सुनना मुझे और सुदामा पाण्डेय का लोकतंत्र (१९८३)।

८.१.२ प्रस्तावना -

'किस्सा जनतंत्र' कविता में कवि एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार की दारूण कथा कहते हैं। जिसके घर में खाने को भी पर्याप्त वस्तु नहीं है। धूमिल हमारे देश के जनतंत्र पर एक गहरी आलोचनात्मक टिप्पणी करते हैं।

८.१.३ भावार्थ / कथ्य

सुदामा पाण्डेय 'धूमिल', 'किस्सा जनतंत्र' कविता उनके कविता संग्रह 'कल सुनना मुझे' से ली गई है। इस कविता में वे एक निम्न मध्यमर्गीय परिवार की दारूण कथा कहते हैं। जिसके घर मे खाने को भी पर्याप्त वस्तु नहीं है। रसोई में गृहिणी के घुसने से लेकर उसके थोड़े आटे से रोटी बनाने, और पति द्वारा खाना खाकर दफ्तर के लिए निकलने तक की कहानी बहुत मार्मिक ढंग से बताते हैं । आटा इतना कम है कि आँगन में खेलते बच्चों को भी पूरा नहीं पड़ेगा, स्त्री रोटियाँ बनाते हुए हिसाब लगाती रहती है कि किसको कितनी रोटी दी जाए। पति की थाली में तीन रोटी आती हैं वह उन्हें देखकर दुख से भर उठता है, फिर खाकर काम पर निकल जाता है और रास्ते मे जब उसे साइकिल रोकनी पड़ती है तो उसे याद आता है कि जल्दी में पत्नी को चूमना वह फिर भूल गया। पत्नी जिसने रोटियों की गिनती में भी अपने आपको शामिल नहीं किया। इस मर्म भेदी कविता से धूमिल हमारे देश के जनतंत्र पर एक गहरी आलोचनात्मक टिप्पणि करते हैं।

८.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण -

लगभग भागते हुए चेहरे के साथ,
दफ्तर जाने लगती है
सहसा चौरास्ते पर जली लाल बत्ती जब,
एक दर्द हौले से हिरदै को हूल गया
ऐसी क्या हड़बड कि जल्दी मे पत्नी को चूमना .. देखो, फिर भूल गया ।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' रचित 'किस्सा जनतंत्र' से उद्धृत हैं। यह कविता 'काव्य-कुंज' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल, मुंम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने किया है।

प्रसंग - इन पंक्तियों में कवि ने एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार की दारूण कथा कहते हैं, जिसे घर में खाने को भी प्रर्याप्त वस्तु नहीं हैं।

व्याख्या - ऊपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से कवि कहते है कि स्त्री रोटियाँ बनाते हुए हिसाब लगाती रहती है कि किसको कितनी रोटी दी जाए । पति की थाली में तीन रोटी आती हैं, वह उन्हें देखकर दुख से भर उठता है, फिर खाकर काम पर निकल जाता है और रास्ते में जब उसे साइकल रोकनी पड़ती है तो उसे याद आता है कि जल्दी में पत्नी को चुमना वह फिर भूल गया

विशेष -

१) ऊपर दी गई पंक्तियों में एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार की दारूण कथा का वर्णन हैं।
२) कविता की भाषा सरल है।
३) कविता से धूमिल हमारे देश के जनतंत्र पर एक गहरी आलोचनात्मक टिप्पणि करते हैं।
४) धूमिल की यह कविता अनेक कविता संग्रह 'कल सुनना मुझे' से ली गई है।

८.१.५ बोध प्रश्न

१) 'किस्सा जनतंत्र' कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए ?
२) धूमिल किस्सा जनतंत्र कविता में एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार की दारूण कथा को चित्रित करते हैं। इसकी समीक्षा किजिए ?
३) धूमिल 'किस्सा जनतंत्र' कविता में देश के जनतंत्र पर एक गहरी आलोचनात्मक टिप्पणी करते हैं । इस कथन पर प्रकाश डालिए ?
४) 'किस्सा जनतंत्र' कविता में सहज प्रेम का चित्रण किया गया है। इस पर प्रकाश डालिए ?

८.१.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न –

१) किस्सा जनतंत्र कविता के कवि कौन हैं ?
उत्तर किस्सा जनतंत्र कविता के कवि सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' हैं ।
२) धूमिल का पूरा नाम क्या हैं ?
उत्तर धूमिल का पूरा नाम सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' है ।
३) किस्सा जनतंत्र कविता धूमिल के किस संग्रह से ली गई है ?
उत्तर 'किस्सा जनतंत्र'कविता में धूमिल के 'कल सुनना मुझे' नामक संग्रह से ली गई है।
४) 'किस्सा जनतंत्र' कविता में किसकी दारूण कथा हैं ?
उत्तर 'किस्सा जनतंत्र' कविता में निम्म मध्यवर्गीय परिवार की दारूण कथा हैं।
५) पति की थाली मे कितनी रोटी आती हैं ?
उत्तर पति की थाली में ३ रोटी आती है।
६) कितने बच्चे टा टा कहते हैं ?
उत्तर दो बच्चे टा टा कहते हैं।
७) साइकिल कैसी थी ?
उत्तर साइकिल खटर – पटर एक ढड्ढा सी थी।
८) पति क्या भूल जाता है ?
उत्तर पति जल्दी में पत्नी को चूमना भूल जाता है।
९) धूमिल कविता में किसका किस्सा कहते हैं ?
उत्तर धूमिल कविता में लोकतंत्र का किस्सा कहते हैं।
१०) धूमिल किस पर आलोचनात्मक टिप्पणी करते हैं ?
उत्तर धूमिल हमारे देश के जनतंत्र पर एक गहरी आलोचनात्मक टिप्पणी करते हैं।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१

'विद्रोहिणी'

- सुशीला टाकभौरे

इकाई की रुपरेखा :

१.२ इकाई का उद्देश्य –

- १.२.१ कवि परिचय / सुशीला टाक भौरे
- १.२.२ प्रस्तावना
- १.२.३ भावार्थ / कथ्य
- १.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
- १.२.५ बोध प्रश्न
- १.२.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

१.२ इकाई का उद्देश्य-

- इस इकाई में कवयित्री सुशीला टाकभौरे की पाठ्यक्रम में निर्धारित कविता की विवेचना की गई है । इससे आप –
- कविता का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे ।
- कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे ।
- कविता से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे ।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे ।

१.२.१ सुशीला टाकभौरे / कवि परिचय –

सुशीला टाकभौरे का जन्म ४ मार्च १९५४ को बानापुरा, सिकनी मालवा, होशंगाबाद (म. प्र.) में हुआ । वे दलित स्त्री रचनाकारों में आज अग्रणी स्थान रखती हैं ।

कविता संग्रह – स्वाति बूंद और खरे मोती, तुमने उसे कब पहचाना, यह तुम भी जानो, हमारे हिस्से का सूरज आदि।

१.२.२ प्रस्तावना –

'विद्रोहिणी' कविता में कवयित्री स्त्री के ऊपर समाज द्वारा थोपी गई वर्जनाओं का विरोध करती हैं जो उसे अपंग जैसा बना देती है ।

१.२.३ भावार्थ / कथ्य –

'विद्रोहिणी'

कवयित्री सुशील टाकभौरे 'विद्रोहिणी' कविता के माध्यम से स्त्री के ऊपर समाज द्वारा थोपी गई वर्जनाओं का विरोध करती है˙ जो उसे अपंग जैसा बना दैती हैं । वह कहती हैं कि परम्पराओं की दी हुई बैसाखियों के सहारे वे लंगड़ो की तरह चलती रहीं, लेकिन उन्हें अब खुला अनंत आसमान चाहिए। अपने भीतर भर रही घुटन को चीरकर अब वे अपनी आवाज को सुनाना चाहती हैं। प्रत्येक स्त्री कभी न–कभी इस अनुभव से गुजरती है जब उसे अपने व्यक्तित्व में खुलकर प्रकट होने के कारण समाज की तरफ से जाने क्या-क्या कहा जाता हैं। इसी भावबोध को कवयित्री ने इस कविता में सशक्त ढंग से व्यक्त किया है।

१.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण –

माँ बाप ने पैदा किया था
गंगा।
परिवेश ने लंगड़ा बना दिया
चलती रही
निश्चित परिपाटी पर
बैसाखियों के सहारे
कितने पड़ाव आए !

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ कवयित्री सुशीला टाकभौरे रचित 'विद्रोहिणी' से उद्‌धृत हैं। यह कविता 'काव्य कुंज' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने किया है ।

प्रसंग - इन पंक्तियों में कवयित्री स्त्री के ऊपर समाज द्वारा थोपी गई वर्जनाओं का विरोध करती हैं जो उसे अपंग जैसा बना देती हैं।

व्याख्या - ऊपर दी गई पक्तियों के माध्यम से कवयित्री स्त्री के ऊपर समाज द्वारा थोपी गई वर्जनाओं का विरोध करती हैं जो उसे अपंग जैसा बना देती है। वह कहती हैं कि परम्पराओं की दी हुई बैसाखियों के सहारे वे लंगड़ो की तरह चलती रहीं, लेकिन उन्हें अब खुला अनंत आसमान चाहिए। अपने भीतर भर रही घुटन को चीरकर अब वे अपनी आवाज को सुनाना चाहती हैं। प्रत्येक स्त्री कभी –न कभी इस अनुभव से गुजरती हैं। जब उसे अपने व्यक्तित्व में खुलकर प्रकट होने के कारण समाज की तरफ से जाने क्या क्या कहा जाता है।

विशेष –

१) ऊपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री स्त्री के ऊपर समाज द्वारा थोपी गई वर्जनाओं का विरोध करती हैं।

२) कविता की भाषा सरल है।

३) स्त्री परम्पराओं की दी हुई बैसाखियों के सहारे चल रही हैं।

४) सुशीला टाकभौरे दलित स्त्री रचनाकारों में अग्रणी स्थान रखती है। अतः स्त्री की समस्याओं को वे सशक्त ढंग से चित्रित कर सकी हैं।

१.२.५ बोध प्रश्न –

१) सुशीला टाकभौरे की कविता 'विद्रोहिणी' का केंन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए?

२) 'विद्रोहिणी' कविता मे स्त्री के ऊपर समाज द्वारा थोपी गई वर्जनाओं का चित्रण है। इस पर प्रकाश डालिए?

३) स्त्री परम्पराओं की दी हुई बैसाखियों के सहारे लंगड़ो की तरह चल रहीं है । इस कथन की 'विद्रोहिणी' कविता के आधार पर समीक्षा कीजिए?

४) 'विद्रोहिणी' कविता में विद्रोहिणी कौन हैं? इस पर अपने विचार लिखिए?

१.२.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न –

१) 'विद्रोहिणी' कविता की कवयित्री कौन हैं?

उत्तर 'विद्रोहिणी' कविता की कवयित्री सुशीला टाकभौरे हैं।

२) सुशीला टाकभौर का जन्म किस वर्ष हुआ?

उत्तर सुशीला टाकभौरे का जन्म मार्च १९५४ को बानापुरा सिवनी मालवा, होशंगाबाद (म. प्र.) मे हुआ।

३) कवयित्री अनुसार समाज स्त्री पर क्या थोपता है ?

उत्तर कवयित्री के अनुसार समाज स्त्री पर वर्जनाओं को थोपता है ।

४) कवयित्री के अनुसार स्त्री किसकी बैसाखी के सहारे चल रही है ?

उत्तर कवयित्री के अनुसार स्त्री परम्पराओं की बैसाखी के सहारे चल रही है ।

५) स्त्री को किसने लंगड़ा बनाया?

उत्तर स्त्री को परिवेश ने लंगड़ा बनाया।

६) स्त्री को क्या चाहिए?

उत्तर स्त्री को अनन्त आसमान चाहिए।

७) स्त्री को गंगा के रूप में किसने पैदा किया ?

उत्तर स्त्री को गंगा के रूप में माँ बाप ने पैदा किया।

८) स्त्री कों आसमान की कैसी छत चाहिए ?

उत्तर स्त्री को आसमान की खुली छत चाहिए।

९) विद्रोहिणी बनकर कौन चीखता है ?

उत्तर विद्रोहिणी बनकर स्त्री चीखती है।

१०) अमानवी कौन हो गया है ?

उत्तर स्त्री अमानवी हो गई है।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१0

कहानी - १

वापसी - उषा प्रियंवदा

इकाई की रूपरेखा :

१0.0 इकाई का उद्देश्य
१0.१ लेखक परिचय
१0.२ कथावस्तु
१0.३ निष्कर्ष
१0.४ संदर्भ सहित स्पष्टिकरण
१0.५ बोध प्रश्न

१0.0 इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्द कथाकार उषा प्रियंवदा का परिचय पढेंगे। कहानी के कथ्य से परिचित हो सकेंगे। कहानी का उद्देश्य समझ सकेंगे। कहानी के संवाद एवं भाषाशैली से परिचित हो सकेंगे।

१0.१ लेखक परिचय

आधुनिक हिंदी साहित्य में उषा प्रियंवदा जी का विशिष्ट स्थान है। नई कहानी में अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के कारण उषा जी बहुचर्चित और बहुप्रशंसित रहीं। अपनी रचनाशीलता के कारण ही वे आज भी हिंदी कहानी की महत्वपूर्ण हस्ताक्षर बनी हुई हैं। उषा प्रियंवदा की कहानियों में आज के व्यक्ति की दशा और दिशा का जीवन्त चित्रण देखने को मिलता है जो पाठकों को सहज रुप में अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। हिंदी कहानियों पर होने वाली कोई भी चर्चा इनकी कहानियों की चर्चा के बिना लगभग अधूरी है।

नई कहानी के बाद हिन्दी कहानी की विषय - वस्तु में जो यथार्थवाद दिखाई देता है,उषाजी की कहानी उसी का प्रतिनिधित्त्व करती है। 'वापसी' कहानी

में परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व है। आधुनिकता के इस दौर में दो पीढ़ियों के बीच हो रहे बदलाव व टकराव का लेखा जोखा प्रस्तुत है। कहानी में सेवानिवृत्त हो कर घर लौटे गजाधर बाबू को अपने ही घर में पराया कर दिए जाने के कटु अनुभवों को चित्रित किया गया है।

'जिन्दगी और गुलाब के फूल', 'कितना बड़ा झूठ', 'कोई एक दूसरा',मेरी प्रिय कहानियाँ' उषा जी के महत्त्वपूर्ण कहानी संग्रह हैं तथा 'पचपन खम्बे लाल दीवारें', 'रुकोगी नहीं राधिका', 'शेष यात्रा' अंतर्वंशी' उनके महत्त्वपूर्ण उपन्यास है।

१0.२ कथावस्तु

स्टेशन मास्टर की नौकरी से सेवानिवृत्त होने के बाद गजाधर बाबू बड़े उत्साह से अपने परिवार के साथ रहने की इच्छा लिए घर लौटते हैं। रेलवे क्वार्टर में रह कर नौकरी करते हुए गजाधर बाबू को पैंतीस सालों तक परिवार से दूर रहना पड़ा था ताकि उनका परिवार शहर में सुख- सुविधाओं के बीच रह सके। शहर में रहने से उन्हें किसी प्रकार की कमी का बोध न होने पाए। नौकरी से सेवानिवृत्त होने के बाद उन्होंने सोचा कि अब जिंदगी के बचे दिन अपने परिजनों के साथ प्यार और आराम से बिताएंगे। एक सुंदर और सुखद घर का सपना संजोए वे घर लौटे तो उन्होंने पाया कि परिवार के लोग अपने-अपने ढंग से जी रहे हैं। बेटा घर का मालिक बना हुआ है। बेटी और बहू घर का कोई काम नहीं करतीं और यदि उन्हें रसोई बनाने को कहा जाए तो वे जानबूझ कर आवश्यकता से अधिक राशन खर्च कर देती हैं इसलिए उनकी पत्नी ने रसोई की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है। घर के अन्य कामों के लिए नौकर रखा गया है,जिसकी कोई आवश्यकता ही नहीं है। जिस परिवार के लिए सालों छोटे-मोटे स्टेशन के क्वाटर में अकेले रहकर उन्होंने अपना जीवन गुजार दिया उसी परिवार के किसी सदस्य के मन में उनके प्रति कोई लगाव नहीं है। बच्चों के लिए वे केवल पैसा कमाने के साधन मात्र हैं। गजाधर बाबू की उपस्थिति व किसी कार्य में उनका हस्तक्षेप बेटे बहू को स्वीकार नहीं हो पाता। उनके होने से उन्हें अपने मन से जीने की स्वतंत्रतता नहीं मिल पाती। उनकी अपनी बेटी भी एक छोटी सी डांट पर मुँह फुला देती है तथा उनसे कटकर रहने लगती है। उनकी पत्नी उन्हें समझने की बजाय उलटे उन्हीं को बच्चों के फैसलों के बीच में न पड़ने की सलाह देती है।

परिवार में गजाधर बाबू की वापसी आधुनिक परिवार में टूटते पारिवारिक संबंधों के साथ परिवार के बूढ़े व्यक्ति की लाचारी की झांकी प्रस्तुत करती है। गजाधर बाबू अपने बच्चों के साथ उनके मनोविनोद में शरीक होना चाहते हैं

लेकिन बच्चे उन्हें देखते ही गंभीर हो जाते हैं। घर के सभी सदस्य गजाधर बाबू के फैसले का निरादर कर देते हैं। कुछ समय बाद घर में उनकी उपस्थिति बच्चो को अखरने लगती है। घरेलू मामले में उनके किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप को उनकी पत्नी तथा बच्चे स्वीकार नहीं करते उलटे उनके फैसले का विरोध करने लगते हैं। उनके कारण घर में दोस्तों के बीच चलने वाली चाय पार्टी में अवरोध न हो इसलिए बैठक से उनकी चारपाई हटाकर माँ के कमरे में लगा दी जाती है। उनके लिए सबसे दु:खद बात यह होती है कि जिस पत्नी का स्नेह और सौहार्द नौकरी के समय निरंतर उनके स्मरण में रहा करता था,अब वही पत्नी घर की रसोई सम्हालने में ही संतोष का अनुभव करती है तथा पति से अधिक बच्चों के बीच रहने में अपने जीवन की सार्थकता समझती है। कुल मिलाकर गजाधर बाबू अपने परिजनों के बीच पराया हो जाना बर्दाश नहीं कर पाते। अपनी पत्नी और बच्चों से निराश हो कर पुन;चीनी मील को नयी नौकरी खोज कर घर से चले जाने का फैसला ले लेते हैं।

१0.३ निष्कर्ष

'वापसी' आधुनिक युग के वास्तविक यथार्थ को प्रस्तुत करती है कहानी यह दर्शाती है कि आधुनिक पीढ़ी के लिए परिवार में पुराने मूल्यों की तरह पिता का भी कोई स्थान नहीं रह गया है। वह पत्नी व बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त मात्र बन गया है। पत्नी भी जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी मांग में सिंदूर डालने की अधिकारिणी है तथा समाज में प्रतिष्ठा पाती है। उसके सामने वह दो वक्त भोजन की थाली रख देने से ही अपने सारे कर्तव्यों से छुट्टी पा जाती है। गजाधर बाबू की परेशानी यह है कि वह जीवन यात्रा के अतीत के पन्नों को पुनः वैसे ही जीना चाहते हैं किन्तु अब ये संभव नहीं है। क्योंकि अब उनके लिए घर और परिवार में कोई जगह नहीं है। इसप्रकार यह कहानी वर्तमान युग मे बिखरते मध्यवर्गीय परिवार की त्रासदी तथा मूल्यों के विघटन की समस्या पर प्रकाश डालती है।

१0.४ संदर्भ सहित स्पष्टिकरण

'उन्होंने अनुभव किया कि वह पत्नी और बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त मात्र हैं जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी माँग से सिन्दूर डालने की अधिकारिणी है, समाज में उसकी प्रतिष्ठा है,उसके सामने वह दो वक़्त भोजन की थाली रख देने से सारे कर्तव्यों से छुट्टी पा जाती है।"

संदर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रथम वर्ष कला हिन्दी के पाठ्यपुस्तक 'श्रेष्ठ हिंदी कहानियां' में निर्धारित कहानी 'वापसी' से ली गयी हैं। इस कहानी की लेखिका

'उषा प्रियंवदा' जी हैं। लेखिका ने इस कहानी में गजाधर बाबू के रूप में नौकरी से सेवानिवृत्त हो कर घर लौटे पुरुष मन की व्यथा का चित्रण किया है।

प्रसंग:- प्रस्तुत अवतरण द्वारा लेखिका यह दर्शाती हैं कि गजाधर बाबू घर के अव्यवस्था के संदर्भ में अपनी पत्नी से बात करना चाहते हैं, लेकिन उनकी पत्नी अपने पति की बातों को समझने की बजाय उन्हें बच्चों के मामले में हस्तक्षेप न करने की बात करती है। जिससे गजाधर बाबू का मन बहुत दुखी हो जाता है।

व्याख्या:- लेखिका गजाधर बाबू के घर की बिगड़ी हुई स्थिति का वर्णन करते हुए बताती हैं कि गजाधर बाबू परिवार के लोगों के लिए धन पाने का जरिया रह गए हैं। उन्होंने अपने जीवन के पैंतीस साल नौकरी करते हुए अपने घर से दूर रह कर बिताये और आज उसी नौकरी से सेवानिवृत्त होकर जब वह अपने घर आते हैं तो देखते है कि परिवार में लौटने पर उन्होंने अपने लोगों से जो अपेक्षा की थी वैसा यहाँ कुछ भी नहीं है। वे समझ जाते हैं कि यहां पर ऐसा कोई भी नहीं है जो उनकी मन की स्थिति को समझे अथवा उनका साथी बने। गजाधर बाबू यह अनुभव करते हैं, कि अब उनकी पत्नी का लगाव भी उनके प्रति उतना नहीं रहा जितना कि पहले हुआ करता था। पत्नी की इस व्यवहार से गजाधर बाबू अत्यंत दुखी हो जाते हैं। पत्नी उनके सामने दो वक्त के भोजन की थाली रख कर अपने सारे कर्तव्य से छुट्टी पा जाती है। यह देख कर पत्नी और बच्चों के साथ रहने की इच्छा समाप्त हो जाती है गजाधर बाबू को इस बात का आघात लगता है कि उनके अपने ही घर में उनके लिए कोइ स्थान नहीं है। इसलिए वे परिवार में हस्तक्षेप करना बंद कर देते हैं और एकांत एक चारपाई पर पड़े रहकर अपने स्थिति को सुधारने के लिए उपाय खोजते रहते हैं।

विशेष:- 'वापसी' कहानी पुरुष पर केन्द्रित कहानी है। गजाधर बाबू कहानी के मुख्य पात्र होने के साथ परिवार के मुखिया भी हैं किन्तु अपने ही परिवार में वे उपेक्षित हो कर जीने पर विवश हैं। स्नेही स्वभाव के व्यक्ति होने पर भी वे परिवार के स्नेह से वंचित हैं। परिवार से जुड़ कर जीने की इच्छा को मन में लिए घर लौटे तो हैं फिर भी परिवार के बीच अकेले जीने पर विवश हैं।

१0.५ बोध प्रश्न

बोध प्रश्न : -

1) 'वापसी' कहानी के माध्यम से गजाधर बाबू का चरित्र - चित्रण कीजिये।
2) 'वापसी' कहानी के माध्यम से मध्यमवर्गीय परिवार की विवशताओं पर प्रकाश डालिए।

<u>एक वाक्य में उत्तर लिखिए</u> : -

1) 'वापसी' कहानी किसकी रचना है

उत्तर - 'वापसी' कहानी उषा प्रियंवदा जी की रचना है।

2) गजाधर बाबू कहाँ नौकरी करते थे

उत्तर - गजाधर बाबू रेलवे में नौकरी करते थे

3) गजाधर बाबू का स्वभाव कैसा था

उत्तर - गजाधर बाबू स्वभाव से बहुत स्नेही व्यक्ति थे और स्नेह के आकांक्षी भी थे।

4) गजाधर बाबू ने रेलवे में कुल कितने साल नौकरी की

उत्तर - गजाधर बाबू ने रेलवे में कुल पैतीस साल नौकरी की।

5) गजाधर बाबू को दोबारा कहाँ नौकरी मिली

उत्तर - गजाधर बाबू को सेठ रामजीमल की चीनी मिल में नौकरी मिली।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -११

कहानी - २

'अकेली' - मन्नू भंडारी

इकाई की रूपरेखा :

११.0 इकाई का उद्देश्य
११.१ लेखक परिचय
११.२ कहानी की कथावस्तु
११.३ निष्कर्ष
११.४ संदर्भ सहित व्याख्या
११.५ बोध प्रश्न

११.0 इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्द कथाकार मन्नू भंडारी का परिचय पढेंगे। कहानी के कथ्य से परिचित हो सकेंगे। कहानी का उद्देश्य समझ सकेंगे। कहानी के संवाद एवं भाषाशैली से परिचित हो सकेंगे।

११.१ लेखक परिचय

आधुनिक हिंदी साहित्य जगत में मन्नू भंडारी आधुनिक कथा लेखिकाओं की पहली पंक्ति की लेखिका है। उनकी रचनाओं में अभिव्यक्त व्यक्ति और युग जीवन का यथार्थ मूल्यांकन है। मन्नू भंडारी हिंदी कहानी के उस दौर की एक महत्वपूर्ण लेखिका है जिसे नई कहानी आंदोलन के नाम से जाना जाता है। उनकी कथा यात्रा हिंदी कथा साहित्य में एक नया मोड़ लेकर सामने आती है। पारिवारिक संबंधों की गहरी होती हुई दरारें, अंतॊव्दंद से उठता हुआ सैलाब, पात्रों की उठती-गिरती मानसिकता मन्नू जी के कथा साहित्य के सबसे महत्वपूर्ण व केंद्रीय बिंदु हैं। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के विकास में नारी जीवन के मूक क्षणों को वाणी देने वाली सुप्रसिद्ध लेखिका मन्नू भंडारी का आधुनिक कहानीकारों में विशिष्ट स्थान है।

कृतियाँ - महाभोज, आपका बंटी, स्वामी, एक इंच मुस्कान, कलवा (उपन्यास), एक पलेट सैलाब, मैं हार गयी, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु, श्रेष्ठ कहानियाँ, आँखों देखा झूठ (कहानी संग्रह), बिना दीवारों के घर (नाटक) । मन्नू भंडारी जी को हिन्दी अकादमी, दिल्ली का शिखर सम्मान, बिहार सरकार, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी,व्यास सम्मान और उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत किया गया है।

मन्नू जी के 'अकेली' कहानी का जैसा शीर्षक है वैसी ही इसकी कथा भी है। सोमा बुआ बूढी परित्यक्ता तथा अकेली स्त्री है। इस कहानी में मन्नू जी ने सोमा बुआ का चरित्र-चित्रण बहुत ही संवेदनापूर्ण ढंग से चित्रित किया है।

११.२ कहानी की कथावस्तु

सोमा बुआ बुढ़िया परित्यक्ता और अकेली है। बुढ़िया सोमा बुआ पिछले बीस वर्षों से अकेली रहती हैं। उनका इकलौता जवान बेटा हरखु समय से पहले ही चल बसा। उनके पति पुत्र वियोग का सदमा सह न सके तथा घर छोड़ कर तीर्थवासी हो गये। सोमा बुआ के सन्यासी पति साल में एक महीना घर आते हैं। बुआ को अपना जीवन पड़ोस वालों के भरोसे ही काटना पड़ता है। दूसरों के घर के सुख-दुख के सभी कार्यक्रमों में वह दम टूटने तक यों काम करती हैं, मानो वह अपने ही घर में काम कर रही हो। जब बुआ के पति घर पर होते हैं तब बुआ का अन्य घरों में सक्रिय बना रहना बंद हो जाता है। तब उनकी जीभ ही सक्रिय हो उठती है। पड़ोसन राधा के समक्ष बुआ मन का गुबार निकालती है राधा के यह पूछने पर कि सन्यासी महाराज क्यों बिगड़ पड़े? बुआ बोल पड़ती है कि उनका औरों के घर आना जाना उनके पति को नहीं सुहाता। पति का स्नेहहीन व्यवहार तथा बुआ के पास पड़ोस से बिन बुलाये निभाए जाने वाले व्यवहारों पर पति द्वारा लगाया जाने वाला अंकुश उन्हें कष्ट देता है। पति से होने वाली कहा सुनी पर बुआ रोने लगती है। वे राधा से कहती हैं कि, 'ये तो हरिद्वार रहते हैं, मुझे तो सबसे निभानी पड़ती है। मेरा अपना हरखू होता और उसके घर काम होता तो क्या मैं बुलावे के भरोसे बैठी रहती। मेरे लिए जैसा हरखू वैसा किशोरीलाल। आज हरखू नहीं है इसी से दूसरे को देख देखकर मन भरमाती रहती हूं।' दरअसल सोमा बुआ अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए सबसे जुड़ना चाहती है इसलिए बिन बुलाये ही सबके घर जाकर काम में जुट जाती हैं। जैसे- "अमरक के बिखरे हुए कल रह-रहकर धूप में चमक जाते हैं ठीक वैसे ही जैसे किसी को भी गली में घुसता देख बुआ का चेहरा चमक उठता है। मन के

बहलने प्रसंगों को वह तलाश थी रहती है। कहीं थोड़ी देर के लिए दिल बहल जाता है तो कहीं फिर से गहरी चोट मिल जाती है।

जिन दिनों उनके पति आये हुए होते है उसी समय सोमा बुआ के दूर के रिश्ते में किसी का ब्याह पड़ जाता है। बुआ की आदत को जानते हुए उनके पति साफ निर्देश देते हैं कि जब तक उनके घर से न्योता न आये सोमा बुआ वहाँ नहीं जाएँगी। उनकी विधवा ननद उनके जख्मों पर नमक छिड़कते हुए झूठ ही कहती है कि निमंत्रण की लिस्ट में बुआ का भी नाम है बुआ न्योते का इंतजार करती है साथ ही मन में न्योते की प्रसन्नता लिए ब्याह में भेंट देने के जुगाड़ में भी लग जाती है वे लोग पैसे वाले हैं साथ ही दूर के रिश्तेदार भी। यूँ तो सामाजिक बंधन बनाना मर्दों का काम है, किन्तु सोमाबुआ मर्द वाली होकर भी बेमर्द की तरह है इसलिए व्याह में भेट देने के लिए अपने मरे हुए बेटे की एकमात्र निशानी 'सोने की अँगूठी' बेचकर पड़ोसन राधा से चांदी की सिंदूरदानी तथा साड़ी- ब्लाउज का इंतजाम करवाती हैं। अपने हाथों में लाल-हरी चूड़ियां पहन कर जाने वाली साड़ी को पीले रंग मांड दे कर बुआ पाँच बजे के मुहूर्त के निमंत्रण का इंतजार करने लगती है। सात बज जाते हैं किन्तु निमंत्रण न आने पर वह दु:खी हो जाती है। इतनी तैयारियों के साथ पल पल निमंत्रण के इंतजार के बाद बुआ को विश्वास ही नहीं होता कि सात कैसे बज सकते है जबकि मुहूर्त पांच बजे का था।" उस दिन सोम बुआ को ब्याह का बुलावा नहीं आया था। ऐसे ही उन्हें किसी के घर से बुलावा नहीं आता फिर भी बुआ बिन बुलाये ही सबके घर चली जाती हैं और खूब काम भी करती हैं।

११.३ निष्कर्ष

इस कहानी में बुआ एक ऐसा चरित्र है जो सामाजिक संबंधों को निरंतर बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील है। आज भी उनके मन में परंपरागत अधिकार को बनाए रखने का मोह है। जिसके लिए वह अपने को गाँव वालों से जोड़ें रखती हैं। कहानी में मन्नू जी ने आधुनिक परिवेश में व्यक्तिवादिता और उपयोगितावादिता को प्रस्तुत किया है। आज पारस्परिक संबंधों में जैसे दरार सी पड़ गई है। विशेषतः दीन और दु:खी लोगों के साथ कोई अपना रिश्ता बनाए रखना नहीं चाहता। व्यक्ति का एकाकीपन आधुनिक समाज का शाप है।

वस्तुतः पति-पत्नी सुख-दुख के सहचर होते हैं पर बुआ की व्यथा यह है कि जिसके साथ वह निज-दु:ख बाँट सके वही उन्हें दुखी कर देता है। बुआ के सन्यासी पति की उपस्थिति में उनकी जीवन गति का निषेध हो जाता है। उनका घूमना, फिरना, मिलना, जुलना बंद हो जाता है अर्थात जिंदगी ठहर कर सन्यासी जी के इर्द-गिर्द केंद्रित हो जाती है। सामाजिकता से कट जाना और पति का संग

साथ भी न मिल पाना दुखी और अकेली सोमा बुआ के लिए बोझिल बन जाता है लेकिन सन्यासी जी को बुआ के दु:ख से कोई सरोकार नहीं है, बल्कि किसी बात पर ताने मार कर वे उन्हें नियंत्रित करने का प्रयत्न भी करते रहते हैं। पति के जाते ही सोमा बुआ की दिनचर्या का यह रुका बांध फूट जाता है और आस पड़ोस के सुख दुख में शामिल होकर अपना जीवन काटने की कोशिश में जुट जाती है। दू:सह पति संग और पुत्र-वियोग दोनों को भुलाने का उपाय भी बुआ के पास अपने श्रम के बल पर समाज में शामिल होने का प्रयत्न में छुपा है। इसलिए बुआ किसी के बुलावे का इंतजार नहीं करती। बिन बुलावे के उनकी उपस्थिति बड़ी मर्मभेदक है। बुलावा ना भेजने पर वे पड़ोस को माफ कर देती हैं और उपाय भी क्या है? यह माफ कर देना एक तरह से स्वयं को दिलासा देना है। इस दिलासे में भी अपना होना भी खोजती चलती हैं। “बेचारे इतने हंगामे में बुलाना भूल गए तो मैं भी मान करके बैठ जाती? मैं तो अपनेपन की बात जानती हूं....आज हरखू नहीं है.... इसी से दूसरों को देख-देखकर मन भरमाती रहती हूं। लाख उपेक्षा के बावजूद यह पास-पड़ोस ही है, जो बुआ के जीने का सहारा है ना कि पति का संग साथ।

पति की दुनिया समानांतर संसार है जिसमें पत्नी की जगह नहीं है परंतु गृहणी धर्म में उनकी जरा भी लापरवाही सन्यासी जी को बर्दाश्त नहीं है। वे वैरागी जरूर है पर खासे दुनियादार भी है समाज को अच्छी तरह समझते तो हैं पर मनुष्य के सुख दुख में शामिल नहीं होना चाहते बल्कि सन्यास लेकर पुत्र शोक से उत्पन्न यथार्थ की समस्याओं से भागते ही हैं। अपने दुख को वे सन्यास में महिमामंडित करके जी रहे हैं और सोमा बुआ का दुख? इसके लिए उनके पास सांत्वना का कोई शब्द नहीं है। इस तरह घर और समाज दोनों तरफ से बुआ के हिस्से में अकेलापन ही आता है।

सोमा बुआ जो अपना बेटा खो चुकी है, अपने पति द्वारा त्याज्य जैसी स्थिति में है। समाज उन्हें बार-बार तिरस्कृत करता है फिर भी बुआ के भीतर गहरे पड़े दुख में भी सांस लेने की इच्छा जीवन का उत्साह, उमंग, इच्छाएं सब दबाव पड़ा है उनमें। वे कुछ देर को अपना दुख भूल कर दूसरों के सुख में प्रसन्न हो जाने की सामर्थ्य रखती है पर सन्यासी जी नहीं।

स्त्रीत्व, मातृत्व और पत्नीत्व से अलग है। बुआ का लाल हरी चूड़ियों के बंद पहनकर शादी में जाने की तैयारी के लिए मन ही मन उत्साहित होना, साड़ी पीले रंग में रंगना, शादी में दिए जाने वाले सामान की तैयारी करना आदि उनके भीतर की स्त्री से परिचित कराता है, जो सारे दुखों, उपेक्षाओं, तिरस्कार के बावजूद स्त्री है और विवाह में शामिल होने की अपनी बेहद सामान्य सी हुलस को रोक नहीं पाती है।

११.४ संदर्भ सहित व्याख्या

"इस स्थिति में बुआ को अपनी जिन्दगी पास पदोस्वलों के भरोसे ही काटनी पड़ती थी. किसी के घर मुंडन हो, छठी हो, जनेऊ हो, शादी हो या गमी, बुआ पहुँच जाती और फिर छाती फाड़कर कम करतीं, मानो वे दूसरे के घर में नहीं, अपने ही घर में काम कर रही हो।"

संदर्भ :-प्रस्तुत अवतरण प्रथम वर्ष हिंदी कला के पाठ्य पुस्तक 'श्रेष्ठ हिंदी कहानियां' में निर्धारित कहानी 'अकेली' से लिया गया है। इसकी लेखिका 'मन्नू भंडारी' जी है। इस कहानी द्वारा लेखिका एक अकेली स्त्री के मनोभाव का चित्रण करती है।

प्रसंग :-प्रस्तुत कहानी में एक स्त्री जो कि अकेली है। वह अपना मन बहलाने के लिए आस पड़ोस में जाकर उन्हें अपना मानकर, उनके साथ रहकर अपना जीवन काटती रहती हैं। लेखिका कहानी द्वारा एक स्त्री के अकेलेपन तथा उसके जीवन जीने की आशा पर प्रकाश डालती है। लेखिका उस स्त्री के मन में उठने वाले भावों को बहुत खूब तरीके से बताती हैं।

व्याख्या :- कहानी में लेखिका सोमा बुआ के माध्यम से एक अकेली स्त्री के चरित्र का चित्रण करती है। कहानी में सोमा बुआ के पति सन्यासी हैं। साल के कई महीने वे बाहर रहते हैं, और एक महीने भर के लिए घर आते हैं। सोमा बुआ के एक ही बेटा था वह भी अब जीवित न रहा। बेटे के साथ पति की अनुपस्थिति में बुआ अपने जीवन में एकदम अकेली हो चुकी थी। अपने इसी अकेलेपन को दूर करना चाहती है। इसलिए आस पड़ोस के घरों में शादी, मुंडन, छठी या फिर जनेऊ जैसे कार्यक्रमों में बिन बुलाये जाकर छाती फाड़कर काम करती है। लोगों को अपना मानकर उनमें घुलने मिलने की कोशिश करती रहती। अपना सारा दुख भूल कर लोगों की खुशी में शामिल हो जाती।

लेखिका ने सोमा बुआ के जीवन में इस अकेलेपन का सहारा आस-पड़ोस को बताया है। अनजान लोगों में भी वह अपने लोगों का आभास करती है। पूरी जिंदगी सोमा बुआ अपने पति की प्रतीक्षा या उनकी राह देखने में गुजारती है। अपने मन को खुश करने के लिए वह सबके यहां बिन बुलाए जाती और यह भी कहती कि, अपनों के यहां से कोई बुलावा थोड़े ही आता है, शायद वे लोग भूल गए होंगे मुझे बुलाना। यह सब कहकर वह अपना मन बहलाती है और खुश रहने की कोशिश करती है। लेखिका अपना सारा जीवन ऐसे ही बिताती है तथा किसी से कोई उम्मीद न रख कर सब को अपना मानती हैं।

विशेष :- इस प्रकार इस कहानी में सोमा बुआ अकेली होने के कारण सबको अपना मान कर जीने वाली सबके दुख-सुख में तत्पर रहने वाली लाचार स्त्री है। उनकी इसी लाचारी के कारण वे अपने पास पड़ोस के लोगों द्वारा छली जाती हैं। वे धन भी लुटाती हैं जीतोड़ मेहनत भी करती हैं फिर भी लोगों से सम्मान नहीं पा पाती।

११.५ बोध प्रश्न

1. 'अकेली' कहानी के माध्यम से सोमाबुआ के अकेलेपन के दुःख का विस्तार से वर्णन कीजिये।

2. कहानी के माध्यम से पुत्र के खो देने के बाद सोमाबुआ और उनके पति की स्थिति का चित्रण कीजिये।

एक वाक्य में उत्तर लिखिए : -

1) 'अकेली' की रचनाकार का नाम लिखिए।

उत्तर :- 'अकेली' मन्नू भंडारी जी की रचना है।

2) सोमाबुआ के पति को किस बात का सदमा लगा था

उत्तर :- सोमाबुआ के पति को पुत्र वियोग का सदमा लगा था।

3) सोमाबुआ को अपनी जिंदगी किसके भरोसे काटनी पड़ती थी

उत्तर :- सोमाबुआ को अपनी जिंदगी पास - पड़ोसिनों के भरोसे काटनी पड़ती थी।

4) सोमाबुआ के पति साल के ग्यारह महीने कहाँ रहते थे

उत्तर :- सोमाबुआ के पति साल के ग्यारह महीने हरिद्वार में रहते थे।

5) सोमाबुआ के पास पुत्र की एकमात्र निशानी क्या थी

उत्तर :- सोमाबुआ के पास मृत पुत्र की एकमात्र निशानी अंगूठी थी।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१२

कहानी - ३

'सिक्का बदल गया' - कृष्णा सोबती

इकाई की रूपरेखा :

१२.0 इकाई का उद्देश्य
१२.१ लेखक परिचय
१२.२ कहानी की कथावस्तु
१२.३ निष्कर्ष
१२.४ संदर्भ सहित स्पष्टिकरण
१२.५ बोध प्रश्न

१२.0 इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्ध कथाकार कृष्णा सोबती का परिचय पढेंगे। कहानी के कथ्य से परिचित हो सकेंगे। कहानी का उद्देश्य समझ सकेंगे। कहानी के संवाद एवं भाषाशैली से परिचित हो सकेंगे।

१२.१ लेखक परिचय

भारतीय साहित्य के परिदृश्य पर कृष्णा सोबती अपने संयमित अभिव्यक्ति और सुथरी रचनात्मकता के लिए मशहूर हैं। कविता में गद्‌य के क्षेत्र में पदार्पण करने वाली हिंदी की प्रख्यात कथाकार कृष्णा सोबती का लेखन आज भी काव्य की कोमलता एवं माधुर्य से ओतप्रोत है। हिंदी कथा साहित्य को नए रचनात्मक आयाम देती भाषा शैली उनके पास है। नारी के अंतर्मन को पहचानने की कला में निपुण हैं। उनकी कहानियाँ कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से उनके रचनात्मक वैविध्य को रेखांकित करती हैं। आज के बदलते परिवेश में भी इनकी कहानियों की प्रासंगिकता बनी हुई है।

कृतियाँ - डार से बिछुड़ी, मित्रों मरजानी, यारों के यार, तीन पहाड़, बादलों के घेरे, सूरजमुखी अँधेरे के, जिंदगीनामा, ए लड़की, दिलोदानिश, हम हशमत (भाग

१ - २)। साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता समेत कई राष्ट्रीय पुरस्कारों से सुशोभित कृष्णा सोबती ने पाठकों को निज के प्रति सचेत और समाज के प्रति चैतन्य किया है। उन्हें हिन्दी अकादमी दिल्ली की ओर से शलाका सम्मान से सम्मानित किया गया है। इसी वर्ष उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ सम्मान से नवाजा गया है।

देश विभाजन से संबंधित कृष्णा सोबती की कहानियों में सबसे चर्चित एवं प्रसिद्ध कहानी है- "सिक्का बदल गया" इसका प्रकाशन 'प्रतीक' में 1948 में हुआ था। अज्ञेय जी इस पत्रिका के संपादक थे। इसमें विभाजन से उत्पन्न दारुण परिस्थितियों के मार्मिक चित्रण के साथ मानवीय संबंधों और मूल्यों में आए विघटन का भी काफी वर्णन हुआ है।

१२.२ कहानी की कथावस्तु

'सिक्का बदल गया' एक विधवा नारी की पराधीनता तथा विवशता एवं शोषित वर्ग के बदलते सामाजिक मानदंडों का सफल चित्रण है। प्रस्तुत कहानी देश विभाजन की पृष्ठभूमि में लिखी गई है। सत्ता परिवर्तन मानव को नहीं देखता, देखता है तो केवल सिक्के को।

इस कहानी के मुख्य पात्र 'शाहनी' है जिसके पति शाहजी का देहांत हो चुका है। शाहनी रोज पौ फटने पर चनाब में नहाने जाया करती थी। एक दिन अचानक उसके मन में एक भय छाने लगा। 'जम्मीवाला' कुआं, मीलों फैले उनके खेत सब पर उसकी दृष्टि पड़ती है। मन अस्वस्थ होने के कारण हवेली जाने के पहले वह शेरा के घर जाती है। शेरा जो पहले शाहजी का सेवक था। उसकी मां की मृत्यु के पश्चात शाहनी के यही पलकर बड़ा हुआ था। उस समय शेरा साहनी की ऊंची हवेली की अंधेरी कोठरी में रखी सोने-चांदी की संदूकचीयाँ उठाने की सोच में था। इसलिए स्नेह का पर्दा डालकर वह शाहनी से कुशल पूछता है। शाहनी उसके सम्मुख यह शंका रखती है कि पिछली रात कुल्लूवाल के लोग यहां आए होंगे। यदि शाहजी जीवित रहते तो ऐसा ना होता। तब शेरा के मन में यह विचार आता है कि आज शाहजी नहीं है अतः कोई कुछ नहीं कर सकता। पहले गांव के पीड़ित असामियों से सूद वसूल करके शाहजी ने सोने की बोरियां भरी थी। आज वही लोग इसका बदला ले रहे हैं। शेरा शाहनी को घर तक छोड़ने आता है। शाहनी के साथ चलने पर भी उसका मन इधर उधर भटकता है कि कहीं कोई देख तो नहीं रहा है। शाहनी की बड़ी हवेली को लूटने के लिए बाहर पूरा गांव खड़ा है। बीती रात ही इस बड़ी हवेली को लूट लेने की बात तय हुई थी। शाहनी सबकुछ जानती थी। उसने उन लोगों को बात करते सुना। किन्तु सबकुछ जानकर भी वो अंजान बनी हुई थी, क्योंकि आज वो बात नहीं रही अब

सिक्का बदल गया है। रसूली के सूचित करने पर कि ट्रकें आ गयी हैं और अब उसे उनकी योजनानुसार इस हवेली को छोड़ कर चले जाना है। शाहनी किसी को बुरा भला न कहकर किसी पर दोषारोपण न कर हवेली से बाहर निकलती है। थानेदार दाऊद खां उसके पास आकर कहता है हवेली छोड़ने से पहले यदि वो अपने साथ कुछ साथ लेना चाहे तो ले सकती है किन्तु शाहनी अपनी ही सम्पत्ति में से सोना-चांदी पैसा कुछ भी ले कर चलने से इंकार कर देती है वहां खड़े सारे लोग जो कभी उसके इशारे पर नाचते थे जिन्हें कभी उसने अपने नातेदारों से कम नहीं समझा, आज उनमे से कोई उसका अपना नहीं है आज उन गाँव वालों के भीड़ के बीच भी वो अकेली हैं बिलकुल अकेली। बेगू पटवारी और मुल्ला इस्माल जैसे लोग शाहनी के पास खड़े हो कर भी उससे नजरे नहीं मिला पा पाते। शेरा आकर कहता है कि बहुत देर हो रही है। यह सुनकर शाहनी चौक पड़ती उसका मन आहात हो उठता है किसी समय वह इस हवेली की रानी थी, मालकिन थी। आज उसे अपने ही घर में देर हो रही है। आँखों के आँसू पोछ कर वह शान से उस हवेली की ड्योढ़ी पार कर लेती है। भीगी पलकों से हवेली की कुलवधू आज उसके अंतिम दर्शन कर प्रणाम करती है शाहनी ट्रक की ओर चल देती है उसका बडा सा भवन पीछे छूट जाता है। सत्ता पलट जाने पर जो लोग बूढी साहनी को अपने पास रख न सके उन सभी को जाते समय भर्राये हुए गले से शाहनी आशीर्वाद भी देती है कि ईश्वर उनका भला करें,उन्हें सलामत रखें। ट्रक में बैठने पर शेरा शाहनी के पांव छूते हुए कहता है कि वह कुछ नहीं कर सकता, क्योंकि राज पलट गया है,सिक्का बदल गया है। शाहनी के लिए सिक्का नहीं बदलेगा क्योंकि वह उसे गांव में ही छोड़कर जा रही है। रात को कैंप में पहुंचकर भी उसके मन में यह प्रश्न उठता रहा कि सिक्का क्या बदलेगा? वो खुद सबकुछ छोड़ कर आयी है

इस प्रकार पीड़ित वर्ग के साथ-साथ अकेली,असहाय बूढी धनाढ्य नारी की शोचनीय दशा का चित्र कृष्णा सोबती जी ने इस कहानी में खींचा है। प्रस्तुत कहानी में शोषक और शोषित वर्ग के बीच के संघर्ष का चित्रण है। शाहों के घर में नौकरी करने वाले असामी आज शोषक वर्ग के विरुद्ध इकट्ठा हो गए हैं। जमाना बदल गया है, सिक्का बदल गया है। इस प्रकार कृष्णा सोबती जी ने विभाजन के कटु सत्य को उचित तथ्यों के साथ कहानी में प्रस्तुत किया है।

१२.३ निष्कर्ष

हम कह सकते हैं- प्रस्तुत कहानी में एक विधवा नारी की पराधीनता का मनोवैज्ञानिक चित्रण हुआ है। मालिक के जीवित रहते उसका सलाम करनेवाले उसकी मृत्यु पर मालकिन को लूटने का मार्ग ही सोचते हैं। स्वार्थी व्यक्ति मन से सच्चा नहीं हो सकता।

शाहनी समझ गयी है कि सिक्का बदल गया है। शाहजी भी नहीं है कोई उसके लिए सोचने वाला नहीं है वह किसी भी बात का विरोध नही करती और चुप चाप हवेली की ड्योढ़ी पर कर ट्रक में बैठ जाती है। घर से निकाले जाने पर भी शाहनी उन सब को खुले दिल से आशीर्वाद भी देती है। यहां शाहनी की ऊंची मनोवृत्ति का सबल चित्रण कृष्णा जी ने किया है- शाहनी ने उठती हुई हिचकी को रोककर रुँधे-रुँधे गले से कहा, 'रब तुम्हें सलामत रखे बच्चा, खुशिया बक्शे....।शाहजी की मृत्यु के बाद शाहनी अकेली रह गई। उस घर के नौकर शेरे पिछले दिनों कई कत्ल कर चुका था। शेरे के साथियों ने शाहनी को मार डालने का सुझाव दिया था ताकि उसके बाद हवेली का सारा माल बराबर - बराबर बाँट लिया जाए इस स्थिति से अंजान शाहनी आज भी शेरे पर विश्वास करती है,उसकी सलामती की दुआ मांगती है। आज शाहनी क्या, कोई भी कुछ नहीं कर सकता। यह हो कर रहेगा- क्यों ना हो? हमारे ही भाई-बंधु से सूद लेकर शाहजी सोने की बोरियां तोला करते थे। प्रति हिंसा की आग शेरे की आंखों में उतर आई। शाहों से पीड़ित असामियों का पुन:जागरण ही शोषक-शोषित संघर्ष का आधार है।

१२.४ संदर्भ सहित स्पष्टिकरण

"इसी दिन के लिए छोड़ गये थे शाहजी उसे? बेजान सी शाहनी की ओर देख कर बेगू सोच रहा है - "क्या गुजर रही है शाहनी पर. मगर क्या हो सकता है.सिक्का बदल गया।"

सन्दर्भ :- प्रस्तुत अवतरण प्रथम वर्ष हिंदी कला के पाठ्यपुस्तक 'श्रेष्ठ हिंदी कहानियां' में निर्धारित कहानी 'सिक्का बदल गया' से लिया गया है इस कहानी की लेखिका 'कृष्णा सोबती' जी हैं। कहानी में लेखिका ने बदलते वक्त की त्रासदी का चित्रण किया है। वक्त बदलने के साथ-साथ लोगों की सोच में भी परिवर्तन आ जाता है।

प्रसंग :- प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने शाहनी पर होने वाले अत्याचार पर प्रकाश डाला है। वह बताती हैं कि कैसे शाहनी चाहकर भी अपने ही घर में नहीं रह पा रही है। पति के गुजर जाने के बाद उसे उसके ही घर से निकाला जा रहा है। लेखिका यह समझाती है कि वक्त बदलने से लोगों में भी परिवर्तन आ जाता है। शाहनी की उम्र हो जाने पर उसे मारने की भी बात लोग सोचने लगते हैं ताकि उसकी सारी जमीन जायदाद हड़पी जा सके।

व्याख्या :- इस कहानी में लेखिका ने शाहनी के जीवन का वर्णन किया है। शाहजी के गुजर जाने के बाद शाहनी बहुत अकेली हो जाती है। धीरे-धीरे उसकी उम्र भी होती जाती है। उम्र के एसाख्री पड़ाव में भी वह पहले की भांति अपनी

दिनचर्या निभाती है। अपने अकेलेपन में वह पहले की बातों को याद करती है और मन ही मन यह सोचती भी है कि आज इस असहाय स्थिति में उसका पति उसके साथ नहीं है उसके पति के गुजर जाने के एक लम्बे समय के बाद शाहनी अपनी ही हवेली छोडनी पड़ती है। वक्त के बदल जाने के साथ लोगों की मानसिकता भी बदल जाती है। शेरा जिसने उसे अपने बच्चे की तरह पाला वो भी शाहनी के पीछे अपना फायदा देखता है।

एसी लाचार स्थिति में शाहनी सोचती है कि क्या इसी दिन के लिए शाहजी उसे छोड़ गए थे। बेगू भी बेजान सी शाहनी की इस विवशता पर तरस खाता है, लेकिन कोइ कुछ नहीं कर सकता क्योंकि अब राज पलट गया है,सिक्का बदल गया है।

विशेष :- इस कहानी के माध्यम से लेखिका समय के बदल जाने पर लोगों में होने वाले परिवर्तन का वर्णन करती है। वक्त के बदल जाने पर लोग भी कैसे बदल जाते हैं, इसका उदाहरण जिवंत उदहारण इन चरित्रों के माध्यम से उकेरती हैं। लोगो की स्वार्थपरक नीति का उल्लेख कर उनकी हृदय हीनता को दर्शाने का प्रयास करती हैं।

१२.५ बोध प्रश्न

1) 'सिक्का बदल गया' कहानी के सन्देश को अपने शब्दों में लिखिए।
2) 'सिक्का बदल गया' कहानी की कथावस्तु को अपने शब्दों में लिखिए।

एक वाक्य में उत्तर लिखिए :-

1) 'सिक्का बदल गया' की मुख्य स्त्री पात्र का नाम लिखिए।
उत्तर :- 'सिक्का बदल गया' की मुख्य पात्र शाहनी है।
2) शेरा का पालन पोषण किसने किया
उत्तर :- शेरा का पालन - पोषण शाहनी ने किया।
3) हसैना कौन है
उत्तर :- हसैना शेरा की पत्नी हैं।
4) शेरा कितने क़त्ल कर चुका था
उत्तर :- शेरा तीस - चालीस क़त्ल कर चुका था।
5) दाऊद खान कौन था?
उत्तर :- दाऊद खान थानेदार था?

❖❖❖❖

इकाई -१३

कहानी - ४

गदल - रांगेय राघव

इकाई की रूपरेखा :

१३.0 इकाई का उद्देश्य
१३.१ लेखक परिचय
१३.२ कथावस्तु
१३.३ निष्कर्ष
१३.४ संदर्भ सहित स्पष्टिकरण
१३.५ बोध प्रश्न

१३.0 इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्द कथाकार रांगेय राघव का परिचय पढ़ेंगे कहानी के कथ्य से परिचित हो सकेंगे कहानी का उद्देश्य समझ सकेंगे कहानी के संवाद एवं भाषाशैली से परिचित हो सकेंगे।

१३.१ लेखक परिचय

डॉ रांगेय राघव आधुनिक हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। उन्होंने विविध विधाओं के माध्यम से हिन्दी में सृजन कार्य किया है। डॉ रांगेय राघव का वंश दक्षिण भारतीय अहिन्दी भाषी है। फिर भी हिन्दी के प्रति उनका विशेष लगाव है। उनका सर्जन मात्रात्मक एवं गुणात्मक दृष्टि से अपना महत्व रखता है। हिंदी साहित्य में उनका असाधारण योगदान है - कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, रिपोर्ताज के अतिरिक्त आलोचना सभ्यता और संस्कृति पर शोध व व्याख्या के क्षेत्रों को उन्होंने १५० से भी अधिक पुस्तकों से समृद्ध किया है। अपनी अद्भुत प्रतिभा, असाधारण ज्ञान और लेखन क्षमता के राघव जी सर्वमान्य लेखक हैं। डॉ. रांगेय राघव जी 'हिन्दुस्तानी अकादमी पुरस्कार, डालमिया परसकर, उत्तर प्रदेश सरकार पुरस्कार,राजस्थान साहित्य अकादमी

पुरस्कार तथा महात्मा गाँधी पुरस्कार से सम्मानित हैं। ड़ॉ रांगेय राघव की कहानियों में उत्तरप्रदेश तथा राजस्थान और दक्षिण भारत के तमिलनाडु के समाज का अंकन है। डॉ रांगेय राघव ने समाज में स्थित धर्म तथा धर्म से सम्बंधित गतिविधियों को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। भारतीय समाज रूढ़ि परम्परावादी समाज है। रुढ़ी परम्पराएं ग्रामीण जीवन की अभिन्न अंग होती हैं। ग्रामवासी पूरी निष्ठा से उसका पालन करते है। ग्रामीण अंचलों में इनका विशेष महत्व है। रांगेय राघव जी ने अपनी रचनाओं में ग्रामजीवन के साथ उनकी रूढ़ि परंपरा को भी दर्शाया है। गदल कहानी में रूढ़ि परंपरा के रूप में मृत्यु भोज कारज का करुण चित्रण रांगेय राघव जी ने किया है।

१३.२ कहानी की कथावस्तु

गदल कहानी में ग्राम जीवन का चित्रण है। गदल अपने पति गुन्ना की मृत्यु के बाद खारी गुजर जाति की होते हुए भी अपने से कम उम्र के लौहारे गुजर मौनी से व्याह करके उस के घर जा बैठती है। इससे खारी गुजर जाति मे कोलाहल मच जाता है। बेटों - बहुओं वाली गदल के इस कार्य से उसके परिवार वालों की बड़ी बदनामी होती है।

जिस दिन गदल मौनी के घर जा बैठी उसी दिन संध्या समय उसके बेटे निहाल और नारायण मिलकर उसे जबरदस्ती पकड़कर घर ले आते हैं। उस समय डोडी निहाल और परिवार के बहुओं के बीच कहा सुनी होती है। अगली सुबह गदल पुनः अपने नये पति मौनी के घर चली जाती है।

'गदल' गूजरों में यह रूढ़ि परम्परा रही है की यदि बड़े भाई की मृत्यु होती है तो उसकी पत्नी के साथ उसका पुनः विवाह रचाया जा सकता है। देवर - भाभी के बीच इस प्रकार की स्थिति में किया गया ब्याह समाज सम्मत है। गदल के पति गुन्ना की मृत्यु के बाद उसका देवर डोडी उससे पुनर्विवाह कर अपने घर में रख सकता था। किन्तु लोकलाज के कारण डोडी ने गदल को पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं किया। डोडी की पत्नी बहुत पहले ही गुजर चुकी थी उसके बच्चे भी नहीं रहे। भाई गुन्ना की मृत्यु के बाद डोडी ने ही उसके तीनों बेटों व बेटियों को पाला था। बेटे - बेटियों की शादियाँ हो चुकि थीं उनके बच्चे हो चुके थे इतने बड़े परिवार को छोड़ कर गदल लौहारे मौनी से ब्याह करके उसके घर जा बैठी थी।

दरअसल गदल स्वाभिमानी स्त्री थी। वह पति के रूप में डोडी के लिए चूल्हे - चौके का काम करने के लिए तैयार थी लेकिन जीवन भर अपने अनुसार चलने वाली गदल को इस उम्र में बहुओं की टहल बजाना उनके हिसाब से चलना स्वीकार न था। गदल चाहती थी कि डोडी उससे ब्याह कर ले। डोडी उसका देवर

है। वह बेहद सज्जन पुरुष है भाई के परिवार को उसने अपना ही परिवार माना। वह जो कुछ कमाता अपनी भाभी गदल को ही ला कर देता किन्तु भाई गुन्ना की मृत्यु के पश्चात् अपनी भाभी गदल को पत्नी के रूप में स्वीकार करना डोडी को उचित न लगा। गदल जानती थी कि डोडी उसे मन ही मन चाहता है उसके परिवार को अपना मानता है लेकिन फिर भी भाभी से शादी कर उसे पत्नी के रूप में स्वीकार करने कि हिम्मत न थी। गदल इसी कारण उससे नाराज थी उससे ब्याह न करने पर उससे बदला लेना चाहती थी इसलिए उसने डोडी को छोड़ कर अपने से कम उम्र के गुजर नामक आदमी से ब्याह करके उसके घर चली गयी थी। उसी के कहने पर निहाल और नारायण गदल को जबरजस्ती घर ले आते हैं उस रात गदल और डोडी के बीच कहा सुनी होती है अगली सुबह गदल अपने नए पति के घर लौट जाती है। गदल का यूँ चले जाना और उसके कारण जातिबंधुओं के बीच उसके व उसके परिवार का अपमानित होना डोडी बर्दाश नहीं कर पाता वह किसी से कुछ कह भी नहीं पाता। उसका शरीर बुखार से तपने लगता है उसी रात डोडी की मृत्यु हो जाती है। डोडी के मृत्यु की खबर पा कर गदल अपने पति से विरोध कर अपने घर लौट आती है।

गदल अपने देवर डोडी का मृत्युभोज बड़े पैमाने पर करना चाहती है। राज्य और कानून का विधान था कि किसी भी विशिष्ट समारोह में केवल पच्चीस आदमियों को भोजन के लिये बुलाया जाये। किन्तु गदल अपने पति गुन्ना के मृत्यु भोज में अधिक लोगों को बुला ना सकी इस बात का उसे खेद है। अतः वह अपने देवर डोडी का मृत्युभोज बड़े पैमाने पर करना चाहती है। इस कार्य के लिए गदल ने दरोगा को रिश्वत भी दी। गिर्राज ने गदल की सारी बाते मौनी को जाकर बता दी कि डोडी के मृत्युभोज में गदल बड़ा इंतजाम कर रही है। लोग कहते है उसे अपने मरद का इतना गम नहीं हुआ था जितना अब लगता है। इस खबर से मौनी का मन प्रतिशोध से भर गया और उसने कारज में व्यवधान डालने के लिए बड़े दरोगा के पास शिकायत की। फलस्वरूप जब कारज चल रहा था तभी रिश्वत खाये दरोगा के सिपाही पहुँच कर दावत बंद करने का आदेश देते है। इतना ही नहीं तो वे बताते हैं कि बड़े दरोगा आ गये है। किन्तु गदल आये हुये अतिथियों को सौगन्ध खिलाकर भोजन करने का आग्रह करती है। अन्ततः गोलियाँ चलती है गदल बेटे - बहुओं व गाँव वालों को पीछे के रास्ते से निकाल कर अकेले ही बंदूक सम्हाल लेती है दोनों ओर से गोली बारी होती है अन्ततः गदल के पेट में गोली लग जाती है। पुलिस उसके घर की तलाशी लेती है घर में गदल के अलावा पुलिस को कोई नहीं मिलता। उसे अकेली पा कर पुलिस पूछती है कि तू कौन है गदल जवाब में कहती है कि “जो मेरे बिन एक दिन भी न रह सका उसी की...।” उसी समय गदल की भी मृत्यु हो जाती है। मरते समय गदल को इस बात का संतोष था कि डोडी के मरणोपरान्त का काज उसकी इच्छानुसार सकुशल सम्पन्न हुआ। इस घटना के साथ कहानी समाप्त हो जाती है।

१३.३ निष्कर्ष

रांगेय राघव की यह कहानी गदल एक ऐसे स्त्री की कहानी है जो अपनी संस्कारगत सीमाओं में रहकर अपना विद्रोह प्रकट करती है। गदल कहानी में गदल का डोडी के प्रति अदृश्य और काफी कुछ मूक लगाव है। गदल और गुन्ना के सगाई के समय से ही गदल डोडी की ओर आकर्षित हुयी थी । गूजर समुदाय की यह गदल अपने पति की मृत्यु होने पर अपना भरा पूरा परिवार छोड़कर दूसरे परिवार में शादी का निर्णय लेती है क्यूंकि पति की अनुपस्थिति में वह बहुओं के सामने अपना कद छोटा होते नहीं देखना चाहती। पर अपने आत्मसम्मान की रक्षा के साथ अपने देवर से ब्याह न करने पर उससे बदला लेना चाहती है। इसलिए मौनी से शादी कर लेती है। देवर पर गदल की मनोवैज्ञानिक चोट उसके लिए प्राणघातक सिद्ध होती है। इसके बाद गदल का उठाया गया कदम कहानी और गदल के चरित्र को एक दूसरे ही स्तर तक उठा ले जाता है।

गदल की चारित्रिक संरचना बेहद पारदर्शी है। जो भीतर है वही एक ईमानदार अभिव्यक्ति के साथ बाहर भी है। दुराव-छिपाव और छल से गदल कोसों दूर है। गदल में डोडी के प्रति विशेष प्रेमभाव है। डोडी भी गदल से प्रेम करता है। 30 वर्षों तक एक ही घर में वे रहते हैं। फिर भी वह दोनों अपने दायित्व और नैतिक मर्यादाओं से बंधे हुए रहते हैं। परंतु गुन्ना की मृत्यु के बाद गदल के मन का सुप्त प्रेमभाव उभरकर आ जाता है। उम्र, मर्यादा और दायित्व व समग्र परिस्थितियां उसकी इच्छा को दबा नहीं पाते।

एक ही स्थिति को लेकर दोनों की प्रतिक्रियाएं अलग-अलग हैं। डोडी सज्जन और कमजोर है, लोग क्या कहेंगे उसे इस बात की चिंता है। परंतु गदल डोडी के इन विचारों प्रति विद्रोह कर लुहारे मौनी के घर पर जाकर बैठती है। परिणामस्वरुप डोडी की मृत्यु होती है। गदल निडर औरत है। वह वही करती है जो उसे ठीक लगता है इसलिए वो अपने नये पति को छोड़ कर अपने घर चली आती है औरत होते हुए भी अपने बल पर देवर का कार्य सम्पन्न करवाती है इसी कोशिश में सशस्त्र पुलिस बल से मोर्चा लेते हुए मर जाती है, किंतु मरते समय भी उसे इस बात का आत्मसंतोष रहता है कि उसने परंपरानुसार अपने देवर का मरणोपरांत कार्य सम्पन्न किया। कहानी के प्रारंभ में वह जितनी मुखर,ढीठ और निडर है कहानी के अंतिम में उसका बलिदान पाठकों के मन पर अमिट छाप छोड़ जाता है।

१३.४ संदर्भ सहित स्पष्टिकरण

"देवर तो मेरा अगले जन्म में भी रहेगा। उसी ने मुझसे रुखाई दिखायी नहीं तो क्या ये पाँव कटे बिना उस देहली से बाहर निकल सकते थे? उसने मुझसे मन फेरा,मैंने उससे. ऐसा बदला लिया उससे।"

संदर्भ :- प्रस्तुत अवतरण प्रथम वर्ष हिंदी कला के पाठ्यपुस्तक 'श्रेष्ठ हिंदी कहानियां' में निर्धारित कहानी 'गदल' से लिया गया है। इसके लेखक 'रांगेय राघव' जी हैं। इस कहानी में उन्होंने एक महत्वाकांक्षी और निडर महिला का वर्णन किया है, जो अपने बल पर अपना लक्ष्य सिद्ध करती है।

प्रसंग :- प्रस्तुत कहानी में लेखक यह बताना चाहते हैं कि एक कठोर हृदय वाली महिला अपने चरित्र पर कोई भी दाग नहीं लगने देती। उसे किसी का भय नहीं होता, न समाज का और ना ही घर के किसी भी रिश्तेदारों का। महिला के पति न होने पर उसे अपने घर में अपने देवर से बहुत सारी उम्मीदें रहती है, परंतु वह सब उसे नहीं मिल पाता। लेखक ने इस कहानी में एक स्त्री के मन की व्यथा को दर्शाया है।

व्याख्या :- लेखक के कहानी के माध्यम से गदल और डोडी के व्यक्तिगत जीवन पर प्रकाश डाला है। लेखक बताते हैं कि, घर में गदल के पति के गुजर जाने पर गदल पर सारे गृहस्थी का भार आ जाता है। उसका देवर डोडी जो कि उसके पति का सगा भाई था, वो घर को संभालने की जिम्मा उठाता है। गदल उससे शादी के प्रस्ताव की बात करती है, तो डोडी उसे अस्वीकार करता है। गदल उससे बदला लेने के लिए अपने ही गांव के विधुर युवक मौनी से शादी कर लेती है। डोडी उसका दूर जाना सह नहीं पाता और उसकी मृत्यु हो जाती है। यह खबर गदल को पता चलती है, तो वह उसे देखने के लिए जाना चाहती है, परंतु उसका पति मौनी उसे मना कर देता है। तब गदल झनझनाती हुई कहती है, कि देवर तो मेरा वो अगले जन्म में भी रहेगा। उसी ने गदल से रुखाई दिखाई, तभी वह डोडी से बदला लेने के लिए उसने मौनी से शादी की।

डोडी के शादी न करने का फैसला सुनकर गदल उससे मुंह फेर लेती है। गदल उससे मन फेरने का बदला लेना चाहती है। बदले की भावना को लेकर ही वह उसकी देहलीज से बाहर आने का फैसला करती है। उसे समाज की बातें और घरवालों के सोचने का कोई प्रभाव ना पड़ता।

munotes.in

विशेष :- गदल कहानी के माध्यम से ग्रामीण महिला के रूप में एक निडर,साहसी व महत्वाकांक्षी महिला के चरित्र को उभारने का प्रयास किया गया है, उसके सच्चे प्यार व बलिदान का भी वर्णन किया है।

१३.५ बोध प्रश्न

1) कहानी के माध्यम से गदल का चरित्र - चित्रण कीजिये।

2) गदल ने डोडी से किस बात का बदला लिया - विस्तार से लिखिए।

एक वाक्य में उत्तर लिखिए :-

1) 'गदल' कहानी में गदल किसका नाम है

उत्तर :- कहानी में गदल मुख्य स्त्री पात्र का नाम है।

2) डोडी कौन था

उत्तर :- डोडी गदल का देवर था।

3) डोडी किसका जाना न सह सका

उत्तर :- डोडी गदल का जाना न सह सका।

4) गदल के नये पति का नाम लिखिए।

उत्तर :- गदल का नया पति मौनी है।

5) गदल किससे शादी करना चाहती थी

उत्तर :- गदल डोडी से शादी करना चाहती थी।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१४

कहानी - ५

'घुसपैठिये' - ओमप्रकाश वाल्मीकी

इकाई की रूपरेखा :

१४.0 इकाई का उद्देश्य
१४.१ लेखक परिचय
१४.२ कथावस्तु
१४.३ निष्कर्ष
१४.४ संदर्भ सहित स्पष्टिकरण
१४.५ बोध प्रश्न

१४.0 इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्ध कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि का परिचय पढेंगे। कहानी के कथ्य से परिचित हो सकेंगे। कहानी का उद्देश्य समझ सकेंगे। कहानी के संवाद एवं भाषाशैली से परिचित हो सकेंगे।

१४.१ लेखक परिचय

ओमप्रकाश वाल्मीकि वर्तमान दलित साहित्य के प्रतिनिधि रचनाकारों में से एक हैं। हिंदी में दलित साहित्य के विकास में ओमप्रकाश की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने डॉ. भीमराव अंबेडकर की रचनाओं का अध्ययन किया, जिससे उन्हें दलित साहित्य के अध्ययन में काफी प्रेरणा मिली। वाल्मीकि जी की मान्यता है कि दलितों द्वारा लिखा गया साहित्य ही दलित साहित्य है। उनका मानना है कि दलित की पीड़ा दलित ही बेहतर समझ सकता है और वही उसके अनुभव को सत्य रूप में अभिव्यक्त कर सकता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने 80 के दशक में लिखना प्रारंभ किया। उन्होंने हर विधा में अपनी लेखनी चलाई - कविता संग्रह, आत्मकथा, आलोचना साहित्य, दलित

साहित्य, नाटक और कहानी संग्रह आदि। उनके कहानी संग्रहों में सलाम, अम्मा एंड अदर स्टोरीज, छतरी और घुसपैठिए आदि।

घुसपैठिए एक ऐसी कहानी है जो मेडिकल कॉलेज के दलित छात्रों पर लिखी गई है। वाल्मीकि जी ने इस कहानी द्वारा समाज में फैली जाति व्यवस्था को प्रकाश में लाने का प्रयास किया है। मेडिकल कॉलेज के एक-एक दलित छात्र कैसे बली की वेदी पर चढ़ता है?क्या दलित डॉक्टर या इंजीनियर नहीं बन सकते? उनके दलित होने के कारण उन्हें आरक्षण मिलता है, तो इसमें उनका क्या दोष? कहानी में इन्ही सवालों को उठाने का प्रयास हुआ है।

१४.२ कहानी की कथावस्तु

ओमप्रकाश वाल्मीकि की यह कहानी मेडिकल कॉलेज में अध्ययन कर रहे दलित छात्रों की कहानी है। घुसपैठिए कहानी का परिवेश मेडिकल कॉलेज है। जहाँ दलित छात्र सवर्ण छात्रों की दृष्टि में एक अपराधी समझे जाते हैं। उन्हें आरक्षण द्वारा कॉलेज में प्रवेश मिला है यही उनकी सबसे बड़ी गलती है। दलित छात्रों को अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने की मनाही है। पूरा माहौल शहरी है जहां सब सुशिक्षित है। सब ऊंचे-ऊंचे पदों पर आसीन हैं। कोई दलित व्यक्ति अफसर तो कोई अधिकारी है लेकिन किसी में इतनी हिम्मत नहीं है कि अन्याय के विरोध में खड़ा हो या उसके खिलाफ कोई कार्यवाही करें। कोई इतना साहस नहीं जुटा पाता कि इन दलित छात्रों की पुकार सुन ले। सारे अफसर और अधिकारी अपनी-अपनी कुर्सी संभालते नजर आ रहे हैं।

munotes.in

पूरा वातावरण इसी तानाकशी से भरा है। समस्त विभाग वालों को ऐसा लगता है कि दलित छात्र घुसपैठी हैं। आरक्षण के चलते ही उन्हें प्रवेश मिला है।

इस कॉलेज में अमरदीप, विकास चौधरी और नितिन मेश्राम तथा सुभाष सोनकर जैसे दलित छात्र ने डॉक्टर बनने के लिए प्रवेश लिया है। वे अपने मां-बाप के सपनों को पूरा करने के जद्दोजहद में लगे हुए हैं। कॉलेज में सवर्ण छात्र दलित छात्रों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं, जिससे दलित छात्र बिल्कुल परेशान हो गए हैं। इतना ही नहीं शहर से कॉलेज जाने वाली बसों में उन्हें चमरटे जैसे अभ्रद्र शब्दों से बुलाकर बस की सबसे पीछे सीट पर ले जाकर लात-घूंसे से पीटा जाता है। यहां तक कि उन्हें हॉस्पिटल में भी अलग रखा जाता है। यही हाल गर्ल्स हॉस्टल का भी है। वहां की सभी दलित लड़कियां एक ही साथ रहती हैं। यदि छात्र हॉस्पिटल गार्डन से इसकी शिकायत करें तो उल्टी उन्हें ही चेतावनी दी जाती है कि अपनी औकात में रहें वरना हॉस्टल से निकाल दिए जाएंगे।

कहानी में एक किरदार राकेश है जो एक अफसर है, वह भी दलित जाति का है। कहानी का प्रमुख पात्र रमेश चौधरी है। वह एक सामाजिक कार्यकर्ता है, जो बिल्कुल बेबाक और गलत का विरोध करने में तत्पर है जबकि राकेश बिल्कुल शांत प्रवृत्ति का है। राकेश दलित वर्ग पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ बोलना तो चाहता है, लेकिन अपनी पत्नी के डर से चुप्पी साध लेता है। उसे यही सही लगता है। रमेश चौधरी अक्सर किसी-न-किसी बहाने राकेश से मिलता है। उसके आने से राकेश बिल्कुल अव्यवस्थित हो जाता है। वह जितना उससे पीछा छुड़ाना चाहता है उतना ही वह किसी-न-किसी बहाने आ ही जाता है।

रमेश, राकेश के इस व्यवहार से वह एक बार कुछ ऐसा कहता है - "तुम लोग अपने आप को समझते क्या हो? तुम लोगों को सिर्फ बड़े-बड़े प्रमोशन चाहिए, वह भी आरक्षण के भरोसे। बच्चों को स्कूल, कॉलेज में एडमिशन भी कोटे से ही चाहिए। लेकिन इस कोटे को बचाए रखने की नौबत आती है तो तुम लोगों को जरूरी काम निकल आते हैं या फिर दफ्तर से छुट्टी नहीं मिलती तब रमेश चौधरी ही बनेगा बलि का बकरा। गालियां भी वही खाएगा। देखो साहब..... अगर भीड़ का हिस्सा बनने में आप लोगों को खतरा दिखाई देता है तो ऐसी संस्थाओं को चंदा दो जो तुम्हारे हितों के लिए काम करती हो.... तुम लोग इसी तरह उदासीन बने रहे तो वह दिन दूर नहीं जब यह लोग आरक्षण को हजम कर जाएंगे..... बाबा साहब तो है नहीं....." उसकी ऐसी बातों से राकेश हमेशा बचने की कोशिश करता है, क्योंकि उसकी पत्नी इंदू चाहती थी वह इन सब पचड़ों से दूर रहे। इंदु का ऐसा नजरिया इस सामाजिक प्रताड़ना का फल था। वह एक सहज जीवन जीना चाहती थी। ऐसा लगता है कि अपने दलित होने का भय उसे खाए जा रहा है।

उस कॉलेज में दिन-प्रतिदिन दलित छात्रों के साथ दुष्कर्म बढ़ता जाता है। एक दिन अचानक राकेश के घर पर रमेश चौधरी कॉलेज के कुछ दलित छात्रों अमरदीप, विकास चौधरी, नितिन मेश्राम और सुभाष सोनकर को लेकर आया। रमेश चौधरी सबका परिचय कराता है। वे अपनी सारी तकलीफें राकेश से बताते हुए कहते हैं कि वें कितनी यातनाओं से गुजर रहे हैं उसका दर्द वही समझ सकते हैं। अमरदीप अपनी तकलीफ बताते हुए कहता है कि एक रोज तो उसने आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया था। इन बातों से उसके हृदय में उठने वाली चीत्कारें साफ-साफ सुनाई पड़ती हैं। एक दिन उन्हें हॉस्टल के कमरे में बंद करके पूरे दिन रखा गया था। कुछ दिन पहले ऐसे ही बस में फाइनल के प्रणव मिश्रा ने चिल्लाकर आवाज़ लगाई की बस में चमार कौन है? उस बस में सुभाष सोनकर नाम का विद्यार्थी था जो चुपचाप बैठा रहा। उसके पास बैठे छात्र ने इशारे से बताया इतने में प्रणव मिश्रा तिलमिला गया और सोनकर के बाल पकड़ खींचलिया और बोला क्यों बे चमरटे सुनाई नहीं दिया। सोनकर ने जवाब दिया

कि मैं चमार नहीं हूं। मिश्रा ने उसे जोरदार थप्पड़ मारा और कहा "चमार हो या सोनकर ब्राह्मण तो नहीं है। है तो कोटे वाला ही बस इतना ही काफी है।"उसने लात-घूंसों से मार कर उसे अधमरा कर दिया। उन छात्रो को एक-एक दिन इसी प्रकार की यंत्रणा से गुजार कर जीना पड़ता था।

शिकायत करने पर दलित छात्रों को इस बात का हवाला दिया जाता है कि आरक्षण से आए हो तो थोड़ा-बहुत तो सहना पड़ेगा। लेखक कहते हैं कि,ये आरक्षण के विरोध से उत्पन्न हुआ आक्रोश है। डीन ही नहीं,प्रोफेसर भी इस प्रकार की बातें करके प्रणव मिश्रा जैसे छात्रों को राह देते हैं।

सुभाष सोनकर ने अपनी मेडिकल रिपोर्ट बनवाई, जिसे लेकर वह पुलिस थाने गया रपट लिखवाने के लिए, तो उससे इंस्पेक्टर ने ये कह कर रिपोर्ट लिखने से साफ मना कर दिया कि "यें अंदरूनी मामला है पुलिस को क्यों घसीटते हो।" इस स्थितियों में उनके लिए एकाग्र होकर पढ़ाई कर पाना बहुत ही मुश्किल था। रमेश चौधरी ने अखबारों में रपट भेजी तो वहां रैंगिंग कहकर छाप दिया गया। दलित छात्रों के साथ होने वाली ज्यादतियों का कोई जिक्र नहीं था।

राकेश और रमेश ने सोचा कि डीन से मिलकर समस्या का समाधान निकालेंगे, तो वहां भी उन्हें निराशा ही मिली। डीन ने यह कहकर बात खत्म करने की कोशिश की, कि यहां पर दलित उत्पीड़न जैसा कुछ नहीं है। राकेश और रमेश चौधरी बौखलाकर उठ आए। दलित छात्रों का मेडिकल में आना डीन की दृष्टि में घुसपैठ थी।

वह अनेक अधिकारियों के पास गए वहां भी वह असफल रहे। दस-पन्द्रह दिन के अथक प्रयासों के बाद भी उन्हें कोई सफलता नहीं मिली। राकेश भी अधिकारी था, वह अपना सामाजिक उत्तरदायित्व समझकर छात्रों की मदद करना चाहता था। सरकारी अफसर ऐसे कामों से बचने की कोशिश करते थे, उन्हें भय था की कहीं इसका असर उनके ऊपर भी ना पड़ जाए। उन्हें दलित होने का भय हर वक्त सालता है। यहां तक कि रमेश ने जुलूस निकालने की योजना भी बना ली और तारीख भी तय की। लेकिन सुभाष इतना सब सहन न कर सका। हद तो तब हो गई जब सोनकर को पहली परीक्षा में ही फेल कर दिया गया, क्योंकि उसने प्रणव मिश्रा के खिलाफ पुलिस में नामजद रपट लिखाने का दुस्साहस किया था। डीन और अन्य प्रोफेसरों तक शिकायत पहुंचाने की हिमाकत की थी। वह यह भूल गया था कि वह इस चक्रव्यूह में अकेला फँसा था, जहां से बाहर आने के लिए उसे कौरवों की कई अक्षौणियीं सेना और अनेक महारथियों से टकराना पड़ेगा। परीक्षाफल का चक्रव्यूह भेद कर सोनकर बाहर नहीं आ पाया और अंततः हार कर उसने आत्महत्या कर ली। लेकिन यह आत्महत्या

आत्महत्या नहीं बल्कि उन महारथियों द्वारा सोनकर की हत्या की गई थी, जिसे आत्महत्या कहकर प्रचारित किया जा रहा था।

राकेश को जब रमेश चौधरी ने यह ख़बर बताई तो वह बिल्कुल कांप गया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि इतनी कुशाग्र बुद्धि का सोनकर आत्महत्या कर सकता है। रमेश चौधरी ने राकेश को फोन करके धीर-गंभीर आवाज में बोला, " राकेश साहब, कल पोस्टमार्टम के बाद सोनकर की लाश का अंतिम संस्कार कॉलेज के मुख्य गेट पर होगा.... आप में साहस हो तो पहुंच जाना...." उसने रमेश चौधरी के शब्दों की आंच को महसूस कर लिया। सोनकर की जद्दोजहद राकेश की अपनी पीड़ा बन गई थी। वह एक झटके से खड़ा हुआ और उसने तय किया कि वह सोनकर की अंतिम यात्रा में शामिल ही नहीं होगा बल्कि उसे कंधा भी देगा। `इसी के साथ कहानी अपने चरम उत्कर्ष पर पहुंचते हुए समाप्त हो जाती है।

१४.३ निष्कर्ष

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी घुसपैठिए कहानी के द्वारा दलित समाज की समस्याओं पर ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं। वे दलित वर्ग की पीड़ा को अपनी पीड़ा मानते हैं और यही पीड़ा घुसपैठिए कहानी में मेडिकल कॉलेज में अध्ययन करने वाले दलित छात्रों की है। लेखक इस कहानी के द्वारा यह दर्शाना चाहते हैं कि आरक्षण और कोटे के विरोध की आड़ में सवर्ण छात्र किस प्रकार से दलित छात्रों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। ऐसी संस्थाओं में उन्हें इतनी यातना दी जाती है कि वह आत्महत्या तक करने को मजबूर हो जाते हैं। वाल्मीकि जी बताना चाहते हैं कि कॉलेजों और कई संस्थाओं में इनके (दलितों) साथ भेदभाव किया जाता है। दलितों को रहने के लिए अलग रूम और सवर्ण को अलग रूम दिया जाता है। कहानी में बताया गया है कि मेडिकल कॉलेज के ऐसे हालात है कि वहां दलित छात्रों का पढ़ाई करना बहुत ही कठिन हो गया है। दलित छात्र कहते हैं कि कई बार तो ऐसा लगता है पढ़ाई छोड़ कर लौट जाएं, लेकिन मां-बाप की उम्मीदें रास्ता रोककर मजबूर कर देती है। कॉलेज के प्रोफेसर और डीन भी प्रणव मिश्रा जैसे लोगों को शह देते हैं और इतना ही नहीं प्रैक्टिकल परीक्षाओं में भी भेदभाव किया जाता है। वो क्लासेस अटेंड करें या ना करें उनको अटेंडेंस की भी समस्या नहीं होती और दलित छात्र इसका विरोध करें तो उसे सीधा फेल कर दिया जाता है। अतः वाल्मीकि जी ने इन सारी समस्याओं को 'घुसपैठिए' कहानी में दर्शाने का प्रयास किया है।

१४.४ संदर्भ सहित स्पष्टिकरण

"क्यों बे चमरटे सुनाई नहीं पड़ा हमने क्या कहा था?'सोनकर ने अपने बाल छुड़ाने की कोशिश की...मैं चमार नहीं हूँ. बालों की पकड़ मजबूत थी. सोनकर करह उठा। प्रणव मिश्र का झन्नाटेदार थप्पड़ सोनकर के गाल पर पड़ा...(गाली)....चमार हो या सोनकर ब्राहमण तो नहीं हो...हो तो सिर्फ कोटेवाले...बस इतना ही काफी है।"

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश बी.ए. प्रथम वर्ष की पाठ्यपुस्तक में रचित "घुसपैठिए" कहानी से लिया गया है। इसके रचयिता "ओमप्रकाश वाल्मीकि" जी हैं। लेखक ने इस कथा के माध्यम से दलित समाज के साथ होने वाले अन्याय और दुर्व्यवहारों का वर्णन किया है।

प्रसंग :- इस गद्यावतरण में ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने भारत में दलित समाज के लोगों के साथ होने वाले दलित उत्पीड़न की व्याख्या की है। लेखक बताना चाहते हैं कि कॉलेजों या अन्य संस्थाओं में इन दलितों के साथ कैसे कैसे बर्ताव और ज्यादतियां की जाती है।

व्याख्या :- कहानी घुसपैठिए में दिखाया गया है कि मेडिकल कॉलेज में दलित, ब्राहमण और अन्य सवर्ण जाति के लोगों ने अध्ययन के लिए प्रवेश लिया है। लेकिन वहां आरक्षण या कोटे से आए हुए दलित छात्रों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता है। अमरदीप, विकास चौधरी, नितिन मेश्राम और सुभाष सोनकर जैसे दलित मेडिकल कॉलेज के छात्र हैं। वे मेडिकल कॉलेज में होने वाली दिन प्रतिदिन की कठिनाइयों से एकदम परेशान हैं। उन्हें किन किन यातनाओं से गुजरना पड़ता है, जिसका दर्द केवल वही जानते हैं। ब्राहमण या दूसरे सवर्ण छात्रों द्वारा दलित छात्रों को अलग खड़ा करके अपमानित करना तो रोज का किस्सा बन गया है। लेखक कहते हैं यदि उन्हें आरक्षण या फिर कोटे द्वारा मेडिकल कॉलेज में प्रवेश मिला है, तो इसमें उनका क्या दोष है?

दलित छात्रों के प्रवेश परीक्षा के प्रतिशत अंक पूछकर थप्पड़ या घूसों से पीटा जाता है। अगर जरा भी विरोध किया तो लातों से मारा जाता है। इतना ही नहीं शहर से कॉलेज तक जाने वाली बसों में चिल्लाकर ब्राहमण छात्र कहता है, कि अगर कोई चमार है तो खड़ा हो जाए। फिर उन दलित छात्रों को पीछे की सीट पर लेकर अभद्र शब्द बोल बोल कर मारा पीटा जाता है।

बिल्कुल ऐसा ही सुभाष सोनकर के साथ हुआ। उससे पूछा गया और जब वह बस में चुपचाप बैठा रहा तो उसके बगलवाले ने इशारे से बताया दिया, जिससे प्रणव मिश्रा नाम का छात्र गुस्से से तिलमिला उठा और उसने सुभाष सोनकर को

अभद्र शब्दों से पुकारा- 'क्यों बे चमरटे सुनाई नहीं पड़ा हमने क्या कहा था?' सोनकर ने अपने बाल छुड़ाने की कोशिश की और उसने कहा- 'मैं चमार नहीं हूं।' मिश्रा ने सोनकर के बालों को कसकर पकड़ रखा था। सोनकर दर्द से कराह रहा था। तभी प्रणव मिश्रा ने सोनकर के गाल पर झन्नाटेदार थप्पड़ मारा और गाली देते हुए कहा- चमार हो या सोनकर.....ब्राह्मण तो नहीं.... हो तो सिर्फ कोटवाले..... बस इतना ही काफी है। फिर क्या इतना कहकर प्रणव मिश्रा ने सोनकर को लात घूसों से मार-मारकर लगभग अधमरा कर दिया था। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि दलित छात्रों को आरक्षण से प्रवेश मिलता है, तो इसमें उनकी क्या गलती है?

विशेष :- शिक्षा क्षेत्र अन्य संस्थाओं में दलितों पर होने वाले अत्याचार पर बल दिया गया है। समाज में फैली जातिवाद जैसी समस्या को प्रस्तुत किया गया है। कथा की भाषा बोलचाल की खड़ी बोली है, और कहीं-कहीं पर अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग हैं।

१४.५ बोध प्रश्न

1) 'घुसपैठिये' कहानी की मुख्य समस्या को अपने शब्दों में लिखिए।
2) कहानी के माध्यम दलित छात्रों की चुनौतियों पर प्रकाश डालिए।

एक वाक्य में उत्तर लिखिए : -

1) मेडिकल कॉलेज के किस छात्र ने आत्महत्या कर ली थी

उत्तर :- मेडिकल सिलेज में सुभाष सोनकर ने आत्महत्या कर ली थी।

2) सुभाष सोनकर को किसने पीटा था

उत्तर :- सुभाष सोनकर को प्रणव मिश्रा ने पीटा था।

3) रमेश चौधरी कौन है

उत्तर :- रमेश चौधरी सामाजिक कार्यकर्ता है।

4) रमेश की पत्नी का नाम लिखिए।

उत्तर :- रमेश की पत्नी का नाम इंदु है।

5) सुभाष सोनकर का अंतिम संस्कार कहाँ किया गया

उत्तर :- सुभाष सोनकर का अंतिम संस्कार मेडिकल कॉलेज के मुख्य गेट पर किया गया।

❖❖❖❖

इकाई -१५

कहानी - ६
गणपति गणनायक – सूर्यबाला

इकाई की रूपरेखा :

१५.0 इकाई का उद्देश्य
१५.१ लेखक परिचय
१५.२ कथावस्तु
१५.३ निष्कर्ष
१५.४ संदर्भ सहित स्पष्टिकरण
१५.५ बोध प्रश्न

१५.0 इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्ध कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि का परिचय पढेंगे। कहानी के कथ्य से परिचित हो सकेंगे। कहानी का उद्देश्य समझ सकेंगे कहानी के संवाद एवं भाषाशैली से परिचित हो सकेंगे।

१५.१ लेखिका परिचय

समकालीन कथा-साहित्य में सूर्यबाला का लेखन विशिष्ट भूमिका और महत्व रखता है। समाज, जीवन परंपरा, आधुनिकता और उससे जुड़ी समस्याओं को सूर्यबाला एक खुली, मुक्त और नितांत दृष्टि से देखने की कोशिश करती हैं। उसमें ना अंधश्रद्धा है ना एकांगी विद्रोह।

सूर्यबाला की पहली कहानी 1972 में 'सारिका' में प्रकाशित हुई। डॉ. सूर्यबाला जी ने अब तक 150 से अधिक कहानियां, उपन्यास व हास्य व्यंग्य लिखे हैं। इनकी प्रमुख रचनाओं में - मेरे संधिपत्र, सुबह के इंतजार तक, अग्निपंखी यामिनी - कथा, दीक्षांत (उपन्यास), एक इन्द्रधनुष, दिशाहीन थाली थर चाँद, मुंडेर पर, गृह प्रवेश, सांझवाती, कात्यायनी संवाद, इक्कीस कहानियां, पांच लम्बी कहानियाँ, सिस्टर प्लीज आप जाना नहीं, मनुश्गंध, वेणु का न्य घर, प्रतिनिधि

munotes.in

कहानियाँ, सूर्यबाला की प्रेमकहानियाँ,इक्कीस श्रेष्ठ कहानियाँ (कहानीसंग्रह) अजगर करे न चाकरी, धृतराष्ट्र टाइम्स, देश सेवा के अखाड़े में, भगवान ने कहा था और झगड़ा निपटारक दफ्तर (व्यंग्य) आदि है।

प्रस्तुत कहानी 'गणपति गणनायक' में लेखिका ने यह दर्शाया है कि किस प्रकार से धनाद्य और बड़े लोग गणेश उत्सव के नाम पर अपना मनोरंजन करते हैं। वहीं दूसरी ओर चाल में रहने वाले छोटे-मोटे गरीब व्यक्ति किस प्रकार अपनी श्रद्धा भक्ति ईश्वर पर लुटाते हैं।

१५.२ कहानी की कथावस्तु

'गणपति गणनायक' की कथा मुंबई शहर में व्यापक तौर पर मनाये जाने वाले गणेश उत्सव पर आधारित है। कहानी के प्रारंभ में मुंबई शहर के सड़कों, गलियों, फुटपाथों और सोसाइटी तथा चालों में गणेशोत्सव की तैयारी पूरे धूमधाम हो रही है। गलियों और सड़कों पर हर जगह गणेश प्रतिमाओं की दुकानें लगी हुई है। हर दुकान पर खरीददारों की भीड़ उमड़ी हुई है। एक-से-एक मन को भा जाने वाले गणपति- जरी किनारे वाले गणेश,तो रंग-बिरंगे वस्त्रों वाले गणेश तो कहीं सुनहलें आभूषणों वाले गणेश ही गणेश हर कहीं दिखाई दे रहे हैं।

कलाकार पांडुरंग मोरे की दुकान पर भी गणेश की मूर्तियां सजी हैं। इतने दिनों तक एक साथ रहते-रहते सारे गणपति एक दूसरे के बहुत करीब हो गए थे। हंसी-ठिठोली करते हुए सब का समय एक साथ कट जाता था। कुछ खरीददार मूर्तियां खरीदने पहले से टूट पड़े। इतने दिनों से साथ-साथ रहने वाली गणेश प्रतिमाएँ आपस में बात करती हैं साथ रहते-रहते उनके मन जुड़ गए है, अब जब खरीददार उन्हें लेने आ रहे हैं तो उन गणेश प्रतिमाओं को अलग होना अखरने लगता है दोनों प्रतिमाएँ सोचती हैं कि क्या जाने कब मिलेंगे? पहला खरीदार छोटी ट्राली लाया था। उसने एक गणेश प्रतिमा खरीद कर अपनी ट्राली पर रखकर शीश नवाया,गुलाल छिड़का और बाकी के 8-10 साथी तुरही-नगाड़े की तड़ातड़ के साथ नाचते-कूदते गणेश जी को ले कर चल दिए।

दूसरे खरीददार आसमानी रंग की मिनी वैन लेकर आये थे। साथ में सफारी और तुरही की जगह लाल सुनहरे डब्बों वाला बैंड। वैन में पहले से कई लोगों की चहल-पहल थी। ड्राईवर तथा अन्य लोगों की सहायता से 3:30 फुट के गणेश को वैन में रखा गया और लोगों से लदी-फंदी वैन अपनी हैसियत और ट्राली की औकात दिखाई और सर्र से निकल गई। लेकिन भीड़ के कारण वाहन वैन हो या ट्राली रुक-रुक कर ही चल पा रहे थे।

तभी बड़े गणपति को वैन से उचकते देख ट्राली वाले गणपति ने पहचान लिया। और हम दोनों साथ-साथ चलते हुए बात करने लगे। वैन वाले गणपति ने जैसे ट्राली वाले गणपति का मन रखने के लिए बात की साथ ही यह भी जताया कि तुम इतनी नीचे ट्राली में और मैं यहां ऊपर वैन में। वैन वाले गणपति पर अपने खरीददारों की हैसियत हावी हो रही थी। जिस प्रकार बड़े लोग केवल अपने बड़प्पन और अमीर होने का दिखावा करते हैं लेकिन असल जिंदगी में अपने कर्मों से बहुत ही तुच्छ होते हैं। और वही ट्राली वाले गणपति के समान मध्यम वर्ग के भक्त या फिर श्रद्धा-भाव रखने वाले लोग जो केवल अपने कर्मों से स्वयं कुछ बनना चाहते हैं। उन्हें इससे कुछ फर्क नही पड़ता कि वे कितने अमीर या पैसे वाले है। उन्हें सिर्फ ईश्वर के समक्ष अपनी भक्ति प्रस्तुत करनी होती है न की दिखावे का झूठा मिथ्याचार। इतनी सी देर में दोनों गणपतियों के संबोधन और लहजे भी बदल गए थे। ट्राली वाले वैन वाले को 'आप' और वैन वाले ट्राली वाले को 'तुम' कह रहे थे। इसका अर्थ यह हुआ कि इस बड़े शहर में अमीरी और गरीबी के हिसाब से लोगों को सम्मान मिलता है। जिसके जितने ठाट-बाट उसे उतना ही सम्मान मिलता है। ट्रैफिक हटा और गाड़ियां आगे बढ़ी। वैन फिर सर्र से निकल गयी। फिर बड़े गणपति ने चैन की साँस ली। जिस प्रकार से ऊंची शानो-शौकत वाले परिवार में यदि उसमें कोई मध्यम वर्गीय रिश्तेदार आ जाए तो वह लोग उससे पीछा छुड़ाना चाहते हैं। ठीक उसी प्रकार वैन वाले गणपति ट्राली वाले गणपति के साथ वही व्यवहार कर रहे थे। सामने सिग्नल था। वैन ड्राइवर ने जल्दी से निकालना चाहा, लेकिन तभी ट्रैफिक पुलिस को देखकर धच्च से ब्रेक मार दिया सांवरिया और गणपती औंधे मुंह गिरते बचे।

तब खड़खड़ाती ट्राली बगल में आ पहुंची। नीचे वाले गणपति को रहा नहीं गया और बोले "मैंने सोचा आप की वैन निकल गई होगी।" वैन वाले गणपति ने पूरा रौब झाड़ते हुए कहा कि निकल तो आराम से जाती लेकिन ड्राइवर जरा फुलिश और शिट है।

वैन वाले गणपति तो बड़े लोगों के बीच में अब रहने वाले हैं तो भाई इतनी इंग्लिश आनी तो बनती है और नीचे वाले ठहरे सीधे-साधे चाल के तो उनको कुछ समझ नहीं आया। नीचे वाले ने उत्साह के साथ बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि यह लोग मुझे चेंबूर की आंगनवाड़ी के सामने वाली चॉल में ले जा रहे हैं। इन लोगों ने मिलाकर 'गजानन मित्र मंडल' बनाया है।

नीचे वाले गणपति ने चाल वालों की सामर्थ्य के अनुसार बोला यह लोग मुझे गौरी सहित पांचवें दिन विदा करेंगे। और आप का कुछ पता चला? ऊपर वाले गणपति ने अपने बड़प्पन का दिखावा करते हुए बोला कि यह लोग तो मुझे 10 दिन के पहले छोड़ने वाले नहीं हैं। वह शेखी बघारते हुए कहते हैं कि जाने

क्या-क्या फिक्स कर रखा काफी बिजी रहना पड़ेगा। लेखिका ने ट्राली वाले गणपति को 'गजानन' और हंसी-ठठोली की सुविधा के लिए वैन वाले गणपति को 'गणनायक' का नाम दिया।

गणनायक ने पूरे गंभीर होते हुए कहा- यह लोग प्रोग्राम डिस्कस कर रहे हैं कि क्या-क्या करना है इतने में गजानन बोले इसमें करना क्या है- वही भजन-भाव, रंगोली, गायन स्पर्धा और गणपति बप्पा मोरया....। मस्तमौला गजानन हँसे। गणनायक ने बड़े लोगों सा ठाठ-बाट दिखाया और कहा यह लोग बप्पा-शप्पा नहीं चिल्लाते। ये लोग एक दिन मैजिक शो एक दिन डांस कंपटीशन, एक दिन वेराइटी इंटरटेनमेंट, हाउ जी, ब्यूटी कॉन्टेस्ट और न जाने क्या-क्या? रास्ता खुला दोनों गणपति अपने-अपने स्थान पर जाने लगे इस बार गणनायक भी थोड़े भावुक हो गए। फिर क्या था गाजे-बाजे के साथ पंडाल में गणनायक का स्वागत हुआ। बैंड और डांस के शोर-शराबे में मंत्रोच्चार का कहीं अता पता ही नहीं था। गणनायक की गर्दन अलबत्ता मोटी-मोटी मालाओं से लद गई। सिंहासन के सामने प्रसाद, भोग थालों की कतार लग गई थी। कलाकार जी की दुकान में पैदा होने के बाद अब तक गणनायक ने कैसेटों में ही 'लड्डू को भोग' सुना था आज सामने व्यंजनों, मिष्ठानों का अंबार देखकर बरबस मुस्कुराए- सोचा महाभोग तो आज लगेगा। प्रमुख आराधक का सम्मान 'टॉवर' के सबसे धनाढ्य सेठ और सेठानी को दिया गया था।

सेठ सेठानी द्वारा पूजा-अर्चना संपन्न हुई और पंडित जी दक्षिणा लेकर विदा हो गए और भक्तजन से भरपूर पेपर प्लेटे ले पंडाल के बीच झुंडों में तितर- बितर हो गए थे। तात्पर्य यह है कि ईश्वर (गणेश) की स्थापना तो एक बहाना मात्र था, लोग वहां केवल अपनी स्वार्थ सिद्धि कर रहे थे। अचानक गणनायक का ध्यान उन महिलाओं पर गया, जो उनकी मूर्ति में कमियां निकालने में मशगूल थी। लेखिका कहती है कि- जिसको जिन-जिन चीजों में संतुष्टि मिलती वह अपना मन संतुष्ट कर लेता। गणेशोत्सव मनाना तो केवल एक बहाना था।

गणनायक प्रसाद और व्यंजनों के थाल की प्रतीक्षा करते रहे लेकिन वहां उनके समीप केवल नुचे हुए फूल, अक्ष, हल्दी और दुष बड़े पानी के पात्र के अलावा कुछ नहीं छोड़ा गया। लेखिका कहती है ऐसा लग रहा था मानो वे लोग गणेश पूजा की प्रतीक्षा और होने वाले फास्ट म्यूजिक पर नृत्य की परीक्षा ज्यादा कर रहे हो। अधेड़ और जवान सब अजीबोगरीब तरह से नृत्य कर रहे थे।

यह कैसा चलन हो गया है जहां अब व्यक्ति ईश्वर की भक्ति को भी एक जरिया बनाकर मनोरंजन करने के अलग-अलग उपाय ढूंढता है।यह सब दृश्य देख फिर वह स्वयं को समझाते है कि यह नृत्य या चाहे जो हो यह मेरे ही

उपलक्ष्य में तो कर रहे हैं। अगली सुबह देखा कि कितनी देर हो गई लेकिन पूजा आरती की कोई संभावना नहीं दिखाई दे रही है। सब एक दूसरे पर आरोप लगाते दिखाई दे रहे हैं। पंडित का कहना था कि वह आया था, लेकिन किसी ने भी दरवाजा नहीं खोला और अब वह दूसरी जगह है। अंततः सर्व सम्मति से तय हुआ कि पंडित को मारो गोली और ले आओ आरती की कैसेट। किसी प्रकार से आरती संपन्न हो गई। देखते ही देखते सब अपने-अपने काम धंधे पर चले गए। अब गणनायक अकेले। लेखिका कहती है कि अब समय कितना बदल गया। किसी को समय नहीं है ईश्वर की पूजा आराधना के लिए। अपराहन में धमाचौकड़ी मचाते छोटे बच्चे जमा हो गये। बच्चे भी आपस में गणनायक की कमियां निकालते। कोई कहता वहां गणपति इससे अच्छा है, कोई कहता मेरे पापा के ऑफिस के सामने इससे ऊंचा गणपति है।

फिर उनमें एक मैकडोनाल्ड जाने की बात की तो दूसरी लड़की ने 'पिज़्ज़ा हट'। उसमें से तीसरे ने बोला क्यों नहीं हम मैकडोनाल्ड फेस्टिवल भी सेलिब्रेट करते? ....रबिश! "तीसरा बोला गणपति इज गॉड? "सो व्हाट?..... इधर भी हाउजी, उधर भी हाउजी, इधर भी डांस, उधर भी डांस। गॉड होने ना होने से क्या फर्क पड़ता है? व्

सही भी तो है जैसा संस्कार मां-बाप देंगे बच्चे वही तो सीखेंगे। कैसा समय आ गया है ईश्वर के होने ना होने से किसी को फर्क नहीं पड़ता। अंधेरा होने के बाद पूजा आरती हुई और जमकर नाच गाना हुआ। फिर रात को गणनायक के पास सोने को लेकर लोगों में झिकझिक होनी शुरू हुई। काफी झिकझिक के बाद समाधान निकला की सोसाइटी का हेड चौकीदार सौ रुपए ओवरटाइम और रात के खाने की शर्त पर गणपति के पास सोएगा। हर दिन का पैसा वह पहले ही ले लेगा।

मनुष्य कैसा हो गया है ईश्वर की शरण में रहने के लिए बहुत पैसे वसूलता है और उसी पैसे से वह दारू पीता है और वही उनकी बगल में खर्राटे मारता है। इधर गणनायक को नींद नहीं आ रही थी। उनका मन, मान-अपमान, प्रतिष्ठा और अवहेलना आदि बातों पर अशांत था कि वह यह सब सही समझे या फिर गलत। सिक्योरिटी हेड के बगल में पढ़े मोबाइल की घंटी बजी। गणनायक ने थोड़ी देर तो बजने दिया फिर उठा लिया। उधर से गजानन की चहकती हुई आवाज आई - "अभिवादन महाराज! कैसे हैं? "गणनायक थोड़ा अटके- "ठीक हूं अचानक तुम कैसे?".... दोनों गणपति में अपने-अपने तरफ के लोगों के बारे में बातचीत हुई।

गजानन ने अपने चाल वाले लोगों का बखान करते हुए बताया कि यह लोग जितने सामान्य साधन हीन लोग प्रसाद में इतना चिवड़ा, उपमा, नारियल

वड़ी, मोदक आदि चढ़ाते हैं। तो आप वाले- ”गजानन का तात्पर्य जब सामान्य लोग इतनी सेवा करते हैं तो धन-धान्य से पूर्ण लोग तो और अधिक सेवा सत्कार करते होंगे लेकिन इसका विपरीत था, उन्हें स्वयं से ही फुर्सत नहीं मिलती है। लेकिन गणनायक सच बोलते कैसे?

गणनायक सोचते थे वह चाहे जिस स्थिति में हो, लेकिन गजानन की आंखें तो उन्हें प्रतिष्ठा और सम्मान के शिखर पर ही देख रही है। सच भी है यही हर किसी को चाहिए होता है चाहे वह मनुष्य हो या फिर देवता। एक शाम बाहर की सारी दुकानें टॉवर के अहाते में बुला ली गई जहां चाट, गोलगप्पे, डोसे, समोसे और चायनीज आदि खाने की चीजें थी। खाना पकाने खिलाने की तकलीफ से बचने के लिए लोग अपने-अपने घरों से नीचे उतर खाने के लिए और देखते थे यहां-वहां पेपर प्लेटों का ढेर लग गया। वहां के चड्डा साहब को यह कहने में हिचक तक नहीं हुई कि हम खाने-पीने के लिए ऐसे अवसरों का इंतजार क्यों करते हैं? सब खाने-पीने में इतने मस्त की आरती-पूजा की किसी को सुध ही नहीं थी और अंतिम दिन बच्चों ने अलग-अलग प्रतिस्पर्धा में हिस्सा लिया। किसी ने गीत में तो किसी ने नृत्य, ब्यूटी कॉन्टेस्ट, फैंसी ड्रेस आदि में बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। एक-एक करके सभी बच्चों ने अपनी प्रतिभाएं प्रदर्शित की। कुछ समय बाद नृत्य की स्पर्धा प्रारंभ हुई तेज लाउडस्पीकरों आते संगीत की आवाज पर एक लड़की इतना उच्छृंखल नृत्य कर रही थी। इतना अभद्र दृश्य की उसे देखकर रंभा भी लज्जित हो उठे। एक दूसरी लड़की पारदर्शी कपड़े पहन कर और उसके ऊपर जैकैट पहनी थी जिसे उतार कर उछाल मारी। पूरा पंडाल सीटियों से गूंज उठा। उसकी वह जैकेट गणनायक के पैरों के पास आ कर गिरी उन्हें वह विषैले सांप के समान प्रतीत हो रही थी। गणनायक का पूरा शरीर क्रुध्द और घृणा से गिनगिना उठा।

गणपति विसर्जन का अंतिम दिन आ गया। सड़कों पर हजारों लाखों की संख्या में भीड़ उमड़ पड़ी। विसर्जन के समय भी गजानन और गणनायक की वैन और ट्राली मिल गयी दोनों में फिर बातें प्रारंभ हुईं। गजानन अपनी चाल वाले भक्तों से बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने गणनायक को बताया कि उनके ही समान उनकी छोटी-छोटी इच्छाएं भी थी जिन्हें वह मुझसे मांग रहे थे।

देखते देखते भीड़ हटी ट्राली आगे निकल गयी। गजानन को आंगनवाडी की चाल वालों ने पूरे सम्मान के साथ सिर पर उठा लिया और उन्हें गहरे समुंद्र में उतार कर विसर्जित किया जबकि वैन वाले आपस में लड़ने लगे तथा अपना समय बचने के लिए गणनायक को बिना भक्तिभाव के किनारे ही छोड़ कर चले गये।

१५.३ निष्कर्ष

लेखिका सूर्यबाला गणपति गणनायक कहानी द्वारा यह बताने का प्रयास किया है कि है कि आज लोगों के पास ईश्वर की पूजा आराधना के लिए समय नहीं है। धनी लोग भगवान के नाम पर खुद के लिए मनोरंजन की व्यवस्था करते हैं। ईश्वर की पूजा अर्चना कम तथा एंजॉय ज्यादा हैं। आज व्यक्ति जितना अमीर और धनवान होता जा रहा है वह अपने संस्कार और रीति रिवाज भूलता जा रहा हैं।

वहीं एक ओर सामान्य और साधनहीन सामान्य मुंबईकर दिन भर भूखे प्यासे रह कर पूरी श्रद्धा से गणेश जी की पूजा अर्चना करता है और यह अपेक्षा करता है कि गणेश जी उनकी छोटी-छोटी इच्छाएं को अवश्य पूर्ण करेंगे।

१५.४ संदर्भ सहित स्पष्टिकरण

"नहीं, स्वास्थ्य के प्रति बहुत सतर्क रहते हैं वे लोग... और लड्डू वड्डू तो बिलकुल नहीं खाते तभी तो फ़ूड इन्फेक्शन से वगैरह से जुडी सारी ख़बरें तुम्हारी जैसी चाल वालों की ही होती है.

'सो बात नहीं महाराज,इन बेचारों को भी इलाज की सुविधा होती तो खबर बन्ने की नौबत नहीं आती-' "

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश बी.ए.प्रथम वर्ष की पाठ्यपुस्तक में रचित "गणपति गणनायक" कहानी से लिया गया है। इसकी लेखिका "सूर्यबाला जी' हैं। लेखिका ने इस कहानी द्वारा समाज में रहने वाले एक उच्च वर्ग और दूसरे मध्यम वर्ग के लोगों के बारे में वर्णन किया है। दोनों वर्गों द्वारा ईश्वर के प्रति श्रद्धा भाव का दृष्टिकोण अंकित किया गया है।

प्रसंग :- इस गद्यांश में उच्च वर्ग और मध्यम वर्ग की स्थितियों के बारे में वर्णन किया गया है। उच्च वर्ग के पास स्वास्थ्य से संबंधित हर सुख सुविधाएं उपलब्ध होती है और वही मध्यम वर्ग के पास इन सारी चीजों का अभाव होता है, जिससे उन्हें स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती है-

व्याख्या :- लेखिका कहती है कि गजानन को तो पता था ही गणनायक सोसाइटी में स्थापित है, और वहां तो बड़े अमीर लोग होंगे, तो चढ़ावा भी उन्हें खूब भर-भरकर चढ़ता होगा। यही सोचकर जब गजानन उनसे (गणनायक) से पूछते हैं कि महाराज तब तो आपके भक्त भोग में रोज लड्डू चढ़ाते होंगे। गणनायक ने टॉवर में रहने वालों सा ही मुंह बिचकाया- कहां, वहाँ ऐसे-ऐसे मिष्ठान होते हैं कि

लड्डुओं को तो कोई पूछता ही नहीं।फिर गजानन बड़ी उत्सुकता से बोले फिर तो वे लोग प्रतिदिन वहीं खाते होंगे न।गणनायक अपने आत्मसम्मान की रक्षा करते हुए बोले- नहीं, स्वास्थ्य के प्रति बहुत सतर्क रहते हैं वे लोग.....और लड्डू-वड्डू तो बिल्कुल नहीं खाते। गणनायक कहते हैं तभी तो (भोजन) फूड इन्फेक्शन आदि से जुड़ी बीमारियां तुम्हारे चॉल वाले जैसे लोगों को होती है। गजानन अपने चॉल वालों के पक्ष में बोलते हैं कि महाराज, ऐसी बात नहीं। यदि स्वास्थ्य से संबंधित सारी सुख सुविधाएं और इलाज के साधन यहां भी उपलब्ध हो, तो ऐसी खबरें बनने की नौबत नहीं आती।

लेखिका बताना चाहती हैं कि खान-पान, रहन-सहन और आधी सुख-सुविधाएं यह निश्चित नहीं करती के इंसान का स्वाभाव या ईश्वर के प्रति उसका श्रद्धा-भाव कैसा है? बल्कि मनुष्य की अच्छी सोच और ईश्वर के प्रति उसका श्रद्धा-भाव से ऊंचा और बड़ा बनाता है। ईश्वर के प्रति अपनी आस्था और भावना व्यक्त करने के लिए बड़े-बड़े दिखावे करने की आवश्यकता नहीं है। कहानी में इस बात पर भी बल दिया गया है कि आज मनुष्य ईश्वर की पूजा-अर्चना के नाम पर बड़े-बड़े उत्सव आदि रखता है, और उनके समक्ष ही बिल्कुल अभद्र तरीके से नृत्य आदि करेंगे। ईश्वर के समीप ही बैठकर शराब पिएंगे, जुए-ताश खेलेंगे। अपने मनोरंजन के हर तरीके ढूंढ लेंगे और उसका प्रबंध करेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य आज आगे निकलते-निकलते इतना आगे निकल गया है कि अपने संस्कार और सभ्यता भूलते जा रहा है।

विशेष :- इस कथा में गणपति मूर्तियों को सजीव कर उनके आपसी संवादों के माध्यम से शहर के भिन्न - भिन्न वर्गों के लोगों तथा उनके विचारों पर व्यंग्य किया गया है। भाषा-बोलचाल की हिंदी भाषा है। कहानी का परिप्रेक्ष्य मुम्बई है इसलिए भाषा में एकाध स्थान पर अंग्रेजी और मराठी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। कहीं-कहीं पर मुहावरेदार शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। जैसे- ठहाके मारना।

१५.५ बोध प्रश्न

बोधप्रश्न :-

1) ‘गणपति - गणनायक’ रचना के व्यंग्य को अपने शब्दों में लिखिए।
2) गणपति और गणनायक के मध्य हुए संवादों की चर्चा कीजिये।

एक वाक्य में उत्तर लिखिए :-

1) लेखिका ने ट्राली वाले गणेश तथा मिनी वैन वाले गणेश का क्या नाम रखा

उत्तर :- लेखिका ने ट्राली वाले गणेश का नाम गजानन तथा मिनी वैन वाले गणेश का नाम गणनायक रखा।

2) गजानन और गणनायक को किसकी दुकान से ख़रीदा गया

उत्तर :- गजानन और गणनायक को कलाकार पांडुरंग मोरे की दुकान से ख़रीदा गया।

3) गजानन और गणनायक कहाँ स्थापित किये गये

उत्तर :- गजानन को चेम्बूर की एक आंगनवाडी के सामने वाली चाल में और गणनायक को लोटस टावर के मैदान में स्थापित किया गया।

4) गणनायक के आरती की जिम्मेदारी किसे मिली थी

उत्तर :- गणनायक के आरती की जिम्मेदारी सेठ जी को मिली थी।

5) कहानी के अंत में कौन से गणेश ख़ुशी - ख़ुशी विदा हुए

उत्तर :- कहानी के अंत में चाल वाले गजानन ख़ुशी- ख़ुशी विदा हुए।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१६

कहानी - ७

'कब्र का मुनाफा' - तेजेंद्र शर्मा

इकाई की रूपरेखा :

१६.0 इकाई का उद्देश्य
१६.१ लेखक परिचय
१६.२ कहानी की कथावस्तु
१६.३ निष्कर्ष
१६.४ संदर्भ सहित व्याख्या
१६.५ बोध प्रश्न

१६.0 इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्द कथाकार तेजेंद्र शर्मा का परिचय पढेंगे। कहानी के कथ्य से परिचित हो सकेंगे। कहानी का उद्देश्य समझ सकेंगे। कहानी के संवाद एवं भाषाशैली से परिचित हो सकेंगे।

१६.१ लेखक परिचय

तेजेंद्र शर्मा द्वारा लिखी गई कहानी 'कब्र का मुनाफा' दो पाकिस्तानी परिवारों की कथा है। ये इंग्लैंड में अपने अपने परिवार के साथ रहते हैं। खलील और नजम दोनों में गहरी दोस्ती है। खलील को सिगरेट की बुरी लत है तो नजम को शराब की। लेकिन इन दोनों की यह आदतें दोनों के दोस्ती के कभी आड़े नहीं आती। खलील की बीवी नादिरा है जो फिल्मी सितारों और उनके फिल्मों की बहुत शौकीन है लेकिन पाकिस्तानी फिल्मों की नहीं बल्कि भारतीय फिल्मों की। क्योंकि वह दिल्ली में पली बढ़ी है। खलील की पत्नी नादिरा है जो शादी से पहले हिंदुस्तान में रहती थी। वह लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए.पास है। वह नौकरी करना चाहती है लेकिन खलील बिल्कुल कट्टर मुस्लिम पंथी

पाकिस्तानी मुसलमान है। जिसके कारण वह नादिरा को इस काम की इजाजत नही देता है।

कहानीकार ने यह प्रस्तुत किया है कि दोनों विदेश में हैं उनके पास अपना खुद का मकान तथा गाड़ी है उन्हें खाने पीने की कोई कमी नहीं है लेकिन फिर भी उन्हें खुद का कारोबार करना है। वह अपना सब कुछ पहले से ही व्यवस्थित करके रखना चाहते हैं। यहां तक कि दफन होने के लिए कब्र भी। इसी कथ्य को आधार बनाकर यह कहानी प्रस्तुत है।

१६.२ कहानी की कथावस्तु

'कब्र का मुनाफा' इंग्लैंड में रहने वाले दो पाकिस्तानी परिवारों की कहानी है। कहानी का परिवेश बिल्कुल विदेशी है। क्योंकि कहानी के सारे पात्र इंग्लैंड में रहते हैं। सभी पात्र पढ़े लिखे हैं। दोनों पात्र खलील और नजम यूरोप की कंपनियों में काम करते हैं। खलील जब इस कंपनी में आया था तो बिल्कुल युवा अफसर बनकर। खलील और नजम ने अपने-अपने घरों में अपना दबदबा बनाकर रखा है। वे अपनी बीवियों को किसी मामले में बोलने नहीं देते। खलील अपनी पत्नी नादिरा को इतने दबाव में रखता है कि वह बिल्कुल शांत और चुप सी रहती है। खलील और नजम दोनों ने अभी से ही अपनी बीवियों के लिए कब्रें बुक कर रखीं हैं। नादिरा को जब इस बात का पता चलता है तो वाज नाराज हो कर कहती है कि "घर को कब्रिस्तान बना रखा है यह कम था क्या जो बाहर भी कब्र बुक कर आये।" नादिरा और आबिदा दोनों भी उनकी इन हरकतों से परेशान है लेकिन आबिदा को इस खबर से इतना फर्क नहीं पड़ता जबकि नादिरा कब्रों की अडवांस बुकिंग की बात से परेशान हो जाती है।

नजम और खलील दोनों 33 साल से यूरोप की कंपनियों में काम करते हैं। खलील ने अपनी मेहनत और लगन से कंपनी को यूरोप की फाइनेंसियल कंपनियों की श्रेणी में खड़ा कर दिया है।

वे चाहते हैं कि उनकी खुद की कोई कंपनी हो या काम हो जिससे लोग उन्हें मरने के बाद भी याद करें। मरने की बात सुनकर नजम, खलील से कहता है "भाई! आपने कब्र बुक कर ली है या नहीं? देखिए उस कब्रिस्तान की लोकेशन, उसका लुक और माहौल एकदम यूनिक है.... अब जिंदगी भर तो काम, काम और काम से फुर्सत नहीं मिली। कम से कम मरकर तो चैन की जिंदगी जिएंगे।"

इंसान जब तक जिंदा रहता है वह जीवन के हर ऐशो आराम ढूंढता है। वह सोचता है कि ऐसा क्या करूं की आलीशान जिंदगी जीने के लिए मुझे हर चीज मिले। लेकिन यहां तो खलील और नज़म को मरने के बाद भी कब्रिस्तान

का सारा माहौल एकदम यूनिक चाहिए। अब मरने के बाद क्या होगा यह कौन जानता हैं? खलील एकदम कट्टर शिया मुसलमान है। उसके मरने के बाद भी उसके आस-पास में कोई सुन्नी और ना ही कोई टोपी वाला गुजराती चाहिए। बल्कि वह सोचता है कि शिया लोगों के लिए कोई अलग से कब्रिस्तान हो। अचानक नजम खलील को किसी नई स्कीम के बारे में बताता है। कार्पेण्डर्स पार्क जिसमें 10 पाउंड महीने की प्रीमियम पर इंसान को शान से दफनाने की अपनी पूरी जिम्मेदारी ली जाती है। खलील को लगता है जो वह सोचता है वो सही है बाकी सब गलत इसलिए दोनों इस स्कीम का फायदा उठ कर अपनी बीवियों को बिना बताए कब्रें बुक करवा लेते हैं। खलील, नजम से पूछता है "उनकी कोई स्कीम नहीं है जैसे बाई वन गेट वन फ्री।" वह कहता है अगर ऐसा है तो हम अपने बेटों को भी शामिल कर सकते हैं। खलील जो बेटे को बिजनेस के लिए पैसे नहीं देना चाहता वही अपनी कट्टर विचारधारा के चलते बेटे के जीते जी उसके लिए कब्र बुक करवाने की सोचता है।

खलील की बीवी नादिरा भारत से है इसलिए खलील नादिरा से बहुत चिढ़ता है। नजम को भारत से कोई चिढ़ नहीं। वो कहता है कि उसे हिंदुस्तान छोड़े 40 साल हो गये लेकिन लाहौर अब भी उसे अपना नहीं लगता। जबकि खलील के मन में भारत व हिन्दुओं के प्रति इतनी चिढ़ है कि उसका बस चले तो हिंदुओं को एक कतार में खड़ा करके गोली मार दे।

आबिदा और नादिरा सोचती है कि उनके पतियों के पास उनको देने के लिए समय नहीं है। वह उन्हें घर के खर्चे के लिए पैसे देते हैं लेकिन उसका पूरा पूरा हिसाब किताब रखते हैं। आबिदा तो अपने नादिरा आपा के पास अपना सारा रोना रो लेती है लेकिन नादिरा अपना हर दुख दर्द अपने सीने में दबाए रखती है।

खलील के साथ रोज की गाली गलौज और कभी कभार तो मारपीट पर भी। किन्तु नादिरा पर इसका कोई असर नहीं होता। इस तकलीफ को वो एक स्थायी हंसी के पीछे छुपाए रखती है। खलील को नादिरा की इस बात से भी परेशानी होती थी।

एक घटना का जिक्र करते हुए लेखक लिखते हैं कि नादिरा और खलील एक दिन किसी महफ़िल में गए। वहां डेमोक्रेसी की बात छिड़ी और नादिरा ने भारत के प्रजातंत्र की तारीफ कर दी। खलील उस पर गुस्से से वही फट पड़ा। उसने नादिरा को तलाक तक देने को कह दिया। महफिल में कब्रिस्तान जैसी चुप्पी छा गई। घर पर भी कब्रिस्तान पहुंच चुका था। वैसे नादिरा खलील के पत्र छूती नहीं क्योंकि वह जानती है कि उसे इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा।

लेकिन पत्र पर श्री एवं श्रीमती लिखा था तो उसे लगा ये निमंत्रण पत्र होगा और पत्र खोला तो दंग रह गई। पहले से ही कब्रिस्तान बुक करने का मतलब वह कुछ समझ नहीं पाई। क्या उसका घर एक जिंदा कब्रिस्तान नहीं।

खलील को इस बात का गर्व रहता है कि उसने अपने परिवार वालों को जमाने भर की सुविधाएं मुहैया करवाई है। वह चाहता है कि नादिरा इसके लिए उसकी कृतज्ञ रहे। नादिरा नें खलील से पूछा आपने अभी से कब्रे क्यों बुक करवा ली है? और वह भी इतनी दूर? "भई एक बार लाश रॉल्स राइस में रखी गई तो हैम्पस्टैंड क्या और कार्पेण्डर्स पार्क क्या। यह कब्रिस्तान जरा पॉश किस्म का है फाइनेंसियल सेक्टर के हमारे ज्यादातर लोगों ने वहीं दफन होने का फैसला लिया है। खलील कहता है कम से कम मरने के बाद अपने स्टेटस के लोगों के साथ रहेंगे।"

नादिरा का कहना था कि मरने के बाद तो शरीर मिट्टी ही है फिर उस मि ट्टी का नाम चाहे अब्दुल (कामवाला) हो नादिरा या फिर खलील। नादिरा का कहना था कि मरने के बाद तो सब को दफन होना ही है तो इसमें अपने जैसे क्या और मोची या पलंबर क्या? सब को तो एक ही मिट्टी में मिलना है।

नादिरा, खलील से कहती है कि वह न उसे किसी फाइव स्टार कब्रिस्तान में दफन होने देगी और ना खुद होगी। आप ऐसी सोच से बाहर आइए। दूसरे दिन नादिरा, आबिदा को फोन करती है और उसका हाल पूछँती लेती है। इतने में आबिदा फिल्मी हीरो की खबरें उसे सुनाने लगती हैं। नादिरा उसे कहती है- तुम फिल्मी दुनिया से बाहर आओ और हकीकत की दुनिया देखो। क्या तुम्हें कार्पेण्डर्स पार्क के कब्रिस्तान की बुकिंग के बारे में पता है? आपा हमें क्या फर्क पड़ता है वह एक के बदले चार-चार बुक करें और चारों में रहे। जब जीते जी उन्हें सात-सात बेडरूम का घर कम पड़ता है तो क्या मरने के बाद 2 गज जमीन काफी होगी इन के लिए।

आबिदा अपने और नजम के रिश्ते के बारे में बताते हुए कहती है वह 4 साल से बुश्रा के साथ वक्त बिता रहे हैं। और हमारा रिश्ता तो भाई-बहन जैसा हो गया है। नादिरा का जी धक्क से कर गया कि पिछले 5 साल से ऐसा ही रिश्ता उसका और खलील का है। वह कहती है कि क्या यह जो कर रहे हैं वह ठीक है।

आबिदा कहती हैं आपा मुझे कुछ फर्क नहीं पड़ता। मरने के बाद कौन कहां दफन होता है लेकिन नजर मुझसे पहले मरे तो उन्हें गरीब कब्रिस्तान में ले जाकर दफन करूंगी। अगर मैं पहले मर गई तो फिर बचा ही क्या?

लेखक कहते हैं कैसी सोच लेकर यह जीते हैं। इंसान अभी जिंदा है लेकिन उनके लिए कब्रे पहले से आरक्षित हैं। इस बात को बीते साल भर हो चुके थे। अब दोनों फिर से किसी नए धंधे के बारे में सोचने में जुट गए और इस विषय को भूल गए।

लेकिन कार्पेण्डर्स पार्क को नहीं भूला था। चिट्ठी आई जिसमें लिखा था मुद्रा स्फीति के साथ-साथ मासिक किस्त में भी पैसे बढ़े हैं। इतना देखते ही नादिरा का खून खौल उठता है। खलील और नजम बेडरूम में शराब के घुट और सिगरेट के कश के साथ अपने नए काम के बारे में सोचते विचारते रहते हैं। इतने में नादिरा भुनभुनाते हुए कमरे में जाती है और खलील से फोन करके कैंसिल करने को कहती है, तो वह कहता है कि कैंसिलेशन चार्ज अलग से लगेंगे। क्यों नुकसान करवाती हो? वह कहती है तो ठीक हे मैं ही फोन करती हूं। उसकी भरपाई मैं खुद कर दूंगी नादिरा गुस्से में नंबर मिलाती है। सिगरेट का धुआं कमरे में एक डरावना माहौल पैदा करता है। फोन लग जाता है और वह अपना रेफरेंस नंबर देकर बात करती है।

खलील और नज़म बेबस और परेशान है। नादिरा थैंक्स कहकर फोन रख देती है। वह खलील से कहती है कि हमने कैंसिलेशन का ऑर्डर दे दिया है। उनका कहना है कि आपने साढ़े तीन सौ पाउंड एक कब्र के लिए जमा कराए हैं और यानी कि दो कब्र के सात सौ पाउंड और अब इन्फ्लेशन की वजह से उन कब्रो की कीमत बढ़कर ग्यारह meew पाउंड यानी कि आपको कोई चार सौ पाउंड का लाभ हो रहा है।

खलील चौंक जाता है - “चार सौ पाउंड का फायदा, बस साल भर में....” कब्र के इस नए धंधे की बात तुरंत उसके दिमाग में कौंध जाती है उसकी उसकी आँखें चमक उठती है क्योंकि अब उन्हें नया धंधा मिल गया है।

१६.३ निष्कर्ष

तेजेंद्र शर्मा द्वारा रचित कहानी “कब्र का मुनाफा” कब्र की अडवांस बुकिंग से प्रारंभ होती है और वही समाप्त भी होती है। खलील और नजम गहरे मित्र हैं और दोनों पाकिस्तानी है, लेकिन इंग्लैंड के रहने वाले हैं।

खलील का स्वभाव ऐसा है कि वह शिया मुसलमान के अलावा हर धर्म के इंसान से चिढ़ता है इसीलिए उसने अपने मरने से पहले ही कब्रे अपने स्तर के लोगों के साथ बुक की हैं, ताकि उसके पास मोची प्लंबर की कब्रे न हों। खलील सब कुछ अपने कंट्रोल में रखना चाहता है, चाहे उसके बीवी-बच्चे हो या फिर कंपनी के क्लर्क। उसे अपनी पत्नी से भी चिढ़ है क्योंकि वह हमेशा

हिंदुस्तान के पक्ष मे बात करती है। खलील को ऐसा लगता है जो वो करती है वही सही है। अचानक जब नादिरा कब्रे कैंसिल करने को कहती है तो खलील कहता है कैंसिलेशन से नुकसान हो जायेगा। लेकिन यह कहकर कब्रे कैंसिल करती है कि उसकी भरपाई वह खुद कर देगी। जब बाद में कैंसिलेशन के बाद पता चलता है कि अब इन्फ्लेशन की वजह से कब्रो की कीमत सात सौ पाउंड से बढ़कर ग्यारह पाउंड हो गयी है यानि कि कुल चार सौ पाउंड का मुनाफा हो गया है।

१६.४ संदर्भ सहित व्याख्या

"देखिए मैं पाकिस्तान में कोइ धंधा नहीं करूँगा. एक तो आबिदा वहाँ जाएगी नहीं, दूसरे अब तो बुश्रा का भी सोचना पड़ता है,और तीसरा यह कि अपना तो सारा मुल्क ही कर्प्तिओं का मारा हुआ है. इतनी रिश्वत देनी पड़ती है कि दिल करता है सामने वाले को चार जूते लगा दूँ ऊपर से नीचे तक सब करप्ट अगर हम दोनों को मिल कर कोइ काम शुरू करना है तो यहीं इंग्लैंड में रह कर करना होगा।"

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश बी.ए.भाग प्रथम के पाठ्य पुस्तक "कब्र का मुनाफा" नामक कहानी से लिया गया है। इसके लेखक "तेजेंद्र शर्मा जी" हैं। इस कथा में लेखक ने विदेश में रहने वाले दो मुसलमान परिवारों के बारे में वर्णन किया है। विदेश में होते हुए भी इनके पास वह सब कुछ है जो अच्छा जीवन जीने के लिए चाहिए होता है, लेकिन इन्हें अपना खुद का कारोबार करना है, ताकि मरने के बाद भी इन्हें सब याद करें।

प्रसंग :- लेखक ने यह कहानी भारत और पाकिस्तान के बंटवारे के बाद भारत से पाकिस्तान जाकर बसने वाले दो मुसलमान परिवारों के बारे में लिखी है, जो अब विदेश (इंग्लैंड) में रहते हैं। खलील और नजम ने अपने जीवन के तैंतीस साल यूरोप की कंपनियों में होम कर दिया। लेकिन अब वे चाहते हैं कि उनका खुद का कोई कारोबार हो। इसी का वर्णन इस कहानी में किया गया है।

व्याख्या :- खलील और नजम दोनों ड्राइंग रूम में बैठकर योजना बनाते हैं कि क्या काम और कहां किया जाए। पूरे लंदन में एक नजम ही है जो खलील के घर शराब पी सकता है और एक खलील ही है जो नजम के घर सिगरेट पी सकता है। लेकिन दोनों अपना-अपना नशा खुद साथ लाते हैं- सिगरेट भी और शराब भी।दोनों अपने बीवी बच्चों को अपना समय देने के अलावा सब कुछ देते हैं।

नजम, खलील से कहता है कि देखिए भाई साहब मैं पाकिस्तान में काम नहीं करुंगा। क्योंकि उसकी पत्नी भारत में पढ़ी-लिखी और वही की रहने वाली

है, तो वह पाकिस्तान में बिल्कुल नहीं रहेगी। और दूसरी तरफ वह दूसरी औरत बूश्रा है जिससे उसका (नजम) का संबंध है, वह इंग्लैंड में रहती है। नजम, खलील से यह भी कहता है कि दूसरा हमारा मुल्क भी तो करप्शन से भरा हुआ है। वह गुस्से में यह भी कहता है कि इतनी रिश्वत देनी पड़ती है, दिल तो करता है सामने वाले को चार जूते लगा दूँ। ऊपर से लेकर नीचे तक सब के सब करप्ट।

नजम का स्वभाव खलील से अलग है वह अगर कुछ गलत है तो निष्पक्ष बोलता है चाहे वह उसके ही मुल्क के बारे में क्यों ना हो। लेकिन खलील, नजम से बिल्कुल अलग है। वह रहता जरूर इंग्लैंड में है लेकिन वह बिल्कुल अपने मुल्क के ही पक्ष में रहकर बोलता है।

फिर नजम सब कुछ सोचने, बताने और समझने के बाद कहता है कि अगर हमें कोई काम करना है तो मिलकर यही करना होगा।

विशेष:- कहानी का पूरा वातावरण विदेश का है। पात्रों के बोलचाल की भाषा में उर्दू और अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है। कहीं-कहीं पर खलील द्वारा अभद्र शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। कहानी प्रारंभ ही होती है कब्र से और अंत भी कब्र पर होता है। धर्म और धंधा दोनों के प्रति खलिल के विचार प्रस्तुत करना कहानी का उद्देश्य है।

१६.५ बोध प्रश्न

1) 'कब्र का मुनाफा' कहानी के परिवेश पर प्रकाश डालिए।
2) कहानी के माध्यम से खलील और नजम के संवादों की चर्चा कीजिये।

एक वाक्य में उत्तर लिखिए :-

1) खलील जैदी और नजम जमाल कहाँ रहते हैं

उत्तर :- खलील जैदी और नजम जमाल इंग्लैंड में रहते हैं।

2) खलील और नजम को कौन सी बुरी लत थी

उत्तर :- खलील को सिगरेट और नजम को शराब पीने की बुरी लत थी।

3) खलील और नजम ने कब्रें कहाँ बुक करवायीं थीं

उत्तर :- खलील और नजम ने कब्रें कार्पेंड्स पार्क में बुक करवायीं थीं।

4) कब्रें कैंसिल करवाने पर उन्हें कितने पाउंड का फायदा हुआ

उत्तर :- कब्रें कैंसिल करने पर उन्हें कुल चार सौ पाउंड का फायदा हुआ।

5) 'कब्र का मुनाफा' कहानी के रचनाकार का नाम लिखिए।

उत्तर :- 'कब्र का मुनाफा' के रचनाकार तेजेंद्र शर्मा जी हैं।

❖❖❖❖

इकाई -१७

कहानी - ८

‘दलित ब्राह्मण’ - सत्यप्रकाश

इकाई की रूपरेखा :

१७.0 इकाई का उद्देश्य
१७.१ लेखक परिचय
१७.२ कहानी की कथावस्तु
१७.३ निष्कर्ष
१७.४ संदर्भ सहित स्पष्टिकरण
१७.५ बोध प्रश्न

१७.0 इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्ध कथाकार सत्यप्रकाश जी का परिचय पढेंगे। कहानी के कथ्य से परिचित हो सकेंगे। कहानी का उद्देश्य समझ सकेंगे कहानी के संवाद एवं भाषाशैली से परिचित हो सकेंगे।

१७.१ लेखक परिचय

‘दलित ब्राह्मण’ कथा “सत्यप्रकाश” द्वारा रचित है। ‘दलित ब्राह्मण’ सत्य प्रकाश जी की चर्चित कहानी है। सत्यप्रकाश जी को भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा अंबेडकर फेलोशिप सम्मान से सम्मानित भी किया गया है।

यह कहानी तीन मित्र विजयरंजन कुरील, शिवदत्त और गौरी शंकर माहेश्वरी की है जो भद्रजन सरकार में अधिकारी हैं। यह कहानी जातिवाद की समस्या पर आधारित है। शिवदत्त धर्म के पैमाने से बौद्ध है। विजयरंजन और गौरीशंकर दलित हैं। विजयरंजन का धर्म उन्हें स्वयं ही मालूम नहीं है। वैसे उसे धर्म के नाम से चिढ़ है।

लेकिन उन तीनों की दोस्ती में धर्म बाधा नहीं है। शिवदत्त अपना सामाजिक दायित्व सच्चाई और न्याय से करता है। कुरील केवल समाज और दुनिया के नाम पर अपना गुस्सा दिखाता तो है लेकिन स्वयं अपना दायित्व सही ढंग से नहीं निभाता। इसी के आधार पर यह पूरी कहानी लिखी गई है।

१७.२ कहानी की कथावस्तु

दलित ब्राह्मण कहानी का परिवेश कानपुर शहर से लिया गया है। जहां तीन मित्र विजयरंजन कुरील, गौरीशंकर माहेश्वरी और शिवदत्त तीनों भद्रजन भारत सरकार में उच्चाधिकारी है। पूरा वातावरण समाज, धर्म और जात पात को लेकर दर्शाया गया है। कुरील को ऐसा लगता है कि केवल ब्राह्मण या किसी और सवर्ण जाति के लोग दलितों के साथ अन्याय करते हैं। लेकिन वह स्वयं अपनी जिम्मेदारी पूरे सही तरीके से नहीं निभाता है। कहानी का वातावरण ऐसा दिखाया गया है कि शोषण कोई भी करें लेकिन दोष केवल ब्राह्मणों या दूसरे सवर्णों पर लगाया जाता है।

कहानी प्रारंभ में एक दिन कुरील साहब गुस्सा होते हुए समाज को कोसते कहते हैं कि समाज ने मुझे क्या दिया? मैं समाज की परवाह क्यों करूं? शिवदत्त उन्हें समझाते हुए कहता है कि आज हम, आप जिस पद पर हैं हमें वहां पहुंचाने में समाज ने भी त्याग और अपना योगदान दिया है। समाज ने इसमें अपनी अहम भूमिका निभाई है। तो हमें भी अपने सामाजिक दायित्वों को कभी नहीं भूलना चाहिए। समाज के हितों की रक्षा के प्रति कटिबद्ध होना चाहिए।

गौरीशंकर माहेश्वरी स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि सब मिला कर देखें तो आज जाति-पात, धर्म आदि ये चीजें और बढ़ रहे है। जाति, वर्ग, धर्म, संप्रदाय के नाम पर वैमनस्य बढ़ रहा है। फर्क बस इतना है पहले जातिय घृणा लोगों में बाहर थी अब अंदर है। खाली छुआछूत खत्म होने का मतलब यह थोड़े ही है कि जात पात या जातिय घृणा खत्म हो गई।

तीनों जब दफ्तर से छूटते तो घंटों बैठकर बातें करते और गप्पे-शप्पे मारते फिर घर जाते। एक रोज कुरील को दफ्तर आने को लेट हो जाता है माहेश्वरी और शिवदत्त उसका इंतजार करते हैं। कुरील जब आए तो दोनों ने पूछा कहां रह गए थे इतनी देर कैसे हो गई?बार-बार पूछने पर कुरील कहता है कि "मै आपकी तरह दब्बू अधिकारी नहीं हूं। मैं आज तक एक भी डी.पी.सी की बैठक में नहीं गया। मैं तो साफ कह देता हूं। फाइल घर लाओ। जिसे जरूरत होती है सारी फाइलें तैयार करके घर लाता है। घंटों बैठता हूं, तब जाकर हस्ताक्षर करता हूं। खुशामद भी करते हैं, चढ़ावा भी चढ़ाते हैं। वह भी खुश, हम भी खुश।"

दोनों मित्र कुरील की और दोनों आश्चर्य से देखते हैं कि जो व्यक्ति कुछ दिन पहले समाज को कोस रहा था कि समाज ने उसे क्या दिया है? आज वही समाज की व्यवस्था को भ्रष्ट कर रहा है। वैसे अब तक तो यह सारे दोष ब्राह्मणों या दूसरे सवर्णों पर लगाये जाते थे। आमतौर पर अब तक ब्राह्मणों पर यह आरोप लगता रहा है कि उन्होंने दलित समाज के साथ अन्याय किया है।

माहेश्वरी, कुरील को समझाते हुए कहते हैं कि सही- गलत तो विवाद का विषय हो सकता है। शिवदत्त, कुरील साहब को समझाते हुए कहते हैं कि मुझे संतोष है कि मैंने किसी के साथ ना अन्याय किया है और ना होने दिया। एक-दूसरे को कहने-सुनाने और समझाने के बाद तीनों एक दूसरे को परस्पर नमस्कार करते हुए वह अपने-अपने घरों को चल देते हैं।

घटना के 6 महीने बाद एक दिन कुरील साहब समय के अनुसार नहीं पहुंचे, तो शिवदत्त और माहेश्वरी साहब चिंतित हुए और बोले चलिए देख आते हैं। तो कुरील साहब रास्ते में ही मिल जाते हैं वे बताते हैं कि उनके साथ बड़ा अन्याय हुआ है।

दरअसल बात ये होती है कि प्रमोशन की लिस्ट में कुरील साहब का नाम नहीं आता, उनसे जूनियर को प्रमोशन मिल जाता है, लेकिन उनको नहीं। कुरील साहब कहते हैं धांधलेबाजी चल रही है। कुरील साहब गुस्सा दिखाते हुए बताते हैं हेडक्वार्टर की डी.पी.सी में भी एस.सी. / एस.टी. का मेंबर भी होता है। जरूर उसी ने फाइल बिना स्टडी किए हस्ताक्षर कर दिया होगा। वह भड़कते हुए बोलते हैं एक बार बस पता लगा लूं फिर गद्दार समाजद्रोही को छोड़ूंगा नहीं। माहेश्वरी कहते हैं मैं आपको यही बता देता हूं इसमें हेड क्वार्टर से पता करने की क्या बात है? कुरील साहब ने जिज्ञासा प्रकट की और पूछा कौन हो सकता है।

माहेश्वरी साहब के मुंह से यंत्रवत निकल गया, "और कौन होगा कुरील साहब, होगा कोई दलित ब्राह्मण। यह सुनते ही कुरील साहब का चेहरा पीला पड़ जाता है। काटो तो खून नहीं। शिवदत्त जी कुरील साहब के कंधे पर हाथ रखते हुए कहते हैं, "चलो कुरील साहब, घर चलो। निकालना ही होगा कोई ना कोई तरीका इन दलित ब्राह्मणों से निपटने का।"

१७.३ निष्कर्ष

'दलित ब्राह्मण' कहानी में लेखक ने जात पात के नाम पर होने वाली लापरवाही व भ्रष्टाचार का चित्रण किया है। कहानी में तीन मित्र शिवदत्त, गौरीशंकर माहेश्वरी और विजय रंजन कुरील है। शिवदत्त धर्म से बौद्ध धर्म और शेष दोनों दलित हैं। माहेश्वरी और शिवदत्त समाज के प्रति अपने दायित्व को

पूरी ईमानदारी के साथ निभाते रहे हैं। किन्तु कुरील साहब एक तरफ तो समाज को कोसते हैं कि समाज ने उन्हें क्या दिया। और खुद समाज के प्रति उनके क्या दायित्व है वह भूल जाते हैं। जिसका खामियाजा भी उन्हें भुगतना पड़ता है। उनके जैसे ही काम करने वाला कोई भ्रष्ट पदाधिकारी अपनी लापरवाही से कुरील जी का नुक्सान कर देता है। धन के लालच में किये गये कार्य का खामियाजा हमें खुद ही भुगतना पड़ सकता है। कुरील जी के माध्यम से इस कथा में यही बताने का प्रयास किया गया है।

१७.४ संदर्भ सहित स्पष्टिकरण

`फर्क तो खैर बहुत पड़ गया माहेश्वरी साहब,हम ब्राह्मणों या सवर्णों की आलोचना और शिकायत कर लेते थे उन्हें कोस लेते थे कि वे हमारे साथ अन्याय कर रहे हैं वे हमारा भला नहीं चाहते इसलिए हमें हर क्षेत्र में प्रातिनिधित्व चाहिए. अब चूकि कूरिल साहब भी दलित हैं,इन महाशय की शिकायत हम उस रूप में नहीं कर सकते।'

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश बी.ए.प्रथम वर्ष की पाठ्य पुस्तक से संकलित "दलित ब्राह्मण" नामक कहानी से लिया गया है। इसके लेखक "सत्यप्रकाश जी" हैं। लेखक ने इस कहानी में मनुष्य के सामाजिक दायित्वों के बारे में बताया है कि सभी को अपने कर्तव्य निभाने चाहिए चाहे वह ब्राह्मण या सवर्ण हो या फिर दलित।

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने व्यक्ति के सामाजिक दायित्वों के बारे में बताया है, कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने सामाजिक दायित्वों को कभी नहीं भूलना चाहिए। समाज के हितों की रक्षा के प्रति कटिबद्ध होना चाहिए। चाहे वह दलित हो या फिर ब्राह्मण या अन्य कोई सवर्ण।

व्याख्या :- जब शिवदत्त और माहेश्वरी साहब को पता चलता है कि कुरील साहब ने रिश्वत लेकर फाइल बिना पढ़े हस्ताक्षर कर दिये, तो उन्हें बहुत आश्चर्य होता है। माहेश्वरी तब कहते हैं कि कुरील साहब अभी-अभी आप ही व्यवस्था की बातें कर रहे थे। व्यवस्था के तहत ही तो आपको दलितों का प्रतिनिधि बनाया गया है।

माहेश्वरी साहब ने स्पष्ट करते हुए कहा कि आमतौर पर अब तक ब्राह्मणों पर यह आरोप लगता रहा है कि उन्होंने दलित समाज के साथ अन्याय किया है। जब आपने भी यही किया तो क्या फर्क पड़ता है? शोषण भी करें। इसका अर्थ यह हुआ कि आप भी ब्राह्मण है।

शिवदत्त माहेश्वरी साहब से कहता है कि फर्क तो बहुत पड़ा है। क्योंकि तब हम ब्राह्मणों या दूसरे सवर्णों की बुराई और शिकायत करके खुद को संतुष्ट

कर लेते थे। उन्हें कोस लेते थे कि वह हमारे साथ अन्याय कर रहे हैं। सवर्ण जाति के लोग हमारा भला नहीं चाहते, इसलिए दलित समाज को हर क्षेत्र में प्रतिनिधित्व चाहिए। शिवदत्त स्पष्ट करते हुए कहते हैं चूँकि अब कुरील साहब भी दलित हैं, इन महाशय की शिकायत हम उस रूप में नहीं कर सकते हैं। कुरील साहब की इन हरकतों से शिवदत्त साहब के हृदय पर बहुत आघात पहुँचता है।

तात्पर्य यह है कि व्यक्ति चाहे कोई भी हो दलित हो या ब्राह्मण या दूसरे सवर्ण समाज की व्यवस्था को बनाये रखने के लिये उन्हें अपने कर्तव्यों और दायित्वों का पालन पूरी ईमानदारी के साथ करना चाहिए न की एक जाति दूसरे जाति पर दोष लगाये। व्यक्ति को ऐसा अवसर ही नही देना चाहिए कि जात-पात पर प्रश्न उठे या फिर भेद-भाव की भावना उत्पन्न हो।

विशेष :- समाज में फैली जातिवाद की समस्या के आड़ में होने वाले भ्रष्ट कार्यों पर प्रकाश डाला गया है। भाषा-बोलचाल की सरल और प्रवाहपूर्ण भाषा है। एकाध स्थान पर अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है। कहीं-कहीं पर मुहावरों का प्रयोग हुआ है, जिससे कथन में स्पष्टता आ गई है जैसे-ठगे से रह जाना,चेहरा पीला पड़ जाना।

१७.५ बोध प्रश्न

1) 'दलित ब्राह्मण' कहानी के तीनों पात्रों के संवादों को अपने शब्दों में लिखिए।
2) कहानी की मूल समस्या पर प्रकाश डालिए।

एक वाक्य में उत्तर लिखिए : -

1) शिवदत्त माहेश्वरी और कुरील तीनों कहाँ कार्यरत हैं

उत्तर :- तीनों भद्रजन भारत सरकार में उच्चाधिकारी हैं।

2) कुरील साहब के साथ क्या अन्याय हुआ

उत्तर :- कुरील साहब के साथ ये अन्याय हुआ कि उनके जूनियर्स को प्रोमोट कर दिया गया और उनका प्रमोशन नहीं हुआ।

3) रिश्वत लेकर हस्ताक्षर करने की ग़लती कौन से साहब करते थे

उत्तर :- रिश्वत लेकर हस्ताक्षर करने का काम कुरील साहब करते थे।

4) किसकी बात से कुरील साहब का चेहरा पीला पड गया

उत्तर : - माहेश्वरी साहब की 'दलित ब्राह्मण' वाली बात सुन कर कुरील साहब का चेहरा पीला पड़ गया।

5) 'दलित ब्राह्मण' कहानी के लेखक कौन हैं

उत्तर :- दलित ब्राह्मण कहानी के लेखक सत्यप्रकाश जी हैं।

❖❖❖❖

इकाई -१८

निबंध लेखन

इकाई की रूप रेखा

१८.१ इकाई का उद्देश्य
१८.२ प्रस्तावना
१८.३ निबंध लेखन में ध्यान देने योग्य बाते ।
१८.४ निबंध के प्रकार
क) वर्णनात्मक निबंध
ख) विवरणात्मक निबंध
ग) विचारात्मक निबंध
घ) भावात्मक निबंध
ड) व्यक्तिपरक निबंध - निबंध के भाग
१८.५ निबंध के प्रारूप
१८.६ संभावित प्रश्न

१८.१ इकाई का उद्देश्य

निबंध लेखन से संबंधित इस इकाई में निबंध के विविध प्रकार की चर्चा की गई है। निबंध व्यक्ति के विचारों की अभिव्यक्ति करने का माध्यम है। इस माध्यम का प्रयोग कैसे किया जाए बताया गया है । निबंध कैसे लिखा जाए यह बताना इकाई का उद्देश्य है ।

१८.२ प्रस्तावना

साहित्य को दो विधाओं में विभाजित किया गया गद्य और पद्द, गद्द साहित्य को अनेक विधाओं में बाँटा गया है। जिसमे से निबंध एक है। निबंध का शाब्दिक अर्थ है नि+बंध अर्थात क्रमबध्द और व्यवस्थित लेख । इसे अंग्रेजी के कंपोजिशन और एस्से के अर्थ में ग्रहण किया जाता है ।

निबंध व्यक्ति के विचार और व्यक्तित्व को प्रकाश में लाने का माध्यम है । लेखक निबंध के माध्यम से किसी विषय की संपूर्ण जानकारी देता है ।

१८.३ निबंध लेखन में ध्यान देने योग्य बाते

१. विषय की विस्तृत जानकारी होनी चाहिए।
२. विषय का शोध करना चाहिए।
३. विषय से संबंधित सामग्री इकट्ठी करनी चाहिए ।

४. विषय की भाषा सरल और सुंदर हो । ताकि पाठक वर्ग उसे आसानी से समझ सके ।
५. विषय रूचिपूर्ण होना चाहिए ।
६. मुहावरों और लोको क्तियों के द्वारा निबंध को आकर्षक बनाया जा सकता है ।
७. शब्दों के चयन में सावधानी बरतनी चाहिए ।
८. संपूर्ण जानकारी देना ।
९. लेखक के विचार निबंध के माध्यम से स्पष्ट हो ।
१०. भाषा सरल एवं सहज़ हो ।

१८.४ निबंध के प्रकार

निबंध के निम्नलिखित प्रकार है, जो इस तरह है –

१. वर्णनात्मक निबंध : वर्णनात्मक निबंध में लेखक की सच्ची परीक्षा इसमें होती है । कल्पना तथा दर्शन के सहारे वस्तु अथवा स्थान का चित्रण किया जाता है, वर्णनात्मक निबंध कल्पना प्रधान होते है।

२. विवरणात्मक निबंध : इस प्रकार के निबंधो में कल्पना का महत्वपूर्ण स्थान है। आत्मकथा, ऐतिहासिक घटना, जीवन चरित्र आदि का आकर्षक रूप में प्रस्तुत करना।

३. विचारात्मक निबंध : इस प्रकार के निबंधों में लेखक को अपनी बुध्दिमत्ता को सिध्द करना होता है। मनुष्य का संपूर्ण चितंन अध्ययन और मनन इस प्रकार के निबंधो का विषय होता है। तर्क-विर्तक और खण्डन–मण्डन इसकी शैली है। ऐसे निबंधो के रचनाकार स्पष्ट एंव सुलझे हुए होते है।

४. भावात्मक निबंध : इस प्रकार के निबंधो में भावनाओं का महत्व है। इसका संबंध ह्दय अथवा भावना से अधिक होता है। बुध्दि–तत्व से यहाँ अधिक कार्य नहीं लिया जाता। ऐसे निबंध सीधे-सीधे लेखक की भावनाओ से जुड जाता है।

५. व्यक्तिपरक निबंध : यह भावात्मक निबंध का ही मिलता-जुलता रूप है। ऐसे निबंधो का आधार या तो लेखक स्वयं होता है अथवा उसके निज के संपर्क से आये व्यक्ति सभी प्रकार के संस्मरण और जीवनीपरक निबंध इसके उदाहरण है ।

निबंध के भाग : निबंध के लेखन से समानता नहीं है अतएव उसके शिल्प को तीन भागो में बॉटा जा सकता है।

१. प्रस्तावना अथवा भूमिका
२. व्याख्या एवं प्रतिपादन
३. उपसंहार अथवा निष्कर्ष

१) प्रस्तावना : निबंध का पहला भाग है । निबंध की शुरूवात इस तरह करनी चाहिए, ताकि पाठक विषय से बंध जाए ।

२) **व्याख्या एवं प्रतिपादन :** विषय की व्याख्या करते समय ध्यान देना चाहिए कि उसके वाक्य छोटे हो क्रम–बध्द हो। वाक्य या परिस्थिति के अनुसार मुहावरा या कहावतों का प्रयोग किया जाए । व्याख्या इस प्रकार हो कि लेखक के ह्रदय पर अमिट छाप छोड़ सके ।

३) **उपसंहार :** निबंध में की गई व्याख्या का सारांश हो, निबंध का अंत इस प्रकार करना चाहिए कि वह अधूरा न लगे। भाषों के अनुरूप भाषा में उतार -चढाव हो। लेकिन किसी भी प्रकार की जटिलता का अनुभव पाठक को ना हो ।

१८.५ निबंध का प्रारूप

१) विज्ञान का अविष्कार

प्रस्तावना : उन्नीसवी शताब्दी से विज्ञान के विकास का युग आरंभ होता है। विज्ञान शब्द 'वि' और 'ज्ञान' से बना है। जिसका अर्थ है विशिष्ट ज्ञान। मनुष्य आज एक देश में रहकर दुसरे देश की जानकारी आसानी से प्राप्त कर लेता है। विज्ञान के द्वारा मनुष्य वर्तमान समय में चाँद पर पहुँचने में समर्थ हुआ।

प्रादुर्भाव : विज्ञान के अविष्कार के कारण आज दुनिया का नक्शा ही बदल गया है। पहले जो कार्य असंभव लगता था। अब विज्ञान के अविष्कार के कारण संभव हो पाया है प्राचीनकाल से जो अंधविश्वास और परम्परा चली आ रही थी उसे विज्ञान को माननेवालों ने तर्क–वितर्क द्वारा अमान्य सिद्ध कर दिया। अब हर पहुलओं पर वैज्ञानिक रूप से विचार किया जाता है। पुरानी बातों पर विश्वास करने वालों ने भी इस बात को स्वीकार किया।

योगदान : विज्ञान हर क्षेत्र में लगातार विकास कर रहा है। चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो या कृषी का क्षेत्र या फिर अन्य कोई। विज्ञान के अविष्कार के कारण मनुष्य का जीवन सरल और सुलभ बना। कप्युटर, टी. वी. लेपटॉप सिंचाई के नये–नये साधन हवाई जहाज आदि विज्ञान का परिणाम है। युध्द क्षेत्र में विज्ञान के विध्वंसकारी अविष्कारों ने विश्व को हिलाकर रख दिया। मगंल ग्रह तक पहुँचना ये विज्ञान के कारण ही हो सका। कैंसर, टीबी जैसी खतरनाक बिमारीयों से छुटकारा इसकी ही देन है। चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान ने मानवजीवन को नया जन्म दिया है।

विकलांगो के लिए विज्ञान जीवन दान है, मुक-बधिरो के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसने हमे आंनदमय जीवन प्रदान किया। जिससे भौतिक सुख – सुविधाओ का लाभ उठा रहे है । मीलों की दुरियाँ हम कम – से कम समय में तय करते हैं ।

उपसंहार : विज्ञान के लगातार विकास के कारण अब हमारे लिए कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है। यह सत्य है कि विज्ञान ने हमे लाभ पहुँचाया है, किंतु उससे हानि भी कम नहीं है। विज्ञान के अस्त्र-शस्त्र के कारण आतंकवाद को बढ़ावा मिल रहा है। मनुष्य मशीन बन कर रह गया है। भौतिक–सुख सुविधाओं ने मनुष्य को आलसी बना दिया है। यदि मानव–समाज इसका सकारात्मक रूप से उपयोग करे और विज्ञान को ईश्वर की देन समझे तो हमारा देश लगातर विकास करेगा।

२) भ्रष्टाचार की समस्या :

भ्रष्टाचार दो शब्दों को मिलाकर बना है – भ्रष्ट+आचार। भ्रष्ट का अर्थ है, 'बुरा' और आचार का अर्थ आचरण अर्थात भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ हुआ वह 'आचरण' जो किसी भी प्रकार से अनैतिक और अनुचित हो ।

सामान्य शब्दो में हम कह सकते है कि अपना काम करवाने के लिए या कार्य को कम समय में पूरा करने के लिए अनैतिक तरीके को अपनाना ।

जब व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए न्याय व्यवस्था द्वारा बनाये गये नियम कानूनों का उल्लंघन करता है, तो वह भ्रष्टाचार के अंतर्गत आता है ।

भ्रष्टाचार कहाँ से शुरू हुआ? यदि इस पर विचार किया जाएँ तो हम पाते है कि यह समस्या अब की नहीं है, बल्कि अँग्रेजों के समय से चली आ रही है। अंग्रेज भारतीयो. को आपस में लड़ाने के लिए कुछ स्वार्थी प्रवृत्ती वाले व्यक्ति को लालच देते थे, और भारतीयों में फूट डालते थे । यह समस्या वहीं से शुरू हुई।

लोग अपना काम शीघ्रता से कराने के लिए छोटे से लेकर सभी तरह के अफसरों को घूस देकर भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे है। हर दिन अखबार में भ्रष्टाचार की खबरे पढ़ते है। कोयला घोटाला चारा घोटाला २ जी स्पेक्ट्म घोटाले या घूसखोरी की खबरे हम देखते है।

भ्रष्टाचार कई तरह से होते है लोग अपना काम कम से कम समय में करवाने के लिए पियून, क्लर्क जैसे लोगों को घूस देते है। इस तरह का कार्य छोटे से लेकर बड़े व्यक्ति तक करते है । मीडिया में लोग पैसे देकर अपने स्वार्थवश किसी भी तरह की खबरे छापते है। हर व्यक्ति के पास सोशल नेटवर्किंग के साधन, टीवी, लेपटॉप, मोबाईल आदि उपकरण लोगो के पास है । इन उपकरणो पर खबरे जल्द ही वायरल होती है इस तरह से कई लोग अनैतिक तरीके से पैसा कमाते है ।

भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिलाने में सरकार भी पीछे नही है चुनाव के समय पैसे देकर वोट खरीदते है । ताकि चुनाव में उनकी सरकार बन सके। सत्ता में आते ही नेतागण स्वार्थपूर्ति के लिए भ्रष्टाचार मे लिप्त हो जाते है । कोई ऐसा क्षेत्र नही है जहाँ भ्रष्टाचार नही होता। व्यापार जगत में टेंडर खरीदने के लिए सरकारी अधिकारी को पैसे दिये जाते हैं। सड़को की हालत, राशन का कोटा सरकारी काम – काज इसके उदाहरण है ।

शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र हो जहाँ भ्रष्टाचार ने अपने पंख नही फैलाये है। भ्रष्टाचार केवल आर्थिक रूप से ही नहीं होता है ।उसके कई रूप है, जैसे, स्वार्थपूर्ति के लिए गलत जानकारी देना या झूठ बोलना, चीजो में मिलावट करना, कालाबाजारी आदि। इसके अलावा वे सभी कार्य को अनैतिक तरीके से किये जाते हो, जो देश या समाज के लिए हानिकारक है। भ्रष्टाचार के बढ़ते विकराल रूप को रोकने की आवश्यकता है। यदि इसे रोका न गया तो देश को यह दीमक की तरह खोखला कर देगी।

सोशल मीडिया का समाज पर बढ़ता प्रभाव

सोशल मीडिया का सामान्य अर्थ है सामाजिक माध्यम अर्थात ऐसा माध्यम जो समाज की गतिविधियों से जोड़ सके। सोशल मीडिया अन्य मीडिया से भिन्न है। यह पूरी दुनिया को एक

munotes.in

नेटवर्क से जोडता है। आज भारत में रहनेवाला व्यक्ति बड़े ही आसानी से विदेश में रहनेवाले के साथ जुड़ जाता है । यह सोशल मीडिया के ही कारण संभव हो सका हैं।

यह व्यक्तियों और समुदायों के साझा सहभागी बनाने का माध्यम है। इसका उपयोग सामाजिक संबंध के अलावा उपयोग कर्ता सामग्री के संशोधन के लिए उच्च पारस्परिक मंच बनाने के लिए मोबाईल और वेब आधारित उपकरण के द्वारा भी देखा जा सकता है।

इंटरनेट, सोशल – नेटवर्किग साईट- स्काईप वाट्सेप, इस्टाग्रांम, फेसबुक, विभिन्न ब्लॉग्स आदि सभी सोशल मीडिया का हिस्सा है । इन्ही माध्यमो के कारण आज पूरी दुनिया की खबर पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाती है।

आज के दौर में सोशल मीडिया जिदंगी का अहम हिस्सा बन चुका है। यह देश–विदेश की सुचनाओ को आदान–प्रदान करने का जरिया बना। सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही रुपों में इसका समाज पर प्रभाव पड़ता है। इससे व्यक्ति अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है। और साथ ही दुसरो के विचारों से जुड़ता है।

सोशल मीडिया के माध्यम से ''निर्भया' को न्याय दिलाने के लिए पूरा विश्व एक जुट हो गया था। अन्ना हजारे ने भ्रष्टाचार के खिलाफ जो मुहिम छेडी थी । उसे पूरे विश्व में फैलाने का माध्यम सोशल मीडिया से ही संभव हो सका था।

चुनाव के समय में उम्मीदवारों ने इसका खुब उपयोग किया, व्यक्ति की कला अभिव्यक्ति का अच्छा-खासा प्लेटफार्म है। लोग सोशल साइटस पर अपनी कला को अभिव्यक्त करते हैं। जिसे पूरी दुनिया देखती है। और उससे कलाकार को भविष्य में आगे बढ़ने का मौका मिलता है ।

कई वर्ष से बिछडे हुए परिवार फेसबुक के माध्यम से मिले। आज फिल्मों के ट्रेलर, टी.वी. प्रोग्राम, का प्रसारण, भी सोशल मीडिया के माध्यम से किया जा रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में सोशल मीडिया ने अहम भूमिका निभाई है। विद्यार्थियो को अब पहले की तरह जानकारी प्राप्त करने के लिए परेशानियों का सामना नही करना पडता है । यू ट्यूब, एक ऐसा माध्यम है, जो गणित, अंग्रेजी, हिन्दी आदि विषयो से संबंधित जानकारियाँ देता रहता है ।

सोशल मीडिया का एक तरफ सकारात्मक पहलु है तो दुसरी तरफ नकारात्मक भी इससे धोखाधडी, आत्महत्याएँ, लूट आदि घटनाओं को बढावा मिला है। लेकिन यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह इसका उपयोग किस रूप में करे ।

फूल की आत्मकथा

मैं एक फुल हूँ । मेरा नाम गुलाब है सभी लोग मुझसे प्रेम करते हैं। दुसरे फूल मेरी सुंदरता को देख इर्ष्या करते है। मैं पृथ्वी पर ईश्वर की सबसे सुंदर देन हूँ। सभी लोग मुझे पाने की इच्छा रखते है। जिसके भी घर जाती हूँ उसके घर की शोभा बढ़ाती हूँ।

नेताओ के कपडों पर विराज-मान हो चार चाँद लगाती हूँ। प्रेमी जब भी मुझे अपनी प्रेमिका को देते है वो खुश हो जाती है। बच्चे मेरे साथ खेलते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक सभी अवसरों में मेरा उपयोग किया जाता है।

मेरे जीवन में बदलाव तब आया, जब एक सेठ मुझे अपने घर ले गये। मुझे ले जाते समय वे बहुत खुश थे। मुझे देखते ही घर के सभी लोग झूम उठे। कई दिनों तक उन्होंने मेरा बहुत ख्याल रखा। मुझे ऐसा लगा मानों मैं स्वर्ग में आ गयी। फिर कुछ दिनों बाद कली के रूप में मेरा जन्म हुआ। एक दिन जब उषा की किरण मुझ पर पड़ी तब मैं पत्तीयों का पर्दा हटाकर बाहर आयी मेरा सौंदर्य देखकर सभी के चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ पडी।घर में उत्सव जैसा माहौल बन गया ।

मेरे रूप-रंग की चर्चा सभी जगह होने लगी। आस-पास के फूल भी मेरी तरह प्यार और स्नेह पाना चाहते थे। सभी मुझे छु-कर अपना मन बहलाते थे। धीरे-धीरे मेरा यौवन निखरता गया। एक नन्ही-सी लड़की मुझे देखकर खुश हुई और चुपके से मुझे डाली से तोडकर अपने घर ले गयी। एक अच्छे –से फूलदान में उसने मुझे रखा। दुसरे दिन वह मुझे मंदिर ले गई और उठाकर भगवान के चरणों में समर्पित कर दिया। ईश्वर के चरणों मे जाकर मेरा जीवन धन्य हो गया।

दुसरे ही दिन मंदिर के पुजारी ने मुझे बाहर फेक दिया। दिन–ब–दिन मेरा यौवन मुरझाता गया। आते–जाते लगो मुझ पर पैर रखकर जाते । मेरी तरफ कोई देखता भी नही। अब मैं एक ही जगह पड़ी हुई हूँ। प्रकृति का नियम है कि जो एक दिन धरती पर आया है, वह एक दिन यहाँ से जायेगा भी। अब सिर्फ धरती पर से अपने जाने का दिन गिन रही हूँ ।

१८.६ संभावित प्रश्न

१) निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखिए ।

१) गाँव का मेला

२) १५ अगस्त

३) किसान की आत्मकथा

४) स्वदेश प्रेम

५) साहित्य और समाज

६) मुबई की बारिश

७) प्रदूषण समस्या

८) यदि मैं क्रिकेटर होता

९) यदि मैं शिक्षा मंत्री होता

१०) नोटबंदी का प्रभाव

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१९

भाषा दक्षता

(i) लिंग और वचन

इकाई की रुपरेखा

१९.१ प्रस्तावना
१९.२ इकाई का उद्देश्य
१९.३ लिंग
१९.४ वचन
१९.५ संभावित प्रश्न

१९.१ प्रस्तावना :

जिस संज्ञा शब्द से पुरूष जाति और स्त्री जाति का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं। किसी संज्ञा पद के एक या एक से अधिक होने का बोध कराने वाला वचन कहलाता है। किसी भी भाषा को शुद्ध-शुद्ध बोलने लिखने के लिए इनका ज्ञान आवश्यक है।

१९.२ इकाई का उद्देश्य :

हिन्दी भाषा की शुद्धता के लिए लिंग और वचन का शुद्ध-शुद्ध ज्ञान होना आवश्यक हैं क्योंकि लिंग और वचन के कारण ही कारक और क्रिया के स्वरूप में परिवर्तन होता है। अगर इनमें अशुद्धियाँ होंगी तो क्रिया में तथा फिर पूरे वाक्य में विकार उत्पन्न होगा। अतः कहा जा सकता है कि भाषा की शुद्धता, समृद्धि और सम्पन्नता प्रदान करना लिंग और वचन का उद्देश्य है।

१९.३ लिंग :-

जिस शब्द से पुरुष जाति और स्त्री जाति का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं।

हिन्दी में लिंग दो प्रकार के होते हैं :

१) पुल्लिंग

२) स्त्रीलिंग

१) पुल्लिंग : जो शब्द पुरूष जाति का बोध कराएँ, उन्हें पुल्लिंग शब्द कहते हैं। जैसे - पुरूष, लड़का, राजा, माली, छात्र, दादा, कवि आदि।

२) स्त्रीलिगं : जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराएँ उन्हें स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं। जैसे स्त्री, लड़की, रानी, मालिन, छात्रा, दादी, कवयित्री, आदि।

लिंग - भेद संबंधी नियम -

हिन्दी में तीन प्रकार के शब्द हैं। पहले, जो पुरुषजाति से शारीरिक रूप से संबंधित हैं। दूसरे, जो शारीरिक लक्षणों से स्त्री जाति के हैं। तीसरे, जिनमें पुरूष या स्त्री जैसा कुछ नहीं है जैसे - पहाड़, नदी, पुस्तक, कमल आदि। तीसरे प्रकार के शब्दों का लिंग निर्णय परंपरा के आधार पर होता है। लंबे समय से जो शब्द पुल्लिंग के रूप में प्रयुक्त होते आ रहे हैं, उन्हें पुल्लिंग मान लिया गया है। शेष शब्दों को स्त्रीलिंग मान लिया गया है। वास्तव में उन्हें पुल्लिंग या स्त्रीलिंग मानने का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। इसीलिए सभी नियमों के अपवाद पाए जाते हैं। कुछ स्त्रीलिंग-पुल्लिंग ऐसे होते हैं जो सदैव स्त्रिलिंग या पुल्लिंग ही बने रहते हैं। उन्हें नित्य स्त्रीलिगं या नित्य पुल्लिंग कहा गया है। इन शब्दों के आगे स्पष्टीकरण के लिए नर या मादा लिखा जाता है।

नित्य पुल्लिंग : भेड़िया, मच्छर , पक्षी, उल्लू, गिद्ध, बिच्छू, खटमल आदि।
नित्य स्त्रीलिंग : मक्खी, मधुमक्खी, तितली, मछली, कोयल, गिलहरी, चील, जूँ आदि।
उभयलिंगी : कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो स्त्रीलिंग या पुल्लिंग दोनों में एक जैसे होते हैं। जैसे डॉक्टर, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, इंजीनियर, मैनेजर आदि। इनके लिंग का निर्णय क्रिया के प्रयोग द्वारा किया जाता है। जैसे –

डॉक्टर अभी आ रही हैं। (स्त्रीलिंग)
डॉक्टर अभी आ रहे हैं। (पुल्लिंग)

जो संज्ञाएँ प्राणीवाचक नहीं हैं, उनके लिंग-निर्धारण में कुछ समस्या अवश्य आती है परन्तु प्रयोग करते-करते ये भी समझ में आ जाते हैं। अपवादों के साथ-साथ इनसे अधिकांश शब्दों की समस्या हल हो जाती है। इनके लिंग निर्धारण के कुछ नियम यहाँ दिए जा रहे हैं।

१) प्राय : पुल्लिंग शब्द

- देशों के नाम - चीन, भारत, अमेरिका, रूस, पाकिस्तान, जापान, इंग्लैंड।
- पर्वतों के नाम - हिमालय, कैलाश, अरावली, विंध्याचल, गोवर्धन।
- पेड़ों के नाम - आम, नीम, जामुन, गुलमोहर, पीपल, बरगद
- धातुओं के नाम - सोना, ताँबा, पीतल, लोहा (अपवाद - चाँदी, कलई, पीतल)
- बहुमूल्य रत्नों के नाम - हीरा, माणिक्य, मोती, पन्ना, पुखराज, नगीना, (अपवाद - मणि)
- अनाजों के नाम - गेहूँ , चावल, चना, जौ, बाजरा, (अपवाद - मक्कई, ज्वार, जई)
- ग्रहों के नाम - सूर्य, चाँद, मंगल, बुध, वृहस्पति (अपवाद- पृथ्वी)
- समुद्रों के नाम - हिंद महासागर, प्रशांत महासागर, अरब सागर

munotes.in

- समय सूचक शब्द - समय, क्षण, घंटा, मिनट, सेकेंड, सप्ताह, दिन, मास, वर्ष, युग, सवेरा, सायंकाल, प्रभात (अपवाद - संध्या)
- मासों के नाम - चैत्र, आषाढ़, कार्तिक, मार्च, अप्रैल, जून, जुलाई, अगस्त, सितंबर अक्टूबर, नवंबर, दिसंबर (अपवाद - मई)
- समूहों के नाम - झुंड, समाज, वर्ग, समुदाय, समूह, दल, संघ आदि ।
- द्रव्य पदार्थ - तेल, शरबत, दूध, पानी, अर्क (अपवाद - लस्सी, शराब)
- शरीर के कुछ अंग - सिर, हाथ, पैर, बाल, नेत्र, नयन, चक्षु, अँगूठा, पेट, दाँत, गाल, कान, मुँह, पाँव, ओठ, फेफड़ा, ह्रदय आदि।

व्यवसाय सूचक शब्द : व्यापारी, सचिव, आयुक्त, सेनापति, संवाददाता, उद्योगपति, सैनिक, कहानीकार, साहित्यकार, चिकित्सक, वकील।
शब्दों के अंत में 'त्र' हो तो प्रायः पुल्लिंग होते हैं - नेत्र, पात्र, चरित्र, अस्त्र, शस्त्र, वस्त्र, मित्र
'दाता' प्रत्यय वाले शब्द - मतदाता, रक्तदाता, श्रम दाता

२) प्रायः स्त्रीलिंग शब्द –

- नदियों के नाम - गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, नर्मदा, (ब्रह्मपुत्र - अपवाद)
- लिपियों के नाम - देवनागरी, ब्राह्मी, रोमन, गुरूमुखी, फारसी, शारदा।
- भाषाओं के नाम - गुजराती, हिन्दी, कश्मीरी, नेपाली, उर्दू, असमिया, तमिल, बँगला आदि।
- तिथियों के नाम - प्रथमा, द्वितिया, चतुर्थी, त्रयोदशी, सप्तमी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, आदि।
- 'इया' प्रत्यय वाले शब्द - खड़िया, बुढ़िया, दुखिया, चिड़िया, दुनिया, पुलिया (अपवाद- भेड़िया, डाकिया, भेदिया)
- आकारान्त शब्द - सभा, दया, परीक्षा, भाषा, सूचना, कला, आशा, विपदा, बाधा आदि।
- इकारान्त और ईकारांत शब्द - हानि, नीति, विधि, सिद्धि, शांति, समिति, नदी, लेखनी, पोथी, चिट्ठी, टोपी, रोटी, उदासी, बोली, खोली, कॉपी आदि। (अपवाद - घी, दही, मोती, पानी)

लिंग परिवर्तनः

मूलत : वे शब्द प्रायः पुल्लिंग होते हैं जिनके स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं। स्त्रीलिंग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है उन्हें स्त्रीवाची - प्रत्यय कहते हैं -

१) 'अ ' का 'आ ' बनाकर

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
छात्र	छात्रा	शिष्य	शिष्या
बाल	बाला	सदस्य	सदस्या
प्रिय	प्रिया	प्रियतम	प्रियतमा
अनुज	अनुजा	आचार्य	आचार्या
महोदय	महोदया	वृध्द	वृध्दा
अध्यक्ष	अध्यक्षा	सुत	सुता

२ 'अ ' 'आ ' का 'ई ' बनाकर

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बकरा	बकरी	घोड़ा	घोड़ी
देव	देवी	मुरगा	मुरगी
बेटा	बेटी	गोप	गोपी
ब्राह्मण	ब्राह्मणी	गधा	गधी
सुअर	सुअरी	बच्चा	बच्ची
चींटा	चींटी	तरूण	तरुणी
दास	दासी	नर्तक	नर्तकी
लड़का	लड़की	दादा	दादी
पुत्र	पुत्री	कबूतर	कबूतरी
हरिण	हरिणी	गूँगा	गूँगी

३) 'अक' का 'इका ' बनाकर

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
नायक	नायिका	बालक	बालिका
गायक	गायिका	सेवक	सेविका
पाठक	पाठिका	संयोजक	संयोजिका
दर्शक	दर्शिका	परिचायक	परिचायिका
अध्यापक	अध्यापिका	लेखक	लेखिका
साधक	साधिका	प्रेषक	प्रेषिका
याचक	याचिका	निवेदक	निवेदिका
आयोजक	आयोजिका	शासक	शासिका

munotes.in

४) ‘वान ’ से ‘वती ’ और ‘मान ’ से ‘मती ’ बनाकर

गुणगान	गुणवती	भगवान	भगवती
बलवान	बलवती	भाग्यवान	भाग्यवती
रूपवान	रूपवती	सत्यवान	सत्यवती
पुत्रवान	पुत्रवती	श्रीमान	श्रीमती
धनवान	धनवती	शक्तिमान	शक्तिमती
विद्यवान	विद्यावती	आयुष्मान	आयुष्मती

५) ‘अ /आ ’ का ‘इया ’ बनाकर

बंदर	बंदरिया	बूढ़ा	बुढ़िया
बछड़ा	बछिया	बेटा	बिटिया
चूहा	चुहिया	चिड़ा	चिड़िया
कुत्ता	कुतिया	गुड्डा	गुड़िया

६) ‘अ ’ से ‘अनी ’ बनाकर

पुर्लिंग	स्त्रीलिंग	पुर्लिंग	स्त्रीलिंग
मोर	मोरनी	सिंह	सिंहनी
भील	भीलनी	शेर	शेरनी
ऊँट	ऊँटनी	सरदार	सरदारनी
जाट	जाटनी	राजपूत	राजपूतनी

७) ‘अ /ई / ऊ’ से ‘आनी / आणी ’ बनाकर

जेठ	जेठानी	मेहतर	मेहतरानी
इंद्र	इंद्राणी	सेठ	सेठानी
देवर	देवरानी	नौकर	नौकरानी
भव	भवानी	रूद्र	रुद्राणी
चौधरी	चौधरानी	क्षत्रिय	क्षत्राणी

munotes.in

८) ‘अ /आ /ई ’ का ‘इन ’ बनाकर

साँप	साँपिन	नाग	नागिन
लुहार	लुहारिन	बाघ	बाघिन
सुनार	सुनारिन	माली	मालिन
पापी	पापिन	पड़ोसी	पड़ोसिन
धोबी	धोबिन	नाती	नातिन
कुम्हार	कुम्हारिन	ग्वाला	ग्वालिन
कहार	कहारिन	तेली	तेलिन

९) ‘अ /आ / ई /उ/ऊ /ए ’ से ‘आइन ’ बनाकर

ठाकुर	ठकुराईन	बाबू	बबुआइन
पंडित	पंडिताइन	दुबे	दुबाइन
बनिया	बनियाइन	चौबे	चौबाइन
लाला	ललाइन	गुरू	गुरूआइन
ओझा	ओझाइन	हलवाई	हलवाइन

१०) ‘अ /ई ’ का इनी / इणी बनाकर

अभिमानी	अभिमानिनी	एकाकी	एकाकिनी
हाथी	हथिनी	स्वामी	स्वामिनी
प्रार्थी	प्रार्थिनी	हितकारी	हितकारिणी
हंस	हंसिनी	आज्ञाकारी	आज्ञाकारिणी
मनोहर	मनोहारिणी	यशस्वी	यशस्विनी

११) ‘ता ’ से ‘त्री ’ बनाकर

कर्ता	कर्त्री	विधाता	विधाती
दाता	दात्री	अभिनेता	अभिनेत्री
वक्ता	वक्त्री	रचयिता	रचयित्री

munotes.in

१२) नित्य पुल्लिग शब्दों के साथ 'मादा ' जोड़कर -

खरगोश	मादा खरगोश	भेड़िया	मादा भेड़िया
गेंडा	मादा गेंडा	मगरमच्छ	मादा मगरमच्छ
भालू	मादा भालू	उल्लू	मादा उल्लू
मच्छर	मादा मच्छर	पक्षी	मादा पक्षी

१३) नित्य स्त्रीलिंग शब्दों के साथ 'नर ' जोड़कर -

चील	नर चील	गिलहरी	नर गिलहरी
छिपकली	नर छिपकली	मक्खी	नर मक्खी
कोयल	नर कोयल	मछली	नर मछली

१४) मूलतः स्त्रीलिंग शब्दों से पुल्लिंग -

जीजी	जीजा	ननद	ननदोई
मौसी	मौसा	बहन	बहनोई
भेड़	भेड़ा	भैंस	भैंसा

१५) कुछ शब्दों के स्त्रीलिग रूप बिल्कुल भिन्न होते हैं -

भाई	भावज / भाभी	सम्राट	सम्राज्ञी
कवि	कवयित्री	विद्वान	विदुषी

पुरूष	स्त्री	बिलाव	बिल्ली
वीर	वीरांगना	राजा	रानी
युवक	युवती	साला	साली
साधु	साध्वी	साला	सलहज
साहब	साहिबा	फूफा	बुआ
मर्द	औरत	ससुर	सास
मियाँ	बीवी	वर	वधू
अभिनेता	अभिनेत्री	बादशाह	बेगम
नपुंसक	बाँझ	बैल	गाय
बाप	माँ	विधुर	विधवा
नर	मादा /नारी	पिता	माता
		भाई	बहन / बहिन

munotes.in

लिंग पहचान का एक सरल ढंग यह भी है कि शब्द का बहुवचन बना लें। यदि अंत में एँ (ें) या आँ (ाँ) आए तो शब्द स्त्रीलिगं है। जैसे - पुस्तक से पुस्तकें, दवाई सें दवाइयाँ, महिला से महिलाएँ, खिड़की से खिड़कियाँ - ये सभी स्त्रीलिंग शब्द हैं ।

१९.४ वचन

किसी संज्ञा पद के एक या एक से अधिक होने का बोध करानेवाला वचन कहलाता है। जैसे- पंखा-पंखे, तितली-तितलियाँ, बहू–बहुएँ आदि। हिन्दी में वचन के दो भेद होते हैं

वचन

१) एकवचन

२) बहुवचन

१) एकवचन - जो संज्ञा पद एक होने का बोध कराए, उसे एकवचन कहते हैं जैसे चिड़िया, लड़की, तारा आदि।

२) बहुवचन - जो संज्ञा पद एक से अधिक होने का बोध कराए, उसे बहुवचन कहते हैं जैसे चिड़ियाँ, लड़कियाँ, तारे।

वचन परिवर्तन : एकवचन वाले संज्ञा पदों को बहुवचन में बदलना वचन-परिवर्तन कहलाता है। एकवचन से बहुवचन बनाते समय कुछ विशेष नियमों का पालन करना पड़ता है। पुल्िंग और स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने में अलग-अलग नियमों का पालन करना होता है ।

<u>पुल्लिग शब्दों से बहुवचन</u>

पुल्लिग शब्दों से बहुवचन बनाते समय आ से अंत होनेवाले शब्द 'ए' में बदल दिए जाते हैं।

१) आ से ए (केवल पुल्लिग शब्दों में)

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
केला	केले	लड़का	लड़के
घोड़ा	घोड़े	पत्ता	पत्ते
बेटा	बेटे	किनारा	किनारे
तारा	तारे	बस्ता	बस्ते
लोटा	लोटे	बच्चा	बच्चे
पैसा	पैसे	गधा	गधे
दाना	दाने	घंटा	घंटे
कुत्ता	कुत्ते	तोता	तोते
तना	तने	छाता	छाते

munotes.in

घड़ा	घड़े	मोहल्ला	मोहल्ले
कपड़ा	कपड़े	प्याला	प्याले
कमरा	कमरे	धागा	धागे
रास्ता	रास्ते	मुरगा	मुरगे
हीरा	हीरे	चीता	चीते

कुछ आकारांत शब्द अपवाद है जिनमें कोई परिर्वतन नहीं होता जैसे -

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
राजा	राजा	काका	काका
पिता	पिता	नेता	नेता
चाचा	चाचा	देवता	देवता
मामा	मामा	नाना	नाना

२) 'आ' से अंत होने वाले आकारांत शब्दों के अतिरिक्त अ, इ, ई, उ, ऊ से अंत होनेवाले पुर्लिग शब्दों में कोई परिवर्तन नहीं होता जैसे

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बालक	दो बालक	शेर	दो शेर
पुत्र	दो पुत्र	बाघ	तीन बाघ
कवि	तीन कवि	माली	दो माली
मित्र	तीन मित्र	हाथी	चार हाथी
पशु	दो पशु	चाकू	तीन चाकू
मुनि	तीन मुनि	चित्र	दो चित्र
साधु	दो साधु	बाघ	तीन बाघ

स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन :- स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के बहुवचन बनाते समय सभी शब्द बदलते हैं। अंत में प्रत्यय लगाकर वचन परिवर्तन किया जाता है। स्त्रीलिंग शब्दों के वचन-परिवर्तन के नियम इस प्रकार हैं –

munotes.in

१) 'अ' से अंत वाले शब्दों में 'अ' का एँ कर दिया जाता है ।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बहिन	बहिनें	कलम	कलमें
मेज	मेजें	पेंसिल	पेंसिलें
लहर	लहरें	तार	तारे
आँख	आँखें	सड़क	सड़कें
रात	रातें	बात	बातें
कमीज	कमीजें	पुस्तक	पुस्तकें
किताब	किताबें	तस्वीर	तस्वीरें

२) आकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'आ' का 'एँ' कर दिया जाता है ।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कथा	कथाएँ	बालिका	बालिकाएँ
माला	मालाएँ	महिला	महिलाएँ
लता	लताएँ	कन्या	कन्याएँ
कविता	कविताएँ	अध्यापिका	अध्यापिकाएँ
पत्रिता	पत्रिकाएँ	सभा	सभाएँ
मात्रा	मात्राएँ	कक्षा	कक्षाएँ
समस्या	समस्याएँ	चिंता	चिंताएँ

३) इकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'याँ' जोड़ दिया जाता है ।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
जाति	जातियाँ	विधि	विधियाँ
लिपि	लिपियाँ	नीति	नीतियाँ
तिथि	तिथियाँ	रीति	रीतियाँ
शक्ति	शक्तियाँ	राशि	राशियाँ
पंक्ति	पंक्तियाँ	प्रति	प्रतियाँ
रश्मि	रश्मियाँ	सिद्धि	सिद्धियाँ

munotes.in

४) ईकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'ई' को 'इयाँ ' बना देते हैं ।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
नदी	नदियाँ	लड़की	लड़कियाँ
तितली	तितलियाँ	युवती	युवतियाँ
गिलहरी	गिलहरियाँ	थाली	थालियाँ
मछली	मछलियाँ	रानी	रानियाँ
बेटा	बेटियाँ	चिट्ठी	चिट्ठियाँ
स्त्री	स्त्रियाँ	टोपी	टोपियाँ

५) उकारांत, ऊकारांत और औकारांत के साथ 'एँ' जोड़ दिया जाता है ।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ऋतु	ऋतुएँ	वधू	वधुएँ
वस्तु	वस्तुएँ	बहू	बहुएँ
धेनु	धेनुएँ	गौ	गौएँ
धातु	धातुएँ		

६) 'या ' का 'याँ ' बना दिया जाता है।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
चिड़िया	चिड़ियाँ	गुड़िया	गुड़ियाँ
चुहिया	चुहियाँ	पुड़िया	पुड़ियाँ
कुतिया	कुतियाँ	डिबिया	डिब्बियाँ
बछिया	बछियाँ	बिटिया	बिटियाँ

७) वर्ग दल या समूह के साथ गण, दल, वर्ग, वृंद जन जैसे समूहवाची शब्द लगाकर ।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
अध्यापक	अध्यापकगण	गुरू	गुरूजन
पाठक	पाठकगण	लेखक	लेखकवृंद
कवि	कविगण	अधिकारी	अधिकारी वर्ग
श्रोता	श्रोतागण	मित्र	मित्रवर्ग
टिड्डी	टिड्डीदल	मित्र	मित्रवर्ग

munotes.in

१९.५ संभावित प्रश्न

१) निम्नलिखित शब्दों का लिंग बदलिए -

कवि	भगवान	सदस्य	राक्षस
पापी	देव	शिक्षक	हलवाई
सुनार	वधू	नाती	नर कोयल
रूपवती	प्रिया	अभिनेत्री	बंदर
श्रीमान	भाग्यवान	अध्यापक	ससुर
ऊँट	अभिमानी	नगर	वर
बूढ़ा	युवक	किशोर	हाथी
सेठ	गाय	सम्राट	माली
पंडित	बालक	सिंह	संपादक
यशस्वी	धोबी	ग्वाला	गिलहरी
शिक्षिका	तरूण	पंडिताइन	गायक

२) निम्नलिखित शब्दों का वचन बदलिए -

पुस्तक	माला	चिड़िया	योद्धा
सेना	कुत्ता	खरबूजा	बच्चा
पड़ोसिन	कापी	घोड़ा	आँख
देवरानी	पत्नी	चुहिया	कविता
रानी	बूढ़ा	पिता	काका
गाय	भैसें	दरवाजा	कुर्सी
कहानी	कथा	भावना	ऋतु
बहू	नदी	बोतल	लड़की
गायिका	पुड़िया	आत्मा	माता
शक्ति	कार	बहनें	जाति

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१९.१

(ii) पर्यायवाची शब्द और विलोम शब्द

इकाई की रूपरेखा :

१९.१.१ प्रस्तावना
१९.१.२ इकाई का उद्देश्य
१९.१.३ पर्यायवाची शब्द
१९.१.४ विलोम शब्द
१९.१.५ संभावित प्रश्न

१९.१.१ प्रस्तावना :

समान अर्थ रखने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द या समानार्थी शब्द कहा जाता है जैसे 'फनी' के लिए जल, वारि, नीर, सलिल, तोय आदि शब्द इसके पर्यायवाची शब्द हैं। प्रसंग की आवश्यकता के अनुसार पर्यायवाची शब्दों में से सबसे सही शब्द का चुनाव करना भाषा-विज्ञ का काम है।

किसी भी शब्द का उल्टा, विपरीत अर्थ बताने वाला शब्द विलोम शब्द या विपरीत शब्द कहलाता है। जैसे 'अंदर' का 'बाहर', 'छोटा' का 'बड़ा', 'अच्छा' का 'बुरा'। पर्यायवाची शब्द और विपरीत / विलोम शब्द दोनों ही भाषा के अर्थग्रहण में सहायक होते हैं।

१९.१.२ उद्देश्य :

एक ही शब्द को अनेक शब्दों में, वही अर्थ रखते हुए कहना ही पर्यायवाची शब्दों का उद्देश्य होता है ।

विलोम शब्द का उद्देश्य किसी भी शब्द का विपरीत अर्थ बताना होता है। विलोम शब्द भाषा के अर्थग्रहण में सहायक होते हैं।

१९.१.३ पर्यायवाची शब्द :

एक–सा अर्थ बताने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं जैसे 'पेड़' का पर्यायवाची शब्द है – वृक्ष, विटप, तरू, द्रुभ, पादप आदि ।

munotes.in

नीचे कुछ पर्यायवाची शब्द दिए जा रहे हैं :

१) सोना - हेम, स्वर्ण, कनक, कंचन, हिरण्य

२) साँप - सर्प, भुजंग, विषधर, व्याल, नाग, उरग

३) किनारा - कूल, तट, तीर, कगार, पुलिन

४) अंधकार - अँधेरा, तम, तिमिर, तमिस्त्र

५) उन्नति - उत्थान, तरक्की, उदय, उत्कर्ष, विकास, प्रगति, वृद्धि

६) उपवन - बगिया, बाग, बगीचा, उद्यान, फुलवारी, वाटिका

७) संसार - लोक, विश्व, दुनिया, जग, जगत

८) स्त्री - नारी, महिला, वनिता , रमणी, कामिनी , ललना

९) शत्रु - अरि, रिपु, बैरी, दुश्मन

१०) वायु - पवन, हवा, अनिल, समीर, मारूत, वात

११) पानी - जल, वारि, सलिल, नीर, तोय

१२) आकाश - आसमान, गगन, अंबर, व्योम, नभ

१३) दिन - दिवस, वासर, वार, दिवा

१४) कोयल - पिक, कोकिल, परभृत

१५) उद्यान - उपवन, बाग, बगीचा

१६) ईश्वर - परमेश्वर, भगवान, ईश, परमात्मा, प्रभु

१७) अमृत - सुधा, पीयुष, सोम, अमिय

१८) इच्छा - अभिलाषा, मनोरथ, आकांक्षा, कामना, मनोरथ

१९) अग्नि - अनल, पावक, आग, कृशानु, हुताशन

२०) अतिथि - पाहुन, मेहमान, आगंतुक, अभ्यागत

२१) अंधा - अंध, प्रज्ञाचक्षु, दृष्टिहीन, नेत्रहीन

२२) किरण - रश्मि, मयुख, अंशु, कर, मरीचि

२३) कोमल - मृदु, सुकुमार, मसृण, नर्म, मृदुल

२४) समुद्र - सागर, जलधि, अर्णव, जलनिधि, सिंधु, वारीश, नदीश

२५) विद्युत - तड़िता, चपला, दामिनी

२६) बच्चा - शिशु, बालक, जातक, अर्भक

२७) सुंदर - मनोहर, मनोरम, रमणीय, रम्य, चारू, रूचिर

२८) पक्षी - विहग, विहंग, खग, द्विज, पंखी

२९) पृथ्वी - धरा, धरित्री, धारयित्री, वसुन्धरा, भू, मही, वसुधा

३०) पुष्प - सुमन, कुसुम, फूल, प्रसून

३१) नौकर - दास, सेवक, किंकर, भृत्य, अनुचर

३२) नारी - वनिता, महिला, अंगना, भामा, ललना, स्त्री, प्रमदा

३३) नदी - सरिता, निम्नगा, सलिला, पयस्विनी, तटिनी

munotes.in

३४) तालाब - तड़ाग, सर, पुष्कर, पोखर
३५) तरू - वृक्ष, विटप, द्रुम, पेड़, महीरूह
३६) डरावना - भयंकर, भीषण, भयावह, भयप्रद, भयानक
३७) झूठ - मिथ्या, असत्य, मृषा
३८) झंडा - ध्वज, पताका, केतु, केतन
३९) चंद्रमा - चाँद, निशाकर, चंद्र, इंदु, सुधांशु, सुधाकर, हिमकर
४०) जंगल - वन, विपिन, कानन, अरण्य
४१) रात - रात्रि, निशा, रजनी, यामिनी, रैन, विभावरी
४२) गाय - धेनु, सुरभि, गौ
४३) क्रोध - गुस्सा, रोष, कोप, रिस, क्षोभ, आक्रोश, अमर्ष
४४) गंगा - जाह्नवी, सुरसरि, देवनदी, भागीरथी, त्रिपथगा
४५) घर - गृह, सदन, शाला, मंदिर
४६) चाँदनी - ज्योत्सना, चंद्रिका, कौमुदी
४७) कमल - पंकज, सरोज, जलज, नीरज, वारिज, अंबुज
४८) नया - नव, नव्य, नवीन, नूतन, नवल, अभिनव
४९) निर्धन - धनहीन, दीन, गरीब, विपन्न
५०) पत्थर - प्रस्तर, शिला, पाषाण, पाहन, उपल, अश्म
५१) पर्वत - शैल, गिरि, अद्रि, नग, अचल
५२) झरना - निर्झर, उत्स, स्त्रोत, प्रपात
५३) असुर - दानव, राक्षस, दैत्य, दनुज, निशाचर
५४) सूचना - जानकारी, खबर, विज्ञप्ति
५५) युद्ध - लड़ाई, समर, संग्राम, रण
५६) मूर्ख - गँवार, बेवकूफ, जड़, मूढ़
५७) सरस्वती - भारती, शारदा, वागीश्वरी
५८) साधु - मुनि, संन्यासी, संत, वैरागी, अवधूत
५९) समूह - झुंड, टोली, दल, समुदाय, वृंद, पुंज
६०) तिरस्कार - अपमान, निरादर, अनादर, असम्मान, बेइज़्ज़ती
६१) क्षति - हानि, नुकसान, अहित, घाटा
६२) आँख - नयन, लोचन, चक्षु, दृग, नेत्र
६३) अनुपम - अतुलनीय, निरूपम, अनोखा, विचित्र
६४) अध्यापक - शिक्षक, गुरू, आचार्य, प्राध्यापक
६५) तुरंत - फौरन, तत्क्षण, तत्काल, अविलंब, शीघ्र

इसी प्रकार अन्य पर्यायवाची शब्द भी हो सकते हैं ।

munotes.in

१९.१.४ विलोम शब्द

किसी शब्द का विपरीत (उल्टा) अर्थ देने वाले शब्द को विलोम शब्द या विपरीत शब्द कहते हैं जैसे –

श्वेत × श्याम, गुरू × शिष्य, सजीव × निर्जीव आदि ।

इसी प्रकार के कुछ शब्द यहाँ दिए जा रहे हैं-

शब्द	×	विलोग शब्द	शब्द	×	विलोग शब्द
पाप	×	पुण्य	आलस्य	×	स्फूर्ति
सजीव	×	निर्जीव	आस्तिक	×	नास्तिक
भूत	×	भविष्य	दृश्य	×	अदृश्य
शांति	×	अशान्ति	आदि	×	अनादि
विशेष	×	सामान्य	मुख्य	×	गौण
वादी	×	प्रतिवादी	सौभाग्य	×	दुर्भाग्य
स्वतंत्र	×	परतंत्र	कृष्ण	×	शुक्ल
मौखिक	×	लिखित	स्तुति	×	निंदा
अपेक्षा	×	उपेक्षा	क्रिया	×	प्रतिक्रिया
अंधकार	×	प्रकाश	खंडन	×	मंडन
ऐच्छिक	×	अनैच्छिक / अनिवार्य	दुर्जन	×	सज्जन
कठोर	×	मृदु	गर्मी	×	सर्दी
कायर	×	वीर	गुण	×	दोष
कीर्ति	×	अपकीर्ति	गुप्त	×	प्रकट
कृतज्ञ	×	कृतघ्न	घृणा	×	प्रेम
कृत्रिम	×	स्वाभाविक	चंचल	×	स्थिर
कोमल	×	कठोर	चतुर	×	मूर्ख
क्रय	×	विक्रय	छली	×	निश्छल
ऊँच	×	नीच	जीवित	×	मृत
उष्ण	×	शीत	जीवन	×	मृत्यु
उपस्थित	×	अनुपस्थित	ज्ञानी	×	अज्ञानी
उदय	×	अस्त	ठोस	×	तरल
उत्थान	×	पतन	देव	×	दानव
आस्था	×	अनास्था	धनी	×	निर्धन
आरोह	×	अवरोह	नवीन	×	प्राचीन
आध्यात्मिक	×	भौतिक	निंदा	×	स्तुति
आदि	×	अनादि/अंत	नीरस	×	सरस
आदान	×	प्रदान	स्वाधीन	×	पराधीन
सामिष	×	निरामिष	सुगम	×	दुर्गम (कठिन)
सामान्य	×	असामान्य / ंविशेष	सुगंध	×	दुर्गंध
साकार	×	निराकार	सदाचार	×	दुराचार

सदाचार × दुराचार
सबल × निर्बल
ध्वंस × निर्माण
पंडित × मूर्ख
विधवा × सधवा
वरदान × अभिशाप
रक्षक × भक्षक
महँगा × सस्ता
दुर्लभ × सुलभ
निरक्षर × साक्षर
परतंत्र × स्वतंत्र
प्रत्यक्ष × परोक्ष
सक्रिय × निष्क्रिय
शुद्ध × अशुध्द
समस्या × समाधान
रूचिकर × अरूचिकर
विरोध × समर्थन
विवाहित × अविवाहित
महान × क्षुद्र
बुद्धिमान × बुद्धिहीन, मूर्ख
मौखिक × लिखित
सत्कर्म × दुष्कर्म
विश्‍वसनीय × अविश्वसनीय
मुरझाना × खिलना
पुरस्कार × दंड
महात्मा × दुरात्मा
संयुक्त × वियुक्त
व्यर्थ × महत्त्वपूर्ण
रोगी × नीरोगी
सुपात्र × कुपात्र

इसी प्रकार अन्य विलोग शब्द भी हो सकते हैं।

१९.१.५ संभावित प्रश्न

१) निम्नलिखित शब्दों का दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए ।

नदी	हवा	बाग	अँधेरा
चाँद	पानी	महादेव	अभिमान
समुद्र	सूर्य	वागीश्वरी	धन
रात्रि	चाँदनी	मृत्यु	इंद्र
प्रेम	बादल	आसमान	ईश्वर
बचपन	रात	पत्नी	कृष्ण
हनुमान	निर्धन	पति	कोयल
शिव	गंगा	बच्चा	आलोक
पवन	पुरूष	पक्षी	गणेश
औरत	आग	पत्थर	अपमान
सेवक	अश्व	फूल	दुनिया
सुंदर	आँख	गरीब	देवता

munotes.in

२) **निम्नलिखित शब्दों का विलोम / विपरीत शब्द लिखिए ।**

कपूर	आरंभ	सामान्य	सत्य
अंधकार	आशा	खंडन	हित
अमृत	आसक्ति	गुण	मैत्री
आध्यात्मिक	आय	कोमल	साहसी
आलसी	आयात	कीर्ति	रचना
आवश्यक	उत्कृष्ट	अनिवार्य	दुराचार
आदान	प्रश्न	वीर	स्वतंत्र
अवनति	उत्तर	दुर्जन	सबल
आकाश	पूरब	चंचल	विधवा
अपव्यय	चल	उदय	निरर्थक
सक्रिय	जड़	निर्दोष	जय
आस्तिक	विजय	निर्दय	अपना
रात	कोमल	शांत	राग

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१९.२

(iii) मुहावरे

इकाई की रुपरेखा

१९.२.१ प्रस्तावना
१९.२.२ इकाई का उद्देश्य
१९.२.३ प्रचलित मुहावरे : अर्थ व वाक्य - प्रयोग
१९.२.४ संभावित मुहावरे

१९.२.१ प्रस्तावना :

मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है बातचीत या अभ्यास । ऐसा वाक्यांश (वाक्य का छोटा अंश) जो सामान्य अर्थ से विपरीत किसी विशेष अर्थ का बोध कराए, उसे मुहावरा कहते हैं। ऐसा कोई भी वाक्यांश, जिसका शब्दार्थ ग्रहण न करके कोई विशिष्ट अर्थ ग्रहण किया जाता है, मुहावरा कहलाता है। जैसे-आँखों का तारा - यह एक मुहावरा है। अब इसका प्रयोग देखिए :- राम कौशल्या की आँखों का तारा थे किसी भी भाषा की समृध्दि में मुहावरे का अत्यधिक महत्त्व होता है। बिना मुहावरों के कोई भी भाषा समृद्ध और प्रभावशाली नहीं हो सकती है । इनमें शब्दों की प्रमुखता नहीं होती, अपितु ये संदर्भ, विचार और भाव प्रधान होती हैं । मुहावरों का प्रयोग करते समय अत्यन्त सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है वरना अर्थ का अनर्थ हो सकता है ।

१९.२.२ इकाई का उद्देश्य :

किसी भी भाषा को सुंदर, समृध्द, लालित्यपूर्ण एवं प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों की अत्यन्त आवश्यकता होती है। बहुत लंबी बात मुहावरे में संक्षिप्त और प्रभावशाली ढंग से कही जा सकती है। इसके सटिक प्रयोग से भाषा का सौंदर्य बढ़ता है। भाषा में मुहावरों का महत्त्व बताना ही इस इकाई का उद्देश्य है ।

१९.२.३ प्रचलित मुहावरे : अर्थ व वाक्य - प्रयोग

नीचे कुछ प्रचलित मुहावरों के अर्थ उनके वाक्य-प्रयोग के साथ दिए जा रहे हैं :-

१) अंधे की लाठी – एकमात्र सहारा – संसार में इस बच्चे के सिवाय उस बुढ़िया का कोई नहीं है। यही उसके लिए अंधे की लाठी है ।

२) अक्ल का दुश्मन – मूर्ख उस अक्ल के दुश्मन को इतनी बड़ी जिम्मेदारी का काम सौंपना ठीक नहीं है।

३) अक्ल के घोड़े दौड़ाना – बहुत सोच –विचार करना – मैंने बहुत अक्ल के घोड़े दौड़ाए, परन्तु मुझे इस समस्या का कोई समाधान नहीं मिला ।

४) आसमान सिर पर उठाना – बहुत शोर मचाना - अध्यापक की अनुपस्थिति में छात्रों ने आसमान सिर पर उठा लिया ।

५) आँखें दिखाना – गुस्सा करना – मैं सही बात कह रहा हूँ और तुम व्यर्थ में ही मुझे आँखें दिखा रहे हो ।

६) आँखें बिछाना – बहुत आदर करना – प्रधानमंत्री के स्वागत में जनता ने आँखें बिछा दी थीं।

७) अपनी खिचड़ी अलग पकाना – अलग रहना - श्याम किसी की परवाह नहीं करता, वह अपनी खिचड़ी अलग पकाता है ।

८) आग बबूला होना - क्रोधित होना – अपमान जनक शब्दों को सुनकर वह आग – बबूला हो गया।

९) आकाश – पाताल एक कर देना – अत्यधिक प्रयत्न करना – अपने बच्चे को ढूँढने के लिए पूरे परिवार ने आकाश- पाताल एक कर दिया ।

१०) आँखों में धूल झोंकना – धोखा देना – डाकुओं ने पुलिस की आँखों में धूल झोंक दिया ।

११) दाँत खट्टे करना – बुरी तरह हराना - चंद्रगुप्त ने सेल्यूकस के दाँत खट्टे कर दिए थे ।

१२) घोड़े बेचकर सोना – निश्चिंत होना – परीक्षा देने के बाद विद्यार्थी घोड़े बेचकर सो गए ।

१३) छक्के छुड़ाना – बुरी तरह हराना – भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सैनिकों के छक्के छुड़ा दिए ।

१४) कमर कसना – तैयार होना - इस बार विद्यार्थियों ने परीक्षा में अच्छे अंक पाने के लिए कमर कस ली है ।

१५) कलेजा ठंडा होना - शान्ति प्राप्त करना – जब तक मैं उससे बदला नहीं लूँगा, तब तक मेरा कलेजा ठंडा नहीं होगा ।

१६) काला अक्षर भैंस बराबर – अनपढ़ - मैं पढ़ नहीं सकता, क्योंकि मेरे लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है ।

१७) चुल्लू भर पानी में डूब मरना - लज्जा अनुभव करना – तुम्हें चोरी करते समय शर्म नहीं आई ? जाकर चुलू भर पानी में डूब मरो ।

१८) खून-पसीना एक करना – बहुत मेहनत करना – किसान और मजदूर खून – पसीना एक करके दो वक्त की रोटी की जुगाड़ करते हैं ।

१९) चार चाँद लगाना – प्रतिष्ठा बढ़ाना – भारतीय वैज्ञानिकों ने भारत देश की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगा दिए ।

२०) एक और एक ग्यारह – संगठन में शक्ति भारत की आजादी की लड़ाई में यह सिद्ध हो गया कि एक और एक ग्यारह होते हैं ।

२१) आँखें तरसना – देखने के लिए जी चाहना – विदेश में गए हुए अपने बेटे को देखने के लिए माँ की आँखें तरस गईं।

२२) आँच न आने देना – तनिक कष्ट न होने देना – माँ स्वयं कष्ट सह लेती है परन्तु अपने बच्चे पर आँच नहीं आने देती है ।

२३) अपने पैरों पर खड़ा होना – अपने सहारे अपना कार्य करना - लाल बहादुर शास्त्री ने बचपन से ही अपने पैरों पर खड़ा होना सीख लिया था ।

२४) अँधेरगर्दी मचाना - लूट मचाना / अन्याय करना – आजकल प्रायः नेताओं ने अंधेरगर्दी मचा रखी है ।

२५) ईमान बेचना - बेईमान होना – आज के नेताओं ने अपना ईमान बेच दिया है ।

२६) उलटी गंगा बहाना – नियम के विरूध्द काम करना – आलसी राम ने ढेर-सारा काम करके आज उलटी गंगा बहा दी।

२७) कान भरना - चुगली करना – कान के कच्चे होने के कारण ही उसने तुम्हारे कान भर दी ।

२८) कान का कच्चा होना – बिना सोचे विचारे किसी पर विश्वास करना – मनुष्य को कभी भी कान का कच्चा नहीं होना चाहिए ।

२९) कमर टूटना - हिम्मत टूटना– फौजी बेटे के शहीद हो जाने के बाद माँ - बाप की कमर ही टूट गई।

३०) घाट – घाट का पानी पीना – बहुत घूम फिर कर अनुभव प्राप्त करना – घाट – घाट का पानी पीकर ही वह आज इतना आगे बढ़ा है ।

३१) गुड़- गोबर करना – काम बिगाड़ देना – मेरा काम बन ही चुका था, पर उसने आकर सब गुड़-गोबर कर दिया ।

३२) गले पड़ना – मुसीबत पीछे पड़ना – मोहन ने गरीब दयाराम की एक बार मदद क्या की, वह तो गले पड़ गया ।

३३) चार सौ बीस होना – धोखेबाज होना – तुम उस पर विश्वास मत करना, वह एक चार सौ बीस आदमी है ।

३४) मुँह फुलाना – रूठ जाना – वह हमेशा बेवजह मुँह फुला लेता है ।

३५) हाथ फैलाना - याचना करना – हाथ फैलाकर जीवन को सफल बनाना व्यर्थ है ।

३६) हाथों हाथ बिकना – बहुत जल्दी दुकानदार के सारे फल हाथों हाथ बिक गए ।

३७) सूर्य को दीपक दिखाना – प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय देना – नरेन्द्र मोदी जी के बारे में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाने के बराबर है ।

३८) मक्खी मारना – कुछ न करना - वह इतना पढ़-लिख करके भी मक्खी ही मार रहा है ।

३९) मुट्ठी गरम करना – रिश्वत देना – आजकल भ्रष्टाचार इतना बढ़ता जा रहा है कि बिना मुट्ठी गरम किए कोई काम ही नहीं होता ।

४०) भाड़े का टट्टू – पैसे लेकर काम करने वाले – वह तो बिल्कुल भाड़े का टट्टू बन गया है।

४१) फूँक-फूँक कर कदम रखना – बहुत सोच-विचार कर काम करना – खराब समय में कुशल आदमी बिल्कुल फूँक-फूँक कर कदम रखता है ।

४२) रंग में भंग डालना – बना बनाया खेल बिगाड़ देना – राम ने झगड़ा करके अच्छी-खासी पार्टी में रंग में भंग डाल दिया ।

४३) भूत सवार होना – किसी काम के लिए हठ करना – आज कल उस पर पढ़ाई का भूत सवार है।

४४) बहती गंगा में हाथ धोना – अवसर का लाभ उठाना – आज कल हर आदमी बहती गंगा में हाथ धोने की सोचता है ।

४५) लकीर का फकीर बनना – अंधविश्वासी होना – इस नए युग में आज भी बहुत – से लोग लकीर के फकीर बने हए हैं ।

४६) सिर उठाना– विरोध करना - पाकिस्तान आजकल हिन्दुस्तान के सामने बहुत सिर उठा रहा है।

४७) लोहे के चने चबाना – कठिन काम करना – एवरेस्ट पर चढ़ना लोहे के चने चबाना है ।

४८) बाल-बाल बचना - दुर्घटना होते-होते बच जाना – हमारे मुख्यमंत्री दो-दो बार बाल-बाल बच गए।

४९) रंग जमाना – धाक जमाना - अपनी मधुर वाणी से उसने महफिल में अपना रंग जमा लिया।

५०) भैंस के आगे बीन बजाना – मूर्ख को उपदेश देना – किसी अशिक्षित व्यक्ति के सामने अंग्रेजी झाड़ना भैंस के आगे बीन बजाने के समान है।

५१) फूला न समाना – अत्यन्त प्रसन्न होना – कक्षा में प्रथम आने की खबर सुनकर रोहन फूला नहीं समा रहा था।

५२) पेट में चूहे कूदना – ज़ोर की भूख लगना – सुबह से कुछ नहीं खाने के कारण मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं।

५३) बाज़ी मारना – आगे निकल जाना – रमेश ने कक्षा में प्रथम आकर इस बार बाज़ी मार ली है।

५४) डूबते को तिनके का सहारा – संकटग्रस्त व्यक्ति को कुछ सहायता प्राप्त होना – इस संकट के समय में तुम्हारा साथ, मेरे लिए डूबते को तिनके का सहारा है ।

५५) टाँग अड़ाना – हस्तक्षेप करना – वह बात–बात पर मेरे काम में टाँग अड़ाता रहता है ।

५६) टेढ़ी खीर – कठिन कार्य - डॉक्टर बनना बहुत टेढ़ी खीर है।

५७) जोड़-तोड़ करना – उपाय करना – सुधीर जोड़-तोड़ कर अपना घर –परिवार चला रहे हैं।

५८) तूती बोलना - धाक बैठना – भारतीय सैनिकों की हर जगह तूती बोलती है।

५९) थूक कर चाटना – बदल जाना – थूक कर चाटना मेरे सिद्धान्त के खिलाफ़ है।

६०) दाँत पीसना - क्रोध करना – वह बेचारा दाँत पीसकर रह गया।

६१) दाल न गलना – काम न बनना – रामा की बहुत अधिक चालाकी के कारण उसकी दाल नहीं गलती है।

६२) ठेस लगना – दुख होना – जब कोई अपनों को धोखा देता है तो बहुत ठेस लगती है ।

६३) जान में जान आना – मन को चैन मिलना - दो दिनों से गायब बेटे को सही सलामत देखकर माँ की जान में जान आ गई।

६४) जी चुराना - काम से बचने के लिए बहाना बनाना - मुझे काम से जी चुराना बिल्कुल पसन्द नहीं है।

६५) चंपत हो जाना – गायब हो जाना – पुलिस को आते देखकर चोर चंपत हो गया।

६६) छप्पर फाड़कर देना – बिना मेहनत के बहुत देना - दुखी क्यों होते हो भगवान जब देगा तो छप्पर फाड़ कर देगा।

६७) घी के दिए जलाना – खुशियाँ मनाना – जब बेटा विदेश से इंजीनियर की डिग्री लेकर आया तो माँ ने घी के दिए जलाए।

६८) चादर से बाहर पाँव पसारना – आय से अधिक व्यय करना – तुम्हें बार-बार कहती हूँ कि चादर से बाहर पाँव मत पसारो।

६९) चिकना घड़ा होना – बेअसर होना – आजकल के बच्चे चिकने घड़े होते हैं। उन पर किसी बात का असर नहीं होता।

७०) चैन की बंसी बजाना – आनंद से जीवन बिताना – रिटायर होने के बाद अब पिताजी चैन की बंसी बजा रहे हैं।

७१) गंगा नहाना – बड़ा पुण्य करना – पुत्री का विवाह करके माता-पिता को लगा कि मानो वे गंगा नहा लिए हैं।

७२) गिरगिट की तरह रंग बदलना – सिद्धान्त हीन होना - अवसरवादी होना – उस पर भरोसा मत करना, वह गिरगिट की तरह रंग बदलता है।

७३) नाक में दम करना – बहुत परेशान करना – कुछ शैतान / शरारती बच्चों ने अध्यापक के नाक में दम कर दिया।

७४) पेट में दाढ़ी होना – कम उम्र में ही जानकार होना – आजकल के बच्चों को देखकर लगता है कि वे पेट में ही दाढ़ी लेकर पैदा हुए हैं।

munotes.in

७५) पानी- पानी होना – अत्यन्त लज्जित होना – अपने बेटे की करतूत देखकर माता-पिता पानी –पानी हो गए।

७६) पापड़ बेलना–कठिन साधना करना–अपनी पदोन्नति के लिए वह खूब पापड़ बेल रहा है।

७७) जी छोटा होना – उत्साह कम होना – तुम जी छोटा मत करो, सब ठीक होगा।

७८) दिमाग में भूसा होना - पूर्णतः मूर्ख होना – क्या तुम्हारे दिमाग में भूसा भरा है ?

७९) नमक मिर्च लगाना – बढ़ा-चढ़ा कर कहना – वह हर बात नमक-मिर्च लगाकर कहती है, उसका विश्वास मत करना।

८०) भीगी बिल्ली होना - डर से दुबकना – पिताजी का गुस्सा देखते ही वह भीगी बिल्ली बन गया।

८१) बाएँ हाथ का खेल – अति सरल कार्य - उसके लिए पेड़ पर चढ़ना बाएँ हाथ का खेल है।

८२) आग लगाना – शांति नष्ट करना / उपद्रव मचाना – दुष्ट व्यक्ति हर जगह आग लगाते रहते हैं।

८३) कसौटी पर कसना – परीक्षा लेना - चरित्र की कसौटी पर कसने से ही व्यक्ति का वास्तविक मूल्य प्रकट होता है।

८४) कलई खुलना – भेद खुलना – सी. बी. आई के छापे में नेता जी की कलई खुल गई।

८५) कमर सीधी करना – थकान मिटाना – अब कमर सीधी करने के बाद ही आगे का काम होगा।

८६) कंधे से कंधा मिलाना – आपस में सहयोग करना - आजकल औरत पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है।

८७) हाथ का मैल होना – तुच्छ वस्तु होना – रूपए पैसे आदमी के हाथ के मैल हैं, ये आते – जाते रहते हैं।

८८) बाग-बाग होना – खुश होना – भारत के विश्वकप जीतने के बाद मेरा दिल बाग – बाग हो गया।

८९) कलेजे पर पत्थर रखना – धीरज रखना – माँ की मृत्यु के बाद रीता को कलेजे पर पत्थर रखना पड़ा।

९०) किताब का कीड़ा – हर समय पढ़ने वाला – प्रज्ञा किताब का कीड़ा है, उससे सिनेमा देखने जाने की उम्मीद मत करना।

९१) उड़ती चिड़िया पहचानना – दिल की बात समझ लेना – हमसे चालाकी मत दिखाना, हम उड़ती चिड़िया पहचान लेते हैं।

९२) एक लाठी से हाँकना – अच्छे–बुरे का अंतर न करना – क्या शिक्षित, क्या अशिक्षित – तुम तो सबको एक ही लाठी से हाँकते हो।

munotes.in

९३) आकाश के तारे तोड़ना – असंभव काम करना – हर प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिए आकाश के तारे तोड़कर लाने के वायदे करता है।

९४) कुत्ते की मौत मरना – बुरी मौत मरना – देशद्रोही हमेशा कुत्ते की मौत मरते हैं।

९५) अक्ल का पुतला – बुद्धिमान – आजकल के बच्चे खुद को अक्ल का पुतला समझते हैं।

९६) अंग–अंग ढीला होना – बहुत थक जाना – सुबह से शाम तक काम करते –करते अब तो अंग-अंग ढीला हो गया है।

९७) अपना ही राग अलापना – अपनी ही बात कहते जाना – आजकल जिसे देखो, सब लोग अपना ही राग अलापते हैं।

९८) आँसू पीकर रह जाना – बहुत शोक या दुख में चुप रह जाना – अपने बच्चों को दो वक्त की रोटी देने में असमर्थ माँ आँसू पीकर रह जाती है।

९९) गजभर की छाती होना – गौरव से भर जाना – बेटे के प्रथम आने पर माता-पिता की छाती गजभर की हो गई ।

१९.२.४ संभावित प्रश्न

निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका वाक्य प्रयोग कीजिए।

१) अंगारों पर पैर रखना
२) अपना राग अलापना
३) अपने पैरों पर खड़े होना
४) ईश्वर को प्यारा होना
५) जले पर नमक छिड़कना
६) गंगा नहाना
७) गोबर गणेश होना
८) टोपी उछालना
९) ठंड़ा पड़ जाना
१०) तारे गिनना
११) तारे तोड़ लाना
१२) तेली का बैल
१३) दम तोड़ना
१४) दाँतों में जीभ होना
१५) दाहिना हाथ होना
१६) दिमाग चाटना
१७) दूज का चाँद होना
२६) मीठी नींद सोना
२७) यमपुर पहुँचाना
२८) शर्म से पानी-पानी होना
२९) सिर से पानी गुजर जाना
३०) सूरज को दीपक दिखाना
३१) सूरज पर थूकना
३२) सड़क नापना
३३) सोने पर सुहागा
३४) हथियार डालना
३५) मुँह तोड़ जवाब देना
३६) राई का पहाड़ बनाना
३७) खून का घूँट पीकर रह जाना
३८) मुँह फुलाना
३९) बीड़ा उठना
४०) डकार जान
४१) ठोक बजाकर लेना
४२) पत्थर की लकीर

munotes.in

१८) धरती पर पाँव न पड़ना

१९) नमक हराम होना

२०) नमक हलाल होना

२१) नाक रख लेना

२२) पाँव में शनीचर होना

२३) पारा उतरना

२४) भूत सवार होना

२५) भौंहें चढ़ाना

४३) नाक में दम करना

४४) नज़रों से गिरना

४५) नाक पर मक्खी न बैठने देना

४६) चोली दामन का साथ

४७) जुबान बदलना

४८) घड़ों पानी पड़ना

४९) ख्याली पुलाव पकाना

५०) खून का प्यासा

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१९.३

संक्षेपण एवं पल्लवन

इकाई की रुपरेखा

१९.३.१ प्रस्तावना
१९.३.२ इकाई का उद्‌देश्य
१९.३.३ संक्षेपण
१९.३.४ पल्लवन
१९.३.५ संभावित प्रश्न

१९.३.१ प्रस्तावना :

किसी विस्तृत विवरण, सविस्तार व्याख्या, वक्तव्य पत्र व्यवहार या लेख के तथ्यों और निर्देशों के ऐसे संयोजन को ‘संक्षेपण’ कहते हैं जिसमें अप्रासंगिक, असंबद्ध, पुनरावृत्त, अनावश्यक बातों को त्यागकर सभी अनिवार्य, उपयोगी तथा मूल तथ्यों का प्रवाहपूर्ण और संक्षिप्त संकलन हो। उदाहरण स्वरूप तीन घंटे की फिल्म या नाटक की कथा को आधे घंटे में ही कहना। इसमें फिल्मी कथावस्तु का संक्षेपण ही तो किया गया है जिसमें आवश्यक बातें कह दी गई और अप्रासंगिक बातें छोड़ दी गईं। संक्षेपण, मुख्य विषय का एक तिहाई अनुपात में (३:१) लिखा जाता है जिसमें कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक विचारों को प्रकट किया जाता है। इसे अंग्रेजी में Precis Writing कहते हैं।

‘पल्लवन’ को अंग्रेजी में Amplification कहते हैं। किसी सुगठित एवं गुंफित विचार अथवा भाव के विस्तार को पल्लवन कहते हैं। कम से कम शब्दों अथवा एक वाक्य में कहे अथवा लिखे भावों और विचारों में इतनी स्पष्टता नहीं रहती कि हर तरह के लोग उन्हें आसानी से समझ सकें। हिन्दी में हजारों सूक्तियाँ और कहावतें प्रचलित हैं जिनके अर्थ ऊपर से स्पष्ट नहीं हैं। किन्तु उनका अर्थ विस्तार करने पर उनके भाव पूरी तरह स्पष्ट हो जाते हैं। कम से कम शब्दों, वाक्यांशों या पंक्तियों को पूरी गंभीरता से समझकर उन्हें विभिन्न अनुच्छेदों में तब तक लिखा जाए जब तक मूल लेखक के समस्त मनोभाव पूरी तरह स्पष्ट न हो जाए। लेखन की इस क्रिया को हिन्दी में पल्लवन कहते हैं। पल्लवन में यह देखा जाता है कि छात्र या व्याख्याता ने किसी गंभीर तथ्य को कितनी बारीकी से और गहराई में उतरकर समझा है और अपनी भाषा में वह उसे कितनी दूर तक सुस्पष्ट कर सका है।

munotes.in

१९.३.२ इकाई का उद्देश्य :

'संक्षेपण' का उद्देश्य है छात्रों मे पठन-पाठन और लेखन में सरलता, स्वच्छता, प्रभाव और स्पष्टता की क्षमता का विकास करना, उनमें शब्द-संयम, भावसंयम और चिन्तन संयम की क्षमता को विकसित करना, उनमें मनोयोग दृढ़ता और एकाग्रता की सामर्थ्य उद्दीप्त करना भी संक्षेपण का उद्देश्य है क्योंकि यह एक मानसिक प्रशिक्षण है जिसमें अधिक से अधिक बातों को कम से कम शब्दों में लिखा जाता है और यह करना कठीन है।

'पल्लवन' का उद्देश्य है विद्यार्थियों में कम से कम शब्दों, अथवा एक वाक्य में कहे भावों और विचारों को अधिक से अधिक शब्दों, वाक्यों, अनुच्छेदो में लिखने की क्षमता का विकास करना। यह 'संक्षेपण' का ठीक उल्टा होता है। 'संक्षेपण' और 'पल्लवन' दोनो का उद्देश्य विद्यार्थियों को यह मानसिक प्रशिक्षण प्रदान करना है जिसमें में अधिक से अधिक बातों को कम से कम शब्दों में कह सकें तथा कम से कम बातों को पूरे विस्तार से समझाते हुए प्रमाणित कर सकें।

१९.३.३ संक्षेपण :

संक्षेपण में लंबे-चौड़े विवरण, पत्राचार आदि की सारी बातों को अत्यन्त संक्षिप्त और क्रमबद्ध रूप में रखा जाता है। इसमें हम कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक विचारों, भावों और तथ्यों को प्रस्तुत करते हैं। वस्तुतः संक्षेपण किसी बड़े ग्रंथ का संक्षिप्त संस्करण, बड़ी मूर्ति का छोटा रूप और बड़े चित्र का छोटा चित्रण है। इसमें मूल की कोई भी आवश्यक बात छूटने नहीं पाती। अनावश्यक बातें छाँटकर निकाल दी जाती हैं और मूल बातें रख ली जाती हैं। यह काम सरल नहीं हैं। इसके लिए निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है।

संक्षेपण के कुछ सामान्य नियम :

१. मूल विषय को ध्यानपूर्वक पढ़ें। जब तक उसका संपूर्ण भावार्थ स्पष्ट न हो जाए तब तक संक्षेपण लिखना आरंभ नहीं करना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि मूल अवतरण कम से कम तीन बार पढ़ा जाए ।

२. मूल अवतरण के भावार्थ को समझ लेने के बाद उन आवश्यक शब्दों, वाक्यों अथवा वाक्य खंडो को रेखांकित करें जिनका मूल विषय से सीधा संबंध हो अथवा जिनका भावों या विचारों की अन्विति में विशेष महत्त्व हो। इस प्रकार कोई भी तथ्य छूटने न पाएगा।

३. संक्षेपण मूल संदर्भ का संक्षिप्त रूप है, इसलिए इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इनमें अपनी ओर से किसी तरह की टीका– टिप्पणी अथवा आलोचना - प्रत्यालोचना न हो। संक्षेपण में लेखक को न तो किसी मतवाद के खंडन का अधिकार है और न अपनी ओर से मौलिक या स्वतंत्र विचारों को जोड़ने की ही छूट हैं। उसे तो मूल के भावों अथवा विचारों के अधीन रहना है और उन्हें ही संक्षेप में लिखना है।

४) संक्षेपण को अंतिम रूप देने के पहले रेखांकित वाक्यों के आधार पर उसकी रूपरेखा तैयार करनी चाहिए। फिर उसमें उचित और आवश्यक संशोधन (जोड़-घटाव) करना चाहिए। यहाँ एक बात ध्यान रखने की यह है कि मूल संदर्भ के विचारों की क्रमव्यवस्था में आवश्यक परिवर्तन किया जा सकता है। यह कोई आवश्यक नहीं है कि जिस क्रम में मूल लिखा गया है, उसी क्रम में संक्षेपण भी लिखा जाए। लेकिन यह अत्यन्त आवश्यक है कि उसमें विचारों का तारतम्य बना रहे। ऐसा मालूम हो कि एक वाक्य का दूसरे वाक्य से सीधा संबंध बना हुआ है।

५) उक्त रूपरेखा को अंतिम रूप देने के पहले उसे एक-दो बार ध्यान से पढ़ना चाहिए, ताकि कोई भी आवश्यक विचार छूटने न पाए। जहाँ तक हो सके, यह अत्यन्त संक्षिप्त लगभग एक तिहाई से कम हो। यदि शब्द संख्या पहले ही निर्धारित हो तो यह प्रयत्न करना चाहिए कि संक्षेपण में उस निर्देश का पालन किया जाए।

६) संक्षेपण को व्याकरण के सामान्य नियमों के अनुसार एक क्रम में लिखना चाहिए।

७) उपर्युक्त सारी क्रियाओं के बाद संक्षेपण के भावों और विचारों के अनुकूल एक संक्षिप्त शीर्षक दे देना चाहिए। शीर्षक ऐसा हो जो सभी तथ्यों को समेटने की क्षमता रखे। शीर्षक लघु और कम से कम शब्दों वाला होना चाहिए।

८) संक्षेपण में विशेषणों, क्रियाविशेषण, किसी भी अलंकारों का प्रयोग नहीं होना चाहिए तथा अप्रासंगिक बातों, उद्धरणों और विचारों की पुनरावृत्ति को बिल्कुल हटा देना चाहिए। भाषा-शैली बिल्कुल सरल, स्पष्ट और आडंबरहीन होना चाहिए।

९) संक्षेपण में परोक्ष कथन (Indirect Narration) सर्वत्र अन्य पुरूष में होना चाहिए। जिस तरह किसी समाचार पत्र का संवाददाता अपने वाक्यों की रचना में परोक्ष कथन का प्रयोग करता है उसी तरह उसका व्यवहार होना चाहिए। संवादों के संक्षेपण में इसका उपयोग सर्वधा अनिवार्य है। ऐसा करते समय एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि हिन्दी में जब वाक्यों को परोक्ष ढंग से लिखना होता है तब सर्वनाम, क्रिया या काल को बदलने की जरूरत नहीं होती, केवल 'कि' जोड़ देने से काम चल जाता है जैसे-

प्रत्यक्ष वाक्य - राम ने कहा -" मैं जाता हूँ।"

परोक्ष वाक्य - राम ने कहा कि मैं जाता हूँ।

१०) संक्षेपण में मूल के उन्हीं शब्दों को रखना चाहिए जो अर्थव्यंजना में सहायक हों। जहाँ तक संभव हो, मूल शब्दों के बदले दूसरे शब्दों का प्रयोग (जैसे आजादी के लिए स्वतंत्रता) करना चाहिए, लेकिन ध्यान रहे कि मूल के भावों–विचारों से अर्थ में उलट फेर नहीं होने पाए। इसमें भाषा को सजाने -संवारने की आवश्यकता नहीं है।

११) संक्षेपण में शब्दों के प्रयोग में काफी संयम से काम लेना चाहिए। कोई भी शब्द बेकार या बेजान न हो। उन्हीं शब्दों का व्यवहार करना चाहिए जिनका प्रासंगिक महत्त्व है। मूल के उन्हीं शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जो भाव व्यंजना और प्रसंगों के अनुकूल सार्थक है, जिनके बिना

काम नहीं चल सकता। शब्दों या वाक्यों को दुहराने की कोई आवश्यकता नहीं है। अंत में संक्षेपण में प्रयुक्त शब्दों की संख्या लिख देनी चाहिए।

संक्षेपण के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं :-

उदाहरण - १

तेनसिंह का साहस देखकर उनके फ्रांसीसी साहब चकित रह गए। अंत तक वे बहुत थक गए थे। यहाँ तक कि उनके पैर की दो उंगलियाँ मामूली ढंग से जम गई थीं। कहा जाता है कि उनकी वीरता देखकर भावुक फ्रेंच साहब इतने जोश में आए थे कि वे तेनसिंह को हार पहनाना चाहते थे, पर वहाँ पुष्प नहीं थे, इसलिए खाने के लिए जो सालेज (समोसे) रखे थे, उनकी माला बना कर पहना दी। उक्त अभियान में दो साहब मारे गए, पर उसी साल जाड़ों में जिस अभियान में तेनसिंह ने भाग लिया, उनमें वे स्वयं मृत्यु के जबड़ों से लौट आए। वे कब्र के दक्षिण में जार्ज फ्रेंई के साथ कोक्तंग शिखर पर चढ़ रहे थे, जो १९,९०० फुट ऊँचा है। १९५१ के २९ अक्टूबर को जार्ज फ्रेई के साथ जहाँ वे जा रहे थे, वह बहुत ढाल-वाली जगह थी। कुछ बर्फ जमी थी, पर बहुत पतली। ऊपर एक और पहाड़ी थी, जिसपर ढलान और अधिक थी। फ्रेई आगे-आगे थे। तेनसिंह दस कदम पिछे थे। और, एक दूसरा शेरपा औदग्वा उनके भी दस कदम पीछे था। एकाएक फ्रेई का पैर फिसला और वे तेनसिंह की ओर चले तेनसिंह ने उन्हें बचाने की चेष्टा की पर स्वयं उनके पैर लड़खड़ा गए । (शब्द- २००)

संक्षेपण : तेनसिंह का साहस

तेनसिंह के साहस और वीरता पर मुग्ध होकर फ्रांसीसी साहब जार्ज फ्रेई ने भावावेश में उनके गले में सालेज की माला पहना दी। २९ अक्टूबर, १९५१ को जब तेनसिहं, फ्रेई साहब और शेरपा औदग्वा के साथ १९,९०० फुट ऊँचे पहाड़ कोक्तंग के शिखर पर चढ़ते जा रहे थे। बर्फीली ढलान पर फ्रेई का पैर अचानक फिसला तेनसिंह ने उन्हें बचाने की कोशिश की, पर वे स्वयं लड़खड़ा गए। (शब्द -६८)

उदाहरण -२

एक दिन मेम-डॉक्टर बेला से पूछ बैठी - "तू कहाँ जाएगी? जाती क्यों नहीं? दूध और केले पर कहाँ तक पड़ी रहेगी?"

"कहाँ जाऊँ?"

" मैं क्या जानूँ, कहाँ जाएगी!"

" मेरा तो इस दुनिया में कोई अपना नहीं है!"

"तो इसके लिए मैं जिम्मेवार हूँ? अस्पताल तो कोई यतीमखाना या आश्रय नहीं है। अगर तू खुद यहाँ से न निकलेगी, तो मैं आज शाम को धक्के देकर निकलवा दूँगी।"

"क्यों, मेरा क्या कसूर ————————- "

" कसूर का सवाल नहीं है। मुझे इस 'बेड' पर दूसरे मरीज को जगह देनी है। आज ही वह आती होगी। तू तो अब बिलकुल चंगी हो गई।"

"तो आप अपने यहाँ मुझे अपनी नौकरानी बनाकर रख लें। मैं झाडू-बुहारू करूँगी, बरतन साफ करूँगी। मेरे लिए एक जून सूखी रोटी काफी होगी।"

"माफ करो, मैं बाज आई!" - मेम साहब ने जरा मुस्कुराकर कहा - "तुझे अपने घर पर ले जाकर रखूँ और मेरी चौखट पर रँगीलों का फैन्सी मेला हो! ना, मुझे कबूल नहीं।"

"तब और किसी शरीफ के घर में ...."

"क्या टें-टें करती है? मैं दवा देती हूँ, रोजी नहीं देती।"

"अस्पताल में दाई का काम नहीं मिल सकता?"

"बिना तनख्वाह के?"

"जो कुछ आप दें।"

"तू तो सिर पर सवार हो रही है!" - मेम साहब झल्ला उठीं यहाँ जगह नहीं। तेरे लिए तो बाजार खुला है। वहाँ तो खासी आमदनी होगी।" - राजा राधिका रमणः 'राम रहीम' (शब्द २१८)

संक्षेपण : मेम साहेब ने बेला को निकाल देने की धमकी दी

बेला जब भली-चंग हो गई तब एक दिन मेम साहेब ने उसे अस्पताल से चले जाने को कहा। लेकिन उसका तो इस दुनिया में अपना कोई नहीं था। मेम ने जब शाम को धक्के देकर निकलवाने की धमकी दी तो बेला ने नौकरानी बनने या अस्पताल में दाई का काम करने की इच्छा प्रकट की। इस पर मेम ने झल्लाकर कहा कि उसके लिए बाजार छोड़कर दूसरी जगह नहीं हो सकती। (शब्द- ७१)

विशेष नोट : इन दोनों अवतरणों को दो-तीन बार पढ़ा और मूल विषयों को समझकर आवश्यक बातों को रेखांकित किया। इसके बाद मूल में प्रयुक्त शब्दों को गिना। संक्षेपण को तिहाई रूप देने के लिए हमने रेखांकित पंक्तियों के सहारे उसका रफ प्रारूप तैयार किया। फिर अनावश्यक शब्दों को छाँटकर और वाक्य रचना को व्यवस्थित करते हुए संक्षेपण का अंतिम स्थिर कर उसे शुद्ध रूप में लिखा और अंततः एक शीर्षक प्रदान किया। सबसे अंत में संक्षेपण की तिहाई शब्द संख्या को भी लिख दिया। इस तरह हमारा संक्षेपण तैयार हुआ।

१९.३.४ पल्लवन :

कम से कम शब्दों या एक वाक्य में सुगठित, संगुफित भावों और विचारों को अधिक से अधिक वाक्यों व अनुच्छेदों में पूर्णतः अभिव्यक्त करना 'पल्लवन' कहलाता है। यह संक्षेपण का बिल्कुल उल्टा होता है। इसमे मूल कथ्य को अधिक से अधिक वाक्यों में पूरी तरह समझा कर लिखना होता है।

'पल्लवन' के कुछ सामान्य नियम :

१) पल्लवन के लिए मूल अवतरण के वाक्य, सूक्ति, लोकोक्ति अथवा कहावत को ध्यानपूर्वक पढ़िए ताकि मूल के संपूर्ण भाव अच्छी तरह समझ में आ जाएँ।

२) मूल विचार अथवा भाव के नीचे दबे अन्य सहायक विचारों को समझने की चेष्टा कीजिए।

३) मूल और गौण विचारों को समझ लेने के बाद एक-एक कर सभी निहित विचारों को एक-एक अनुच्छेद में लिखना आरंभ कीजिए ताकि कोई भी भाव अथवा विचार छूटने न पाए।

४) अर्थ अथवा विचार का विस्तार करते समय उसकी पुष्टि में जहाँ-तहाँ ऊपर से कुछ उदाहरण और तथ्य भी दिए जा सकते हैं।

५) भाव और भाषा को अभिव्यक्ति की पूरी स्पष्टता, मौलिकता और सरलता होनी चाहिए। वाक्य छोटे-छोटे और भाषा अत्यन्त सरल होनी चाहिए। अलंकृत भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

६) पल्लवन के लेखन में अप्रासंगिक बातों का अनावश्यक विस्तार या उल्लेख बिल्कुल नहीं होना चाहिए।

७) 'पल्लवन' में लेखक को मूल और गौण भाव या विचार की टीका-टिप्पणी और आलोचना नहीं करनी चाहिए। इसमें मूल लेखक के मनोभावों का ही विस्तार और विश्लेषण होना चाहिए।

८) 'पल्लवन' की रचना हर हालत में अन्य पुरूष में होनी चाहिए।

९) 'पल्लवन' व्यासशैली का होना चाहिए, समासशैली का नहीं। अतः इसमें बातों को विस्तार से लिखने का अभ्यास किया जाना चाहिए।

'पल्लवन' के दो उदाहरण नीचे दिये हैं -

उदाहरण -१

मूल अवतरण – विदेशी भाषा के विद्यार्थी होना बुरा नहीं, पर अपनी भाषा सर्वोपरि हैं।

- महात्मा गांधी

कोई भी भाषा बुरी नहीं होती, क्योंकि सबकी अपनी-अपनी विशेषताएँ है, अपने–अपने बोलने वाले होते हैं। हर भाषा यदि किसी अन्य के लिए केवल भाषा है तो अपने लिए मातृभाषा भी होती है। किसी 'भाषा' या किसी की 'मातृभाषा' को बुरा मानना या समझना मनुष्यता नहीं, विद्याप्रेम नहीं, बल्कि संकीर्णता और नीचता है। फिर, हर भाषा का अपना साहित्य होता है और साहित्य मानवमात्र के प्रेम की वस्तु है। संसार के कोने-कोने में अनगिनत भाषाएँ बोली और लिखी जाती हैं; जिनकी अपनी प्रकृति और अपने उच्चारण हैं। ये सारी भाषाएँ सीखी जा सकती हैं। हजारों विद्यार्थी विदेशी भाषाओं या दूसरे की भाषाओं का अध्ययन करते हैं ताकि उनके साहित्य का ज्ञान प्राप्त किया जा सके। हर भाषा के साहित्य की अपनी विशिष्टता होती है। उस विशिष्टता में किसी भी देश की मानसिक, विलक्षणता रहती है। इन सारी बातों की जानकारी के लिए ही विदेशी भाषाओं का अध्ययन होता है। यह कोई बुरी बात नहीं। अनेक भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है क्योंकि इससे मानवीय दृष्टि व्यापक, विचार उदार और अंतर्राष्ट्रीय संबंध सुदृढ़ होते हैं। इसलिए विदेशी भाषा या दूसरी भाषा का विद्यार्थी होना बुरा नहीं हैं।

लेकिन, विदेशी भाषाओं या दूसरों की भाषाओं को पढ़ने के पहले अपनी राष्ट्रभाषा और मातृभाषा का ज्ञान नितान्त आवश्यक है। अपनी भाषा में ह्रदय बोलता है; इसमें माँ की ममता, राष्ट्रीय संबंधों का माधुर्य और अपने को जानने पहचानने की सरलता रहती है। अपनी भाषा में अपनापन रहता है। इसके लिए हमें विशेष श्रम नहीं करना पड़ता, व्यर्थ की माथापच्ची और समय की बरबादी नहीं करनी पड़ती। हिन्दी हमारी मातृभाषा है। इसलिए इसके व्यवहार में हमें जितनी सहजता और सुविधा का बोध होता है उतना विदेशी भाषाओं में नहीं होता। कारण यह है कि हिन्दी हम घर-बाहर सभी जगह बोलते हैं; इसी में हम अपने मन में बातें सोचते हैं, किसी

विदेशी भाषा में नहीं। इसीलिए यह हर तरह की शिक्षा- चाहे वह अन्य किसी भाषा की शिक्षा हो या कला-कारीगरी की– का माध्यम होती है। अगर हम कोई विदेशी भाषा सीखते हैं तो अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के माध्यम से ही। इसीलिए जब हम किसी दूसरी सीखी भाषा को बोलते हैं तो मातृभाषा में मन में जो हम सोचते हैं, वह उसी का अनुवाद होता है। इसीलिए इसके बिना हम रह ही नहीं सकते। यह हमारे दैनिक जीवन के साथ मिली -जुली है। दूध में पानी घुला होता है, उसी तरह मातृभाषा में भी हमारी माँ का संस्कार, उनका प्यार और मिठास है। अतः अपनी भाषा सर्वोपरि है। भाषाओं के अध्ययन में इसी का सबसे ऊँचा स्थान है। यही कारण है कि सभी सभ्य देशों में शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जाती है।

विदेशी भाषा सीखी जा सकती है पर वह अपनी नहीं हो सकती। वह मस्तिष्क की वस्तु हो सकती है, ह्रदय की वाणी नहीं हो सकती। उसमें माँ की ममता, पिता का प्यार, पड़ोसियों का स्नेह और हमारा मन या हमारे देश का दर्द नहीं हो सकता। आज अंग्रेजी हमपर जबरदस्त लदी है। फल यह है कि लाखों विद्यार्थी अंग्रेजी में फेल हो रहे हैं। लादी गई कोई भी विदेशी भाषा समाज और देश के स्वाभाविक विकास में बाधक होती है। फिर, भाषा तो अन्य विद्याओं को जानने का एक माध्यम है, अपने भाव प्रकट करने का एक जरिया है। बचपन की जानी-समझी मातृभाषा को अपनी पढ़ाई-लिखाई या कारोबार का माध्यम न बनाकर अंग्रेजी को बनाने से अंग्रेजी सीखने में ही हमारे दस-बारह वर्ष व्यर्थ हो जाते हैं। आज अंग्रेजी को माध्यम रखने के कारण देश के हर विद्यार्थी के यानि इस देश के दस-बारह वर्ष बर्बाद हो रहे हैं। क्या इस बरबादी को भी देशभक्ति में गिना जाए? अतः ठीक ही कहा गया है कि विदेशी भाषा का विद्यार्थी होना बुरा नहीं, पर अपनी भाषा सर्वोपरि है।

उदाहरण – २

मूल अवतरण :- "नर और नारी जनमते और मरते हैं, परन्तु राष्ट्र सदा अमर रहता है।"

- पंडित जवाहरलाल नेहरू

संसार में असंख्य नर-नारियों का जन्म प्रतिक्षण होता रहता है, और हर क्षण उनकी मृत्यु भी होती है। मनुष्य के साथ जीना-मरना सदा लगा रहता है। जन्म के साथ मृत्यु का संबंध अवश्यम्भावी है। जन्म होता है तो मृत्यु भी होगी, यह निश्चित है। यह एक ऐसा सत्य है जिसके संबंध में किसी तरह का भ्रम हो ही नहीं सकता।

किन्तु, राष्ट्र अमर है, इसकी आत्मा अमर है। यह मनुष्य की तरह जीता-मरता नहीं है। राष्ट्र की शक्ति उसके नागरिक, उसकी संस्कृति, उसका साहित्य, उसकी परंपरा और उसकी ऐतिहासिक चेतना में हैं। नागरिकों की सबल एकता से राष्ट्र मजबूत होता है, उसकी आत्मा सशक्त और दीर्घजीवी होती है। जब तक राष्ट्र की आंतरिक एकता सुदृढ़ रहती है, उसपर कोई भी बाहरी शक्ति उंगली उठाने की हिम्मत नहीं करती, उसका अमरत्व बना रहता है, उसका पतन नहीं होता। लेकिन, जब उसकी आंतरिक शक्ति गृहकलह में पड़कर विश्रृंखल होने लगती है तब उसका ह्रास अवश्यम्भावी हो जाता है किन्तु यह 'ह्रास' ह्रास ही है, 'राष्ट्र' का नाश नहीं। राष्ट्र के साथ उसकी संस्कृति, साहित्य, परंपरा कला, ऐतिहासिक चेतना जैसे जो अमर तत्व हैं वे किसी भी पतन के समय अपने नागरिकों को पुनः सचेत और प्रकृतिस्थ करते हैं और तब पहले से अधिक तीव्रता से वे नागरिक ही अपनी विश्रृंखलता को समाप्त कर एक हो जाते हैं, राष्ट्रमय हो जाते हैं।

munotes.in

मनुष्य मरता है परन्तु उसकी परम्परा कभी नहीं मरती, व्यक्ति मरता है परन्तु राष्ट्र नहीं मरता ।

कश्मीर से कन्याकुमारी और कामरूप से कच्छ तक फैले भारतीय राष्ट्र में नदी, पर्वत, वृक्ष, लता, क्षेत्र, इत्यादि के साथ जुटा आत्मीयता का संबंध केवल भौगोलिक ही नहीं, बल्कि वंश परंपराओं का भी है। फिर ये वंश परंपराएँ एक-सी साहित्यिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, नैतिक और ऐतिहासिक विरासतों से एक दूसरे से बँधी हैं। आज भारत के किसी एक कोने का निवासी मूलतः किसी अन्य छोर का वंशज है। किसी एक कोने की भाषा बोलने वाला मूलतः किसी दूसरे ही छोर की जन्मी भाषा बोलता है, सारे तीर्थ, सारी नदियाँ, सारे धाम और सारे यात्रा पथ एक दूसरे के ऐतिहासिक मिलन के साक्षी हैं। सारे वंशों की रगों में एक ही पारस्परिक रक्त का संचार है यही कारण है कि भारत एक राष्ट्र है। व्यक्ति के मरने से राष्ट्र नहीं मरता। व्यक्ति के धर्म परिवर्तन से राष्ट्रीयता में परिवर्तन की सांप्रदायिक नारे बाजी तो और भी बड़ी मूर्खता है । अतः नर नारी के जनमने-मरने पर भी राष्ट्र अमर है, बल्कि राष्ट्र की जो संस्कृति और राष्ट्रीयता है वह राष्ट्र के सारे नागरिकों के धर्म परिवर्तन तक कर लेने पर वही रहती है, बदलती नहीं है ।

अपेक्षित प्रश्न :

१) “क्रोध एक तरह का रोग होता है जिसे क्षणिक पागलपन भी कह सकते हैं।” - महात्मा गाँधी

२) जीवन शक्ति को शरीर में धारण करने की क्षमता ही ब्रह्मचर्य है।

३) हिंसा बुरी चीज है, पर दासता उनसे भी बुरी है।

४) “प्रायश्चित से पिछले पाप के प्रति विरक्ति उत्पन्न होती है और आगे के लिए सावधानी।”- महात्मा गाँधी

५) अव्यवस्थित - चंचल चित्र वाले व्यक्ति की सफलता में हमेशा संदेह रहता है।

१९.३.५ संभावित प्रश्न :

१) निम्नलिखित अवतरण का संक्षेपण लिखिए।

क) जीवन क्या है? जीवन केवल जीना, खाना, सोना, और मर जाना नहीं है। यह तो पशुओं का जीवन है। मानव-जीवन में भी ये सभी प्रवृत्तियाँ होती हैं, क्योंकि वह भी तो पशु है। पर इनके उपरान्त वह कुछ और भी होता है। उसमें कुछ ऐसी मनोवृत्तियाँ होती हैं जो प्रकृति के साथ हमारे मेल में बाधक होती हैं। कुछ ऐसी होती हैं जो इस मेल में सहायक बन जाती हैं। जिन प्रवृत्तियों में प्रकृति के साथ हमारा सामंजस्य बढ़ता है, वे वांछनीय होती हैं। जिनसे सामंजस्य में बाध्य उत्पन्न होती है, वे दूषित हैं। अहंकार, क्रोध या द्वेष हमारे मन की बाधक प्रवृतियाँ हैं। यदि हम इनको बेरोक-टोक चलने दें तो निःसंदेह वे हमें नाश और पतन की ओर ले जाएँगी इसलिए हमें उनकी लगाम रोकनी है। उनपर संयम रखना पड़ता है, जिसमें वे अपनी सीमा से बाहर न जा सकें।

- प्रेमचंद

ख) हमारे सपनों की इमारतों के सुनहरे गुम्बद कितने मोहक होते हैं। दूर के सौन्दर्यमंडित पर्वत शिखर की तरह वे हमारी आँखों में समा जाते हैं और बरबस हमें अपनी ओर खींचते हैं। मगर जितना ही हम उनके निकट पहुँचने की कोशिश करते हैं, वे उतनी ही दूर नजर आने लगते हैं। थककर अकसर हम हताश हो जाते हैं, कभी-कभी नए रास्तों पर भी चलने लगते हैं। इसे इंसान की कमजोरी ही समझना चाहिए क्योंकि कर्म की सार्थकता फल में नहीं, कर्मण्यता में है; उस पुरूषार्थ में है जो एक-एक कदम की गति, एक-एक इंच की चढ़ाई का आनंद लेता है। वास्तव में, चढ़ाई के प्रयत्न का सुख अपने आप में ही इतना मीठा है कि उसकी तृप्ति की कोई सीमा नहीं।

ग) कवि का काम है कि वह प्रकृति विकास को खूब ध्यान से देखे। प्रकृति की लीला का कोई ओर छोर नहीं, वह अनन्त है। प्रकृति अद्‌भूत खेल खेला करती है। एक छोटे से फूल में वह अजीब कौशल दिखलाती है। वे साधारण के ध्यान में नहीं आते। ये उनकी समझ में नहीं आ सकते, पर कवि अपनी सूक्ष्म दृष्टि से प्रकृति के कौशल अच्छी तरह देख लेता है, उनका वर्णन भी वह करता है। उनसे नाना प्रकार की शिक्षाएँ भी वह ग्रहण करता और संसार को लाभ भी पहुँचाता है। जिस कवि में प्राकृतिक दृष्टि और प्रकृति के कौशल देखने और समझने की जितनी ही अधिक शक्ति होती है, वह उतना ही महान कवि होता है।

प्रश्न -२ निम्नलिखित अवतरण का पल्लवन लिखिए।

क) जीवन को मर्यादित करने का सहज उपाय यह है कि मनुष्य नित्यकर्मो का पालन सावधानी से करे।

ख) बुद्‌धिमान लोग गुरू ऋण बहुत बड़ा मानते हैं, क्योंकि और ऋण तो आसानी से लौटाए जा सकते हैं - ज्ञानदान का ऋण सबके लिए लौटाना संभव नहीं है। - महात्मा गांधी

ग) विचारों की अनिश्चितता होने से मनुष्य का जीवन अस्त-व्यस्त और व्यक्तित्व चकनाचूर हो जाता है।

घ) जो स्त्री देश को तेजस्वी, नीरोग और सुशिक्षित संतान भेंट करती है, वह भी सेवा ही करती है।

ड) गाँधी टोपी की उमंग और है, गाँधीत्व की गंध और। - राजा राधिकारमण

❖❖❖❖

munotes.in

प्रश्न पत्र नमुना प्रथम वर्ष कला, हिन्दी अनिवार्य

समय ३ घंटे **कुल गुण : १००**

प्र.१ निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

क) 'हवा हूँ, हवा, मैं बसंती हवा हूँ।
वही हैं। वही जो युगों से गगन को
बिना कष्ट-श्रम के सम्हाले हुए हूँ,
वही हाँ, वही जो धरा का बसंती
सुसंगीत मीठा गुँजाती फिरी हूँ,
हवा हूँ हवा, मैं बसंती हवा हूँ।'

अथवा

'कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए,
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।
यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है,
चलो यहाँ से चले और उम्र भर के लिए।'

ख) 'उन्होंने अनुभव किया कि वह पत्नी और बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त मात्र है जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी माँग से सिंदूर डालने की अधिकारिणी है, समाज में उसकी प्रतिष्ठा है, उसके सामने वह दो वक्त भोजन की थाली रख देने से सारे कर्तव्यों से छुट्टी पा जाती है।'

अथवा

'इसी दिन के लिए छोड़ गये थे शाहजी उसे? बेजान सी शाहनी की ओर देख कर बेगू सोच रहा है - क्या गुजर रही है शाहनी पर, मगर क्या हो सकता है?'

प्र.२ निम्नलिखित दीर्घोत्तरी प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

च) 'बाघ' कविता में कवि हमारे समय की विडम्बना का चित्रण करते है। इस पर प्रकाश डालिए।

अथवा

राष्ट्रकवि सोहलाल द्विवेदी गांधीवाद के प्रबल समर्थक थे। पठित कविता के आधार पर समीक्षा कीजिए।

छ) 'अकेली' कहानी के माध्यम से सोमा बुआ के अकेलेपन के दु:ख का विस्तार से वर्णन कीजिए।

अथवा

'घुस पैठिये' कहानी की मुख्य समस्या को अपने शब्दों में लिखिए।

प्र. ३ निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए।

त) 'वैतरणी करोगे पार' कविता में मनुष्य की प्रवृत्ति।

अथवा

'हम दिवानों की क्या हस्ती' कविता में व्यक्त मानव की मनःस्थिति।

थ) गणपति - गणनायक के मध्य हुए संवाद।

अथवा

'कब्र का मुनाफा' कहानी में खलील और नजम के बीच संवाद

प्र. ४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

१) 'बसंती हवा' कविता के कवि कौन है ?

२) 'चल पढ़े जिधर दो डग-मग में जनता' किसकी बात मानती है ?

३) 'हम दिवानों की क्या हस्ती' में कवि अपने जीवन को कैसे जीता है ?

४) 'किस्सा जनतंत्र का' कविता में पति की थाली में कितनी रोटी आती है ?

५) 'विद्रोहिणी' कविता में कवयित्री के अनुसार समाज स्त्री पर क्या थोपता है ?

६) 'अकेली' कहानी में सोमाबुआ के पति किस बात का सदमा लगा था ?

७) 'गदल' कहानी में गदल कौन है ?

८) 'घुसपैठिये' कहानी में मेडिकल कॉलेज के किस छात्र ने आत्महत्या कर ली थी ?

९) 'गणपति-गणनायक' कहानी में अंत में कौनसे गणपति खुशी-खुशी विदा हुए ?

१०) 'दलित ब्राह्मण' कहानी में किसकी बात से कुरील साहब का चेहरा पीला पड़ गया ?

प्र. ५ निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए।

१) साहित्य और समाज

२) यदि मैं शिक्षा - मंत्री होता

३) स्वदेश प्रेम

४) किसान की आत्मकथा

प्र. ६ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

य) निम्नलिखित शब्दों के लिंग परिवर्तन कीजिए।

अ) महोदय   आ) अध्यक्ष

इ) हरिणी   ई) कबूतर

र) निम्नलिखित शब्दों के वचन परिवर्तन कीजिए।

अ) मोहल्ला   आ) धागा

इ) चाचा   ई) कवि

munotes.in

ल) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची और विलोम शब्द लिखिए।

अ) किनार (पर्यायवाची) आ) उपवन (पर्यायवाची)

इ) वरदान (विलोम) ई) दुर्लभ (विलोम)

व) निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए।

अ) भूत सवार होना आ) लकीर का फकीर होना

इ) पेट में चूहे कूँदना ई) टाँग अड़ाना

द) संक्षेपन और पल्लवन

❖❖❖❖

munotes.in